

रा-रा रनकों तवहि पश्ये ॥ इति अंतरा । अथ आभोगः ॥

८८

४४

परम प्रीति रीति की जानही रह करि चरण

कमल जो गहिये ॥ ह्योत स्वामी गिरि धरन श्रीवि

दल एहि निधि छांदि अत कहो जो जश्ये ॥

रागिनी राम कली ताल जं जसुना के पद ॥

चित्त मै जसुना निम दिन जो राखो ॥ इति अष्टाई



भोगः ॥ तन मन थन अव लाल गिरि थरन कौं दे  
करि चरण जव चितहि लावे ॥ खीन स्वामी गिरि  
थरन श्रीविठल नैननि प्रकट लीला दिखावे ॥  
शशिनी रामकली ताल ३ जमना के पद ॥ गुण  
अणार एक माव कसं लोकहि ये ॥ इति प्रस्थाई ॥  
तजो साथत भजो नाम जमनाजी कौ लाल गिरि थ



श-श

८५

89

के कूले ॥ इति प्रस्थाई ॥ लब्ध मकरंद के वस  
भए भस्मर जेर वि उदै देवि मानौ कमल कूले ॥  
इत्येतदा । अथ आभोगः ॥ करत ये जाव सरली  
लेके सोवरो ब्रज वधू सुनत तन सखि जो भूले ॥  
चतुर्भुज दास जसना प्रेम सिंधु मै लाल गिरिध  
राण अवहरवि कूले ॥ रागिनी राम कली नाल



भक्तके वस कृपा करतहैं सर्वदा ऐसी जसनाजी को  
है जो साको ॥ श्रुतया । अथ आभोगः ॥ जाहि स  
खिनै जसुनै नाम यह उचरे संग कीजे अब जाइ ता  
को ॥ चतुर्भुज दाम अब कहतहैं सबनसो ताते ज  
सुनै जसुनै जो भाको ॥ रागिनी राम कली ता  
ल ॥ जसुनाके पद ॥ प्राणपति विहरत जसुना



श-श

५.

१०

रसमै भीजे ॥ राशिनी रामकली ताल ॐ जस  
नाके पद ॥ हेत करि देत जसुनै वास ऊंजे ॥ ३  
निश्चय्याई ॥ जहो निसि वासर रसमै रसिक व  
र कहो लो वर नियो प्रेम पुंजे ॥ इत्येतया ॥ अथ  
आभोगः ॥ यकित मलिता नीरय कित व्रज व  
धूभीरकोउ वन धरत थीर सरलि सतिजे ॥ च



१ जसनाके पद ॥ बार बार जस तै गुण गान  
कीजे ॥ इति अष्टाई ॥ एहि रसना तै जो नाम र  
स अमृत भाग जाके सोई जो लीजे । इत्यंत राः  
अथ आभोगः ॥ भोन तनया दया अनिहिकर  
एग मया इनकी करे आसया सदा जीजे ॥ चत  
भज दास करे सोई पिय पास रहै जोई जसनाके



राधा

२१

११

कौरूप अद्भुत देत आप जैसी ॥ नेद सस जो जा  
नि दफ चरण गहरे एक रसनो कहा कहू विसेसी  
रागिनी राम कली ताल ॥ जसनाजी के पद ॥  
नेह कारन जसने प्रथम आई ॥ इति प्रस्थाई ॥ भ  
क्त के चित्त की इति सब जानही ताहिने अतिही  
आनर जो थाई ॥ अंतरी ॥ अथ आभोगः ॥ जै



तुभज दाम जसुनै जो एकज जानि मधु पकीना  
ई चित लाइ येजे ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ  
जसनाके पद ॥ भक्त पर करि कृपा जसुन पेसी  
इति प्रस्थाई ॥ छोडि निज थाम विश्राम भूतल  
कियो प्रकट लीला दिखाई जो नैसी ॥ इत्येतरा  
अथ आभोगः ॥ परम परमारथ करत है पवनि



श-श

२२

१२

नरा ॥ अथ आभोगः ॥ सकल साव देन हार ताँते  
करो उचार कहत हौ वार भूलि जिनि जावो ॥  
नेद दासकी आस जसने शरत करो ताँते कहू  
चरी चरी चित लावो ॥ रागिनी राम कली ताल  
जं जसनाजी के पद ॥ भाग्य सौ भाग्य जसने  
जो देखे ॥ इति अष्टाई ॥ वात लौकिक न जे पटि



सी जाके मत हतो मन उच्छया नाहि तैसी साधु जो  
प्रजाई ॥ नेद दास प्रभ नाथ नाहि परी ऊत जो  
ई जसना जूके गुण जो गाई ॥ रागिनी राम कली  
नाल ॐ जसनाजी के पद ॥ जसने जसने जस  
ने जो गावो ॥ इति प्रस्थाई ॥ सेस सहस्र सावगा  
वत निम दिना पार वही पावत नाहि पावो ॥ ३०९



रा.रा.

९३

93

मयीदा दिक् सख लहै प्रष्टिको प्रष्टि पति निश्चैमानो  
इत्येतया । अथ आभोगः ॥ स्वाति जल हृद जव पर  
तहै जाहिमें ताहिमें होतते सोजो वानो ॥ जसुनै क  
पा जान सिंधुजल बहिमोन सूर गण शरकहो लो व  
वानो ॥ शशिनी रामकली ताल जं जसना  
पद ॥ भक्तको स्याम जसुनै प्रगम ओरे ॥ इति प्रस्था



जमनै भजे लाल गिरि धरन को तारि वर मिलेरी  
इत्येतरा ॥ अथ प्रभोगः ॥ भगवदी सेवा करि वात  
उनकीले सदा सान्निध्य रहे केली मेरी ॥ नेददास  
जे जाहि बलभ कृपा करे ताके जमने सदा वस जोहे  
री ॥ रागिनी राम कली ताल ॥ जमनाजी के पद  
नाम सहि सो ऐसी जो जानौ ॥ इति अष्टाई ॥



रा-रा

२४

देविहे नही सनी ताहि कहि आपनी ताकी यह वा  
न कोऊ कैसे माने ॥ इत्यंत रा । अथ आभोगः ॥ ता  
ही के हाथ निरमोल नयादी जिये जोई नीके करि प  
र विजाने ॥ सर कहि करते हर वसिये सदा जमुन  
को नाम लीजे जो छाने ॥ रागिनी राम कली ता  
ल जमुना के पद ॥ चरै ॥ जमुनै पति दाम



३॥ आतहीनात अच जातनाके सकल जमह रहत  
ताहि हाथ जोरे ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभोगः अन्नभवी  
विना अन्नभव कहा जातही जाको प्रिया नही चित  
वोरे ॥ प्रेमके सिंधुको मर्म जाग्यो नही सर कहि कहा  
भयो देह वोरे ॥ रागिनी रामकली ताल ॐ जमना  
पद ॥ फलफलित होत फल रूप जानै ॥ शनिप्रस्था ३



श-श

२५

जाऊं ॥ इति अस्याई ॥ ऐसी महिमा जानि भक्त की  
सख दानि जोई मागों सोई जो पाऊं ॥ इत्येतया ॥ अ  
थ आभोगः ॥ पतिन पावन करन नाम लीनें तर  
न दफ करि गहे चरण कहै न जाऊं ॥ कुंभन द  
स गिरि थरण सख तिरावतै ऐसी वाहन नही  
पलक लाऊं ॥ रागिनी राम क ली ताल ॥ जम



के चिन्ह न्यारे ॥ शतिप्रस्थाई ॥ भगवद्दीको भगवद  
सेरा मिलि रहे ताके वसतहीये प्राण प्यारे ॥ श्येतरा  
प्रथमाभोगः ॥ गूढ जसुनै वात जोई अब जानही ता  
के मन मोहन नैन तारे ॥ सूर सख सार निर्दोर वेण  
वही जापर होय बलभ कृपारे ॥ रागिनी रामकली  
ताल ॐ जसनापर ॥ जसुनै रस खानको सीस



श-श-

२६

१८

रागिनी रामकली ताल ५ जसुनापद ॥ जसुने  
परतन मन प्राण थारों ॥ इति अस्याई ॥ जाकी  
कोरति विसदकोत अव कहि सके ताहि नैनन ते  
नने ऊटारों ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ चरण  
कमल इनके जो चित्त रह्यो निस दिन नास माव  
नै उचारों ॥ केसन रास कहे लाल गिरि धरन स



नाकेपद ॥ जसुनै अगानित अण गनै न जाही ॥  
इतिअस्याई ॥ जसना तटरेन इतनै होय वेन उ  
नकी सख देनकी करुवडाई ॥ इत्येतय ॥ अण  
आभोगः ॥ भक्तमोगत जोई देत तेही छिन सोई  
ऐसी करे कौन अण निवाही ॥ ऊंभन रास वि  
रिथरन सख निरखतै कहो कैसे करि मन अचाई ॥



रा-रा- भनदासजो प्रभुको सुख देखत पहि जिय लेखत  
५७ जसनें जो भरता ॥ रागिनी रास कली ताल ५ ॥  
७७ जसना पद ॥ रासरस सागरे जसुन जानी ॥ इति  
प्रस्थाई ॥ प्रति स्निह उतन वहत थारा तनें राखत  
प्रपने उर मा ऊढानी ॥ इत्येतदा ॥ अथ प्राभोगः  
भक्त को सहै भार देत प्राण अथार अनिहि बोलत



बि इनकी कृपा भई तो निहार्ये ॥ रागिनी रामक  
ली ताल ॥ जसना पद ॥ सक्त इच्छा हरन ज  
मने जो करता ॥ इति प्रस्थाई ॥ विनहि मागे हेत  
करों लो कहै हेत जैसे काहू को कोऊ होय भरता  
इत्येता ॥ अथ आभोगः ॥ जसना पुलित रासव  
ज वधलीये पास मंदमेद हास मन जो हरता ॥ के



श.श.

५८

१४

जैसे राखत जननी पुर वारे ॥ श्रीविदल गिरि धरन

सेवा विहरतें भक्त को एक छिनना विसारे ॥

रागिनी राम कली ताल ॥ जमनाजी के पद ॥

कौन पैं जात जस नैं जो वरनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ स

वहिन को मन मोहन हरत सो पीय को मन एजो

हरनी ॥ इत्येता ॥ अथ आभोगः ॥ इति विना एक



मधुर मधुर बानी ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरन वर वस  
कीये कौन पैजात समहिमो बखानी ॥ रागिनी  
राम कली जाल ॐ जसनापद ॥ भक्तप्रति पा  
लि जेजाल दारे ॥ इति प्रस्थाई ॥ अपने रस रेखामे से  
रा राखत सदा सर्वदा जोई जसुने उचारे ॥ इत्येतदा ॥  
अथ आभोगः ॥ इनको कृपा अब कहें लो वरनिये



रा-रा ५५ ११  
रा परम अतिहि दुर्लभ परम ह्लादि सगरे करम  
प्रेमपायी ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन सीनिधि अवभ  
कको देतहौ विनहि मोयी ॥ रागिनी राम कली  
ताल ५ जमना पद ॥ जमने तमसी एकहो  
ज तमहो ॥ इति अष्टाई ॥ करि कृपा दरस नि  
सि वासर दीजिये तिहारे गुण मोनको रहे उयमहो



छिन रहेन जीवन थन ब्रज चंद मन आनंद करनी ॥  
श्रीविठ्ठल गिरिधरन सहित आय भक्त के हेतु अव  
तार थरनी ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ जमनापद  
जमुना जो नाम लेसो सभागी ॥ इति प्रस्थाई ॥ सो  
ईस रूपको सरा चितन कोरे नेक नहि कलपे  
जाहि लागी ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ अष्टिमा



१००  
१००  
श.श. गिनी जिनके ऐसे यनी सेदर श्याम ॥ शंतेनरा ॥

अथ आभोगः ॥ देत सेजोग रस ऐसी पीय है जो

वस सुनत सजस तीहारो पूरे सब काम ॥ हू

स दास निकहे भक्त के कारन जमन एक छिन

नहीं करे विश्राम ॥ शगिनी राम कली ताल ॥

जमना पद ॥ जमने के नाम अथ हर भाजे ॥



इत्येतत् ॥ अथ आभोगः ॥ तमञ्जया पते सकल नि  
धि पावही चरण कमल वित भ्रमर भ्रमही ॥ क  
सदास निकहे कौन यह तप कियो तिहारे दरार  
हतहेलता डुमही ॥ रागिनी राम कली ताल ३  
जमनाके पद ॥ ऐसी केजी कृपा लीजिये नाम  
इति अस्थाई ॥ जमनै जग वेदनी शान जान जो ।



रा-रा १९  
जमने के नाम तेरे जो ले हैं ॥ इति प्रथमः ॥ जिन  
की लगान लागी नेद ला लसौ सरवस दे के निकट रहे  
इत्येतत् ॥ अथ आभोगः ॥ जिनहि सगम जातवा  
त मन में वानि विना एहि वानि कैसे जोये हैं ॥ हु  
स दासनि जमने नाम नौ का भक्त भव सिंधु ते यों  
जोतये हैं ॥ रागिनी राग कली ताल ५ जमनाप



इति अष्टाई ॥ जिनके गुण सुनि के लाल गिरिधर  
न पिय आय सन साव ताके विराजे ॥ इत्येतरा ॥  
अथ आभोगः ॥ ते छिनका जनों के जो सगरे सर  
न जाइ के मिलन ब्रज वध समाजे ॥ कस दास  
निकहे ताहि अत कौन डर जाके ऊपर जमनै सी  
गाजे ॥ रागिनी राम कली ताल ॥ जमनापद



रा-रा

१०३

१०२

ली ताल जमुनापद ॥ जमनै सख कारती  
प्राण पतिकों ॥ इति अष्टाई ॥ पीयजे भलत जि  
है सखि करि देत तिनै कहो लो कहिये अति हि इन  
के हितकै ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥ पिय सेरा  
गान करै अति रस उसागि भरे देत नारी करै लेत  
जितकै ॥ दास परमानेद पाय अब ब्रज चंद



द ॥ जमनैकी आस अव करत है दास ॥ शतिअस्था  
ई ॥ मनक्रम वचन कर जोरि कै मोगत निमदिना  
राखिये अपनैही पास ॥ इत्येतरा ॥ अथआभोगः  
जहो अवसरसि कवरसिकनी राधिके दोउ जन संग  
मिलि करत है दास ॥ दास परमानेद पाय अव ब्रज  
चेद देखि शियाने नैनमेद हासे ॥ रागिनी राम क



श-श १०३ परमानंदपाय अत ब्रज वेदरावि अपने शरण  
वहे जो जान ॥ रागिनी राम कली ताल  
जगनापद ॥ जमुने पियको वसतस जो कीने  
इति अस्याई ॥ प्रेमके फेदने वेर रावि निकट  
ऐसे निरमोल नग मोल लीन ॥ इत्येतरा ॥ अथ  
आभोगः ॥ तम जो पदावत तहो अत यावत



एहि ज्ञानत अति प्रेम गतिके ॥ रागिनी राम क  
ली ताल ॐ जमनापद ॥ जमनेके साथ अवधि  
रत है नाथ ॥ शति अस्थाई ॥ भक्तके मनके मनोर  
थ एत सब कहो लो कहिये अव उनकी जो वाथ  
इत्येत रा ॥ अथ आभोगः ॥ विविध संसार भूषन  
प्रेम प्रेम सजे वरनीत जान सो भावनी गान ॥ राम



रा-रा

१०४

जाके भजनते ही हीयमें वसें करे कृपा सर्वदा अप  
नी पित्तसार ॥ कहत ब्रज पति तब सबनसों स  
मजाय परो इनके चरण और नाहि आधार ॥

राशिनी राम कली ताल ॥ जसनाके पद ॥

एकरसना गुण अपार कौ करि वरनों ॥ इति प्र  
स्थाई ॥ साथत सबे तजो भजो इनके नाम जाके सब



तिस दिन तिहारे रस रेवा भीने ॥ दास पर मानेद  
पाय अब ब्रज चेद परम उदार जसने जो दीने ॥  
राशिनी राम कली ताल ॥ जसनाजीके पद  
जयामे पही सार भजि हे वारे वार ॥ इति ग्रन्थाई  
श्रीजसना जीको नाम जप तिस दिन जातै उत्तरे  
गो भव सागर पार ॥ इत्येतत् ॥ अथ आभोगः ॥



श-श- सिंधुमे अतिहि हरवित भई कमलज्यौ फूलतरवि  
१०५  
प्रकासे ॥ इत्यंतय ॥ अथ आभोगः ॥ तननै मन  
१०५  
नै शाननै सर्वदा करति है हरि सेवा मडल हासे ॥  
करत ब्रज पति तम सबनसो समजाय मिटे ज  
मवास इनही उपासै ॥ रागिनी राम कली ताल  
जं जमनापद ॥ जमनासो नाही कोउ डावकी



मिरन तैकै गोत रनों ॥ इत्येतत् ॥ अथ आभोगः  
एकमनसै निर थार करिके करो सदा तट इनके  
निकट रहनों ॥ कहत ब्रजपति तम सवनसौ स  
सुजाय जयो हरि नाम और ककुकरनों ॥ रागि  
नी रामकली ताल ३ जसनापद ॥ पिय सेवा  
देवा भरि करि विलासे ॥ इति अष्टाई ॥ सूरतरंग



रा.रा. श्रीजसनाजी निहारो दरसहो पाउं ॥ इति अष्टाई ॥  
१६  
श्रीगोवर्धन श्रीहेरावन व्रज राज भेंग लगाउं ॥ इत्ये  
१०६  
नरा ॥ अथ आभोगः ॥ दिन दस पंचरङ्गे श्रीगोकुल  
ढकरोनी चादन्हाउं ॥ दामन ऊपर करो कृपा निज  
सेतन के सेवा आउं ॥ रागिनी रामकली नाल ॥  
जसना के पद ॥ जगत में श्रीजसनाजी परम कृपा



हरनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ जाके स्नान ते मिटे तहे सब  
पाप होतहे आनंद साख की करनी ॥ इति अंतग ॥  
अथ आभोगः ॥ महिमो अगाथ अपार इनके गुण स  
कल जस वेद अगाण वरनी ॥ कहत ब्रज पति त  
मसवनसौ समजाय छूटे जस डरजो आवे इनकी  
शरनी ॥ रागिनी राम कली नाल ॐ जमनापद



रा-रा-

१७

107

तत्तस्यै तत्तस्यै तत्ता ॥ इति प्रस्थाई ॥ मदेगाध मद्र  
मद्र मत्तालउ पेया मिलि फति देत मधुप मधु मचा ।  
इत्येतया ॥ अथ प्राभोगः ॥ टिपारो मिर पीत अति  
लालका छनी वनी किं किनी फिति फिति राति  
हेत गावत स्वर सत्ता ॥ गोविंद प्रभु गोप बालक  
जय जय प्रेम प्रवरत्ता ॥ रागिनी रामकली ताल



ल ॥ इति प्रस्थाई ॥ विनती करत तरत सति लीनी  
भयहै मोपे दयाल ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥  
जो कोउ मजन करत निरंतर तातै उरत जमकाल ॥  
ब्रजपतिकी अति प्यारी कालिंदी समिरत होत नि  
हाल ॥ रागिनी राम कली ताल जमनापद ॥  
चर्वरी ॥ हृमंत मोहन रसिक सावन सहित प्रयत्ना



रा-रा जे सेहर वरकी ॥ इति प्रस्थाई ॥ नेद कि सोर ज सो द

१०८

न नेद नागारन वल नापत महरकी ॥ इत्येतया ॥ अथ

प्राभोगः ॥ नव विमाल मडहास मनोहर अवगा स्व

या साव मोहन करकी ॥ विसरी दस लोचन चको

र नित प्रेम प्रिया भज थरकी ॥ रागिनी राम कली

ताल जमनापद चर्वरी ॥ सभग श्यामके सेरा



जमनापट ॥ आरति कीजे श्यामसंदरकी ॥ शति  
प्रस्थाई ॥ नेद कुमार रायिका वरकी ॥ इत्येतया ॥  
अथ आभोगः ॥ भक्ति करि दीप प्रेम करि वाती ॥  
साधु संगति करि अत्र दिन राती ॥ आरति ब्रजजव  
ती मनभावे श्यामलीला हित हरि वेश गावे ॥  
रागिनी रामकली नाल ३ जमनापट ॥ आरतिकी



श-श-

१०४

109

जसनापट ॥ चर्चरी हारिमानी नाथ श्रेवर दीर्घ नैद  
नैदन केवरसिक वरमन हरत सनद गिरिवर था  
न नीत कीजे ॥ इति प्रस्थाई ॥ सकल व्रज नागरी  
दासित्व मरी सदा तन मोक सीत प्रति होत भीजे ॥  
रंतेतया ॥ अथ आभोगः ॥ खीत स्वामी अमित शु  
ण गणानि आगारे विनती करति सवे मोति लीजे ॥



राधिका विराजे ॥ इति प्रस्थाई ॥ नैन शालस भरी  
सकल निशि सख करी कंद हृदि भुज यरी कामला  
जे ॥ इत्येतदा ॥ अथ शोभाः ॥ मनक कंचन तनी  
पीक ह्यासो मने प्रति हीर समें सनी रूप भाजे ॥ च्छी  
तस्यामी गिरि धरन के मन वसी मन ही मन हसी  
सख दीयो अजे ॥ रागिनी राम कली ताल ॥



रा.रा. जमनापद ॥ करत कलेउ मोहनलाल ॥ इति प्रस्था

१०

॥ ॥ मोखन मिश्री दूध मिर्लाई मेवा परम रसाल ॥

॥ ०

इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥ दूध ओदन एक वोन

मिर्लाई खात खवावत ग्वाल ॥ क्रीत खासि बन

गाउ चरावन चले लटक पशु पाल ॥



रागिनी राम कली ताल ३ जमना पद ॥ रायिका  
श्याम सेदर कोणारी ॥ इति प्रस्थाई ॥ नाव सिख से  
रा प्रनूप विराजत कोटि चंद इति वारी ॥ एक छिन  
सेगन छाउत मोहन निरावि निरावि वलिहारी ॥  
छीत स्वामि गिरिधर वस जाके सो हस भोन डलारी  
इति आभोगाः ॥ रागिनी राम कली ताल ॥



रा-रा-

॥

वनमे रास रचोहे मोहन मरली बजावे ॥ सुरदास

प्रभु निहावे मिलनको वेद विमल जस गावे ॥ ॥

रागिनी रास कली ताल चर्चरी ॥ नमोदेवि

यसने नमोदेवि यसने हरकस मिलानांतराय ॥

इतिप्रस्थाई। निज नाथ मार्गदायिनि कुमारी का

म हरके करु भक्तिराय ॥ भुवे । इत्यंतरा । अथ ।



रागिनी रास कली ताल ४ षट्पदी जसनाजीके

श्रीजसनाजी निहारो देख मोहि भावे ॥ इति प्रस्था

ई श्रीगोकुलके निकट रहत हो लहरनकी खवि

आवे ॥ इत्येतरा प्रथमाभोगः सख करनी इः खहर

नी श्रीजसना जीजन आत उदि नहावे ॥ मदन मो

हन जूकी खरी पिपारी पटगानी जो कहावे ॥ हुंदा



श-श ल कमला रुण शति रुण परि मिलित जल भरेणासु  
॥२  
ना ॥ वज्र सुवति ऊच ऊंभ ऊंऊमरुण मरुः सारय  
॥२  
सि मार पितर पुना ॥ अथिर जति हरी विहति मी  
सिते कुलतया मिथसु भगतयता मशति तद्वेषे ॥  
नयन युग मल्य मिति वद्धत राणिच तानि रसिक  
तानि धितया कुरुषे ॥ रजनि जागर जनित रागरे



प्राभोगः ॥ मधुप कुल कलित कमला वली व्यप  
देश धारित श्रीकृष्ण प्रत भक्त हृदये ॥ सतत मति  
शायित ह्री भावना जाततला रूप धारित निज  
हृदये ॥ निज कुल भव विविध तरु कुसुम प्रत नी  
र शोभया विलसदलि हेंदे ॥ स्मार यसि गोपी हेंद  
प्रजित सरसमी शव प्रग नेंद केदे ॥ उपरि वल दस



रा-रा

११३

ताटेक चलन सतिरस्त संगीत सुत मद सदिन मधु  
प कृत विनोदे ॥ निज ब्रज जना बना यात्र गोवर्ध  
ने राधिका हृदय गत हृय कर कमले ॥ रति मति श  
यितरस विदल स्याश्च कुरु वेणु तिनदा ज्ञान सरले ॥  
रागिनी रास कली ताल ॐ षट्पदी ॥ प्रिय से  
रा भविरेग करि कलोले ॥ इति ग्रन्थाई सवन को



जित नयन पेकजै रहति हरि मीनसे ॥ मकरंद भर  
मिषेणानंद सुविता सतत मिहहर्षीसु सेवसे ॥ तट  
गता नेक सब सारिका मति गणस्तन विविध गु  
ण सिंधु सागरे ॥ संगता सतत मिह भक्त जनताप  
हति राजसेरी सरस सागरे ॥ रति भर अम जलो दि  
न कमल परि मल व्रज प्रवति जल विहति मोदे ॥



रा-रा- येसी जसना जानि तम करो गुणगोन रसिक प्रीत  
११४ म पायनेग मूले ॥ रागिनी राम कली ताल ॥  
११५ करत खल सार निर्हार करके ॥ इति प्रस्थाई ॥  
इत बिना ऐसी कौन करि हे साखी हरत डाल देद  
वरषे ॥ इत्यंत राग ॥ अथ आभोगः ॥ ब्रह्म सेवेय  
जब करत है जी को तबहि इनकी वो मधुजा फरके



साव दें पियको करत सैन चितन परत वेन जव  
हि बोले ॥ इत्येतत् । अथ आभोगः ॥ अतिहि वि  
द्यात सब बोत इनके हाथ नाम लेतहि कृपा करि  
प्रतोले ॥ दरस करि परस करि ध्यानहि यमें थरे  
सदा ब्रज नाथ इन संगे लेले ॥ अतिहि साव करन  
इव सबको हरन यह लीनो है परन दिजही कृले ॥



रा-रा' अज्ञान अथ हरि करि जाहि मिल वत पीय और प्या  
१५  
॥ ११५ ॥ अमेत रा । अथ आभोगः ॥ जिनहि संदेह करो  
वात जियमें थरो प्रष्टि पथ अन्त सरो साख जो कारी  
अमके अंजमें रास रस अंजमें एहि राखति अति रे  
रा भारी ॥ जसुन अरु प्राण पति और सब प्राण स  
त चहे जन जीव पर दया विचारी ॥ ह्योत स्वामी



दोरि करि सोर करि जाय पिय सो कहै प्रतिहि आन  
र मनमै ज हरषै ॥ नाम निर्मोलन गले कोऊ नाम  
को भक्त राखत हिये हर करषै ॥ रसिक शीतम  
की होत जापर कृपा सोई जमुनाजू को रूप परषै ॥  
रागिनी राम कली ताल ५ छट्पदी ॥ यनजस  
ने निधि देन हारी ॥ इति प्रस्थाई । करत शणमान



रा-रा निकट वहन में दे ॥ जाके तट निकट हरि रास  
११६ मेरुल रघो तहो निर्गत तना येई ये दे ॥ जयति  
कल्लिंद गिरि नेदनी देति आनेदनी भक्त के हरे  
सब डाव दे दे ॥ चित्र में ध्यान धर मरित ब्रज  
पति कहै जयति जसुनै जयति नेद ने दे ॥  
रागिनी रास कली ताल ॐ अष्टपदै जसुना के



गिरिधरन श्रीविठ्ठल प्रीति की लीये यह संपदारी  
रागिनी रास कली नाल **षट्पदे ॥ चर्वरी ॥**  
जयति भानु तनया चरण प्रगल वंदे ॥ **इति प्रस्था**  
**ई ॥** जयति वज्रराज नेदन प्रिये सर्वदा देनि आनंद  
पो शरद वंदे ॥ **इत्येतत् ॥ प्रथमाभोगः ॥** जयति  
सकल सब कारनी कल मनो हारनी श्रीगोकुल



श-श-

११७

११७

मेरा मोहि सप नैन दीजे मोरात नैन न रोई ॥

गदल पोन अरत प्रेमत मै विषया रस मै मोई ॥

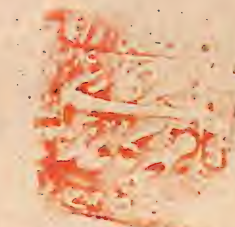
रसिक कहत दीन कै जाचे लहरि समुद्र समोई

राशिनी राम कली ताल बहपदी ॥ श्री

जंता जी दीन जोनि मोहि दीजे ॥ इति प्रस्थाई ॥

नेदको लाल सदा वर मोय सब गोपिनकी दासी





श्रीजमुने तमसी औरन कोई ॥ इतिप्रस्थाई ॥ क  
रो कृपा निज दीन जोनिके वज निज वासी होई ॥  
इत्येतया ॥ अथआभोगः ॥ राबो चरण शरणत  
रनि तनया जनम आपदा खोई ॥ इह मेसारथ  
पुनै स्वारथको सत पतिस गोन कोई ॥ प्रेमभ  
जनमै करत विचनता सेत सेनाप सोई ॥ ताको



श-श

११८

॥ ११८

नाथ प्रतिशम भरे जल क्रीडा सख कारी ॥ मनो  
नारा मय्य चंद विरात भरि भरि छिर कति नारी ॥  
रोनी जूके पाइ लागि विनती करि गृह को कार  
ज सब कीजे ॥ परमानंद प्रभु सब सख दाता  
इह रस नैन भरि पीजे ॥ रागिनी राम कली  
नाल ॥ अष्टपदी ॥ श्रीजसनाजी यह विन



कीजे ॥ इत्येतया । अथशाभोगः ॥ तमहो परम  
उदार कृपा निधि सत जनन सख कारी ॥ तिहा  
रे वस वरतत राधा वर तट खिले गिरि थारी ॥  
सब सखियन मिलि हर संग खिले अदभुत रास  
विलासी ॥ तिहारि अलिन मध्य निकट केज डे  
म कमल अह एहे सवासी ॥ अम जल सहित



रा. रा.

॥५॥

ल लालके उह वादने उरिये ॥ त्रिविध दोष हरि  
हो कालिंदी नेक कृपा करि करिये ॥ गोविंद स  
दा इहे वरमोरे तमहरे वरणा अत्र सरिये ॥ रागि  
नो राम कली ताल <sup>३</sup> षट्पदी ॥ श्रीजसना  
<sup>भुवन पावनी</sup> जी अथम उदारनी <sup>५१</sup> मैजोनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ गो  
धन सेवा श्यामचन सुंदरनीर विभेगी दोनी ॥ इत्ये



नी वित्त धरिये ॥ इति अष्टमः ॥ गिरिधर लाल सु  
खार विंदति जन्म जन्म मोहिके रिये ॥ इत्येतत् ॥  
अथ आभोगः ॥ विष सागर संसार विषम अतिवि  
सख संगते उरिये ॥ काम क्रोध अज्ञान तिमर अ  
ति उर अंतरते हरिये ॥ तस्मिन् निकट वसौ निज  
जन संग रूप देवि मन धरिये ॥ गावे गुण गोण



रा.रा. जी पतित पावन कस्यो ॥ इति प्रस्थाई ॥ प्रथमही  
१२- जव दरस दीनों सकल पाप जहेस्यो ॥ इत्येतया ॥  
120 अथ आभोगः ॥ भुज तरंगान परस कीनों पय पो  
नदे सख भस्यो ॥ नाम लेतहि गई उर मति कस  
रस वसतस्यो ॥ गोप कल्या कीयो मजन लाल  
गिरिधर वस्यो ॥ सूर श्री गोपाल निरखत सकल



तया ॥ अथ आभोगः ॥ योगा चरणा परसते पावन  
हरसि विलसत समानी ॥ सात समुद्र भेदि जम भ  
गिनी हरि तल सिखल परोनी ॥ आलिंगन छेव  
नरस विलसत प्रेम प्रेज दकरानी ॥ गोविंद प्रभ  
रवि तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खोनी ॥ ॥  
राशिनी राम कली ताल ॐ षट्पदी ॥ श्रीजम



रा-रा

१२१

जे उग्र वैराग जाके विविध्यावन शरन ॥ मूर हरि  
के भक्त दाता विम्व तारण नरन ॥ रागिनी राम  
कली ताल १ षट्पदी ॥ गाउं रसिक नट भवा  
ल गुण अने तन पार कमल नयन पिय जसोदा ड  
लारु ॥ अति अस्थायी ॥ प्रकट पुरुष सारु पृथ्वी  
तल हरे भारु जानत महिमा जाके उरहि उरगहारु-



कारज सख्यो ॥ रागिनी राम कली ताल २ षट्  
परी ॥ श्रीजसनाजी पतित पावन करन इति अ  
स्थाई ॥ प्रथम ही जाको दरस पायो कोटि कल  
मल हरन ॥ इत्यंतया ॥ अथ आभोगः ॥ पेढन  
ही भज तरंग परसत मिदत जिय की जरन ॥  
नाम उचरत सुहवानी बुधपोषन भरन ॥ उप



श-श

१२३

122

प्रभु हरि सर्व सदा तारु ॥ रागिनी रास कली ताल ३

प्रसपरी ॥ रास रस गोविंद करत विहार ॥ इति प्र

स्थाई ॥ सर सताके प्रलिनरम्य मंहे फले ऊंद मे

दार ॥ इत्येतया ॥ अथ प्राभोगः ॥ अद भुत शत द

ल विक सित कोमल सकलित कुसुद कल्लार ॥

मलय पवन वहे शारद श्रृणु चेद मधुप ऊंकार ॥



शेतेत ॥ अथश्रीभोगः ॥ राम कली एक नारु नाचे  
अमोच विहारु कालिंदी अलिन सावी लोचन निहा  
रु ॥ उत्तम भूषन थारु तन लेपि चन सारु वेदावन  
चेद चडे दिसि उजियारु ॥ मोहन नेद कुमार अंग  
अंग सुकुमारु गिरिवर थरजस त्रिलोक विल्लारु०  
उभय कर उदारु व्रज भामिनि सिंगारु कस दास



रा.रा. निभेद मिलवत वेणु सरति वेधान ॥ उन्नेतरा ॥

१२३

123

अथ आभोगः ॥ तरनिजाकरलहर विरचित पु  
लिनकेलि वेधान ॥ शरद रजनी विमल उद पति  
मलय पवन सहान ॥ राग वारि समुद्र नोडव ला  
स्य कला निथान ॥ व्रज वधुसेरा सदित नोचन  
लेन अवचरनान ॥ वसी कृत गण सिंह सर ग



सुखर राट संगीत कला निधि मोहन नेद कुमार ॥ व  
जभासिन संगप्रसु दित नावत तत चर्वित चत सार०  
उभय स्वरूप सभगतासी वोको ककला सख सार०  
कस रास स्वामी गिरिधर पिय पदो रसमय हार ॥  
रागिनी रास कली ताल ३ अष्टपदी ॥ गोविं  
दकरत मोहन गान ॥ इति अस्याई ॥ सप्त स्वर ग



रा-रा

१२४

१२५

मेरे प्राण जीवन थन गोरस मोर्ते हूर उगावे ॥ वेतो  
खीर खांड एक बोनले विविध ले शातहि मोहि जगा  
वे ॥ तेल संगेथ लगाइ प्रीतिसो नाते तीरनह वा  
वे ॥ भूषन वसन विविध मन भाए पलटि पलटि  
पहि गावे ॥ नैना ओजि निलक मद्या मद करि द  
पन मोहि दिखावे ॥ घटरस विज्जन मोहि जे वावे



एथ कित व्योम विमोन ॥ कसदास विला सरस  
शिवि थवन सब गुण ज्ञान ॥ राशिनी राम कलीना  
ले ३ प्रथापदी ॥ दस्यो मोहि श्री वल्लभ गदह भावे  
इति प्रस्थाई ॥ सति मैयो नैमोउर मोखन ह्य दस्यो  
जो स्वपावे ॥ इत्यंत रा ॥ प्रथमा भोगः ॥ तेनो करु  
एकि पिन कहा कहै नित उहि मोहि विजावे ॥



ग-ग-

१२४

125

दिवस आवत जब मेरो आगन चौक आवे ॥ बाजे व  
हु विधि हारे बाजे वेदन बार वेथावे ॥ मेरे गुण गुति  
जनै मेको सस सरति जो सुनावे ॥ हरी हव  
अछत दधि कुंम कुंम मेगल कलस भयावे ॥ येन  
दिवावै दिज जनको मोपेस भरा प्रसीस पढावे ॥  
केतिक बातक होहो दिनकी मोपे कही यन आवे ॥



हिनसौवी राखवावे ॥ भंवरा चकरे विविध वि  
लौ नो लेकरि मोहि दिलावे ॥ विविधि कुसुम  
पनै करुहि लैले माला उर लावे ॥ सखद पर्येक  
सेवारि मडल अतिता पर मोहि सखावे ॥ डोल ऊ  
लावे रथ बैरावे हिंदोरा पलना ऊलावे ॥ रितव  
सेत जानि जीय अपनैले सरेरा छिर कावे ॥ जनम



श-श

१२६

126

मिटावे ॥ मेरे लोयें पावित्रा शास्त्री अति सेदर जो बना  
वे ॥ सबे भोति शीति ब्रज जन की आपें करि जो  
मि लावे ॥ दसमी विजे जानि खबर को जब अंक  
र सीस थरावे ॥ वज्र विधि पाक सेवारि मोहि हि  
न मणि दीप दोनही दिवावे ॥ शरद एन्यो रास  
दिन मेरो नद वर भेष बनावे ॥ मोर मुकुट पीतो



मेरे प्राङ्भीव दिवस दिन आनेद उरन समावे ॥ न  
न दिनन एभोग करि मोको हितसो भोग लगावे ॥  
वसि यलाव के नीरसे चेदन लेक हरसो वसावे ॥  
सीतल वारि वयार अति सीतल देमे वामोहिरिजा  
वे ॥ सीतल नीर संगेय सवासित करि अघि वास  
न लावे ॥ अरि अरिजल जनाय सीस पर मोतन ताप



रा-रा- जन वृथा जन्म गवावे ॥ दसिक कहै श्रीवल्लभ क  
रुणा विनु इह फल कवहेन पावे ॥ रागिनी राम  
कली ताल प्रष्टव ॥ चर्चरी कुंवरी राधि  
का नव सकल सौभाग्य सौवया वदन परकोटि श  
न चेदवारो ॥ इति प्रस्थाई ॥ विजन ऊरेग शतको  
टि नैननि उपर वारनै करत जीयमें विचारै ॥ इत्ये



वर काच्छनी सरली करहि गहावे ॥ सरभी वरद्यों  
ति ऊझकी निसि फति फति लाउलशवे ॥ सरप  
ति मोत भेग प्रति पदतव यो गिरि राज पूजावे ॥  
कार्तिक सदि एका दशिके दिन केज महल जो व  
नाटे ॥ पाट सरंग वसन पहि रावत प्रवो धनी प  
ख मनावे ॥ अति मति मेद कर मजउ कलि युग



श-श द्यो ॥ नाग शत कोटि वेनी उपर कपीत शत को  
१२८  
१२८ दि श्रीवो परवारि हरि सारो ॥ कमल शत कोटि क  
र जगल परवारनैना हिन कोउ लोक उप सोज था  
रो ॥ दस के भन स्वामिनी सनख सिख श्रेय अद  
भत सदन कहो लमि से भारो ॥ लाल गिरिवर  
थरन कहत मोहि नोहि लो सख जो लो बह रूप



तया ॥ अथ आभोगः ॥ कदली शत कोटि जेवन उ  
पर सिंह शत कोटि कटि परल्यो छावर उतार्यो ॥  
मत्त राज कोटि शतवाल पर ऊभ शत कोटि इन  
ऊवन पर वारि श्यो ॥ कीर शत कोटि नासा उपर  
केद शत कोटि दसनति उपर कहिन पार्यो ॥ पक्क  
केहर वेधक शत कोटि अथरनि उपर वारि रुचिगर्भ



ग.ग.

१२५

१२९

प्रणयप्रभोगः ॥ व्रज हृदये वयस्य सखी हृदये  
गी गणा निरूपम भावा मंगल सिंधुचयाः ॥ मे  
गल मीषत्सित श्रुत मीक्षणा भाषणा मन्त्रत ना  
साष्ट गत मुक्ता फल चलने ॥ कोमल चल दे  
लि दल संगत वेणु निनाद विमोहिति हृदय वन  
भविजाता ॥ मंगल मणिले गोपी शिखरति मेघ



छिन छिन निहारौ ॥ रागिनी राम कली ताल  
३ मंगलार्ति ॥ मंगल मंगल ब्रज भवि मंगले  
इति प्रस्थाई ॥ मंगल मिह श्रीनेदयशोदा नामसुकी  
तनमै तडुचिरोत्सेग सुलालित पालित रूपे ॥  
अवपद ॥ श्री श्री कृष्ण इति शक्ति सारे नामस्मा  
नजना शयना पापह मिति मंगलरावे ॥ इत्येतदा



श-श नी ॥ ह्यान मगन तम करइ कलेउ मेरे सब सह  
१३०  
खेनेनी ॥ जननी वचन सति तरत उदे हरि कह  
१३०  
त बात ततरोनी नेद दास कीनों बलि हारी जसम  
ति मन हरत खोनी ॥ रागिनी राम कली ताल  
अष्टपदी चर्चरी ॥ नवकेवर चक्र चूडन पति सो  
वरो राधिके तरुणि मने पद शनी ॥ इति अष्टाई



रगति विश्रम मोहति रासस्थित गाने ॥ नैजय सत  
ते गोवर्धन थर पालय निजदा सान ॥ रागिनी रास  
कली ताल ३ षट्पदी ॥ जगावति अपनै सत  
कौ रोनी ॥ इति प्रस्थाई ॥ उहो मेरे लाल मनोहर  
संदर कहि कहि मधुरी बोनी ॥ इत्येतदा ॥ अथ आ  
भोगः ॥ मोखन मिथी और मिठाई हथ मलाई ओ



श-श नी ॥ सत्यगुण पाविया काल बड्वा जहो डारिये  
काम जन सहकत निसानी ॥ नील मर्कत थै जेज  
कस मित महल मध्य कमनीयसे पढ़ोनी ॥ पलत  
विचुरत होउ जात नहो तहो कोउ व्यास महल नि  
लिये पीक होनी ॥ शशिनी राम कली ताल  
षट्पदी ॥ वनी वृष भोन जानकी वेदी ॥ इति ॥



मेस गृह आदि वैकुण्ठ पर्यंत लो लो कथनै तब जरा  
जयंती ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ मेव कथ  
न कोटि वागसीव तजहो सक्ति चारो जहो भरत  
पोती ॥ सुर ससि परुरुवा पवन परजन्य इंदु च  
रण दासी भाट निगम बोती ॥ धर्म कृत बाल सु  
क सत नारद चारु बाल सत कादि चरचारिजा



रा-रा- रागिनी रागकली ताल जीत अष्टपदी ॥ दधि मय

१३२

१३२

ति नेद नैरेद रागी करति सत राग गान ॥ इति अष्टा

इ ॥ नील निरद श्रेय दिव्य इकल वरपविधान ॥ ने

ति करषति ह्यथ थरकति वलय केकन पान ॥

अनेतया ॥ अष्टाशोभाः ॥ स्वेदक नयन वदन वि

धुपर सथा विंड समान ॥ केश कसमानि करत स



स्थाई ॥ निविडति कुंज कुसुम पेजति परश्याम वो  
स श्रेया लेटी ॥ इत्येतरा ॥ अथश्राभोगः ॥ रतिनि  
सि जागी सोवत मोर किशोर कुंवारी गुजरैटी ॥ पि  
यके द्वियमै जिय ज्यो राजत नाइ वाइ बल वेटी ॥  
नैननिकी सैननिकल मानौ मन मय अमित बिटी-  
लोभिलाल व्यासकी स्वामिनि केवन रासि समेटी ॥



ग.स.

१३३

१३३



गोत्रादेककुलकनिकान् ॥ पयो यरपय श्रवत्  
वायिक कृष्ण पत्त निधायान् ॥ सहस्र श्रानन करि  
सके नही व्यास भाग वावान् ॥ जगत् वेदत मान  
पित्र निगद्य यरथरि थान् ॥



अथ रागिनी विभावती गीत गोविंद परिच्छेद माह ताल  
श्लोक ॥ मैत्रैर्मैत्रं मेवरेव न भवः श्यामास्तमालडुमै  
नक्तंभीरुर्यं त्वमेव तदिमं शये गृहे प्रापय । इत्येतेन  
निदेशतश्चलितयोः प्रत्यधुकेन डुमै । राधा माधवयो  
र्जयन्ति यमना कले ररः केलयः १ वाग्देवता चरित  
चित्रित चित्तसमा पमावती चरण चरण चक्रवर्ती ॥



श-वे  
गी

श्री वासुदेवरतिकेलिकथासमेतमेतेकरोति जयदेव  
कविः प्रवच्यम् २ यदि हरिस्मरणे सरसे मनो यदि वि  
लासकला सकलहृतम् । मधुरकोमलकान्तपदावली  
मृणा तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचःपल्लव यत्प्रमापति  
यः सन्दर्भमुद्दिशति । जानीते जयदेव एव शरणा म्ना  
द्यो उद्वहते । मृणालोत्तरसत्प्रमेय वचनैराचार्यगोवर्दे



न स्याद्दीकोपिन विष्कतः श्रुतिथरो योथीः कविस्माप  
तिः ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदे-  
विहित वह्निव च विदु मवेदम् । केशव धृतमीनशरीर  
जयजगदीशहरे । अक् ॥ १ ॥ क्षिति रति विप्रलतरे न  
व निश्चिन्ति एष्टे । थराणी थराणि किण चक्रगरिष्टे । केश  
व धृत कच्छपरुष जयजगदीशहरे २ वसति दशान



ग-ले  
गी

शिवरेथरणी तवलशा । शशिनिकलेक कलेवनिमशा  
केशव धृत सुकरुण जय जगदीश हरे । ३ । तव कर कम  
लवरे नावमदुत श्रेयो । दलित हिरण्य कशिपु तनु भेंगे  
केशव धृत नर हर रूप जय जगदीश हरे ४ छलयसि  
विक्रमो वलिमदुत वामन । पदनवती रजनि जत  
पावन । केशव धृत वामन रूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥



क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापे । सप्तपयसि पयसि श  
मितभवतामम् । केशवधृतमृगपतिरूप जय जगदीश  
हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति कमनीये । दशमुख  
मौलिवलिरमणीयम् । केशवधृतशमशरीर जय जग  
दीशहरे ७ वहसि वपुषि विशदेवसने जलदाभे । हस्त  
हतिभीतिमिलितयमनामम् । केशवधृतहस्तथररूप



राख  
गी

जयजगदीशहरे ८ निन्दसि यत्तवियेरहह प्रतियार्ते । स  
दय हृदय दर्शित पञ्चात्म । केशव धृत ब्रह्मशरीर जय  
जगदीशहरे ९ म्लेच्छ निवह निधने कलयसि करवाले-  
धूमकेतुमिव किमपि कालम् । केशव कल्कि शरीर-  
जयजगदीशहरे १० श्रीजय देव कवेरिद मदित सुदारे ॥  
मृणु सुभदे सखदे भवसारे । केशव धृत दशविधरूप ज



य जगदीशहरे ॥ श्लोक ॥ वेदावदहते जगन्निवहते भूगो-  
लमदिभते । दैत्यावदारयते वलिं क्षलयते तत्र तये कर्बते-  
पौलस्त्ये जयते हले कलयते कारुण्यमातन्वते । स्नेह्या-  
न्मूर्च्छयते दशाकृतिधत्ते क्लृप्ताय तभ्येतमः ॥ १२ ॥ अष्ट-  
पदी ॥ १ ॥ श्रित कमला कव मेडल धत केडल । कलि-  
तललित वनमाल । जयजय देव हरे । अक्व ॥ १ ॥ दिन



श-ले  
गी

मणि मेडल मेडन भव विडन । मति जनमान सहस्र जय  
जय देव हरे २ कालिय विषथरंग जन जन रे जन । यडक  
ल नलिन दिनेश जय जय देव हरे ३ मधु सरनरक विना  
शान गरुडसन । सरकुल केलि निदान जय जय देव हरे  
४ प्रमल कमल दल लोचन भव मोचन । त्रिभुवन भवन  
निधान । जय जय देव हरे ५ जनक सता कृत भूषण जि



तद्दृष्ट्वा । समरशामितदशाकेटजयजयदेवहरे ६ अभि  
नवजलयरसंदरपतमंदर । श्रीमत्तवेदवकोरजयज  
यदेवहरे ७ तव चरणे प्राणतावय मिति भावय । ऊरु  
ऊशले प्राणेषु जयजयदेवहरे ८ श्रीजयदेवकवेरि  
देऊरुतेमदम् । मेगलमञ्जलगीते जयजयदेवहरे ९  
श्लोक ॥ पद्मा पयोधरतटी परिरेभलग्न काश्मीरम्



रा. वि.  
गी.

द्विजसरो मधुसूदनस्य। व्यक्तानुरागमिव खिलदनेगा वि  
दस्वेदासुखमनस्ययत्न प्रियेवः॥१॥ वसेतेवासनीज  
समसुखमारैरवयवैर्भुमेती कोतारे। वद्धविहितकसा  
नशरणो। अमने कंदर्पज्वरजनित विताकलतया। व  
लक्ष्योरायो सरसमिदमूवे सहचरी॥२॥ अष्टपदी॥३॥  
ललितलवेगलतापरिशीलनकोमलमलय समीरे।



मधुकरनिकरकरम्वितको किलहूजित ऊँज ऊँटीरे । १  
विहरति हरिहर सरसवसेते नृत्यति युवति जनेत समे  
सावि विरहिजनस्य डरेते भव । उन्मदमदन मनोरथ  
पथिकवधजनजनित विलापे । अलि कुल सेकुल कु  
सम समूहनिग कुलवकुल कलापे २ मरगमदसौरभ  
रभसवशास्वदनवदल मालतमाले । युवजन हृदयवि



राखे  
गी

दाराणमनसिजनख रुचि किंशुक जाले ३ मदनमहीप  
ति कनक देउरुचि केसर ऊखम विकासे । मिलितशि  
ली मखपादलि पटल कृतसरत्न विलासे ४ विरा  
लित लज्जित जगदवलोकन तरुणा करुणा कृतहासे ।  
विरहि निरुक्त मखा कृति केतकि दन्तरितासे । ५॥  
माथवि कापरि मलललिते वनमालिक याजिसंगेथो-



मतिमनसा मपि मोहन कारिणि तरुणा कारणा वंथौ । ६ ।  
स्फुरदतिमत्त लता परिरेभा मज्जलित पलकित चूने-  
हंदावन विपिने परि सर परिगत यमना जलशेते ७  
श्रीजयदेव भणित सिद्ध मयति । हरिचरण स्फुरति सा  
रम् । सरसव सन्त समय वन वर्णन मन्त्रगत मदन वि  
कारम् ८ ॥ श्लोक ॥ दरविदलित मल्ली बलि वेचत्परा



श.ख.  
गी.

गप्रकटित एट वासैर्वा सयत्काननाति । उहृदिदहति  
चेतः केतकी गान्यवन्धुः प्रसरदसमवाण प्राण वहेथ  
वाहः १ उन्मीलन्मथ गान्य लवमथप व्याशत हृताड्  
कस्कीडन्कोकिल काकली कलकलै रुहीणी कणीज्व  
राः । नीयन्ते पथिकैः कथे कथमपि ध्याना वधानत  
ए प्राप्ता प्राणा समा समा गमरसो लासै रमी वासराः २



अनेक नारी परिरेभ सेशुमस्फुरन्मनो शारिविलासलाल  
सम् । मयारिमागडपदर्शयेत्यसौ साखी समक्षे प्रनगर  
राधिकाम् ३ ॥ अष्टपदी ४ ॥ चेदन चर्वित नील कलेव  
र पीत वसन वनमाली । केलि चलन्मणि केउल मेदि  
त गेड प्रगलित शाली । हरिहरमग्य वध्निकरे वि  
लासिति विलसति केलिपरे ५ ॥ अन्त ॥ पीनपयोधरभा



रा.वे  
गी

२ भरेण हरिं परिरभ्य सगमम् । गोपवधूरन् गायति काचिद  
द्वैचितपंचमरागम् । हरिहर मग्यवधूतिकरे विलासिति  
विलसति केलिपरे २ कापि विलास विलोल विलोचनखे  
लन जनित मनोजे । ध्यायति मग्यवधूरयिके मधुसूदन  
वदन सरोजम् हरिहर मग्यवधूतिकरे विलासिति वि  
लसति केलिपरे ३ कापि कपोलतले मिलिता लपिते



किमपि प्रतिमूले । चारु बुबुम्ब नितम्बवती दयिते ३  
लकैरनुकूले हरिहर मृगवधूतिकरे विलासिनि विल  
सतिकेलिपरे ४ केलिकलाकृतकेनचकाचिदम्बे यम्ब  
ना जलकूले । मेज्जल वेज्जल केजगते विव कर्ष करेण  
उकूले । हरिहर मृगवधूतिकरे विलासिनि विलस  
तिकेलिपरे ५ करतल ताल तरल वलय वलिकलित



शंख-  
गी

कलस्वनवेशे । शशसे सहस्रपराशरिणा प्रवतिः प्रश  
शेषे । हरिहर मगधवधनिकरे विलासिति विलसति  
केलिपरे ६ श्लिष्यति कामपि बुभुक्षति कामपि कामपि  
रमयति रामो । पश्यति सस्मितवारुपरा परा मनगच्छ  
ति वामो हरिहर मगधवधनिकरे विलासिति विलसति  
केलिपरे ७ श्रीजयदेवभणित सिद्धमद्भुतकेशवकेलि



रहस्यम् । विपिनविनोदकलावलिने वितनोत्त शुभा  
नियशास्यम् । हरिहरमग्यवधूतिकरे विलासितिवि  
लसतिकेलिपरे द ॥ श्लोक विशेषा मन्त्रं जनेन जन  
यन्त्रानन्दमिदो वर । अणी श्यामलकोमलैरुपनयन्नै  
रनेगोत्सवम् । सच्छन्दे व्रजसेदरी भिरभितः प्रत्यह मा  
लिङ्गितः । अंगारः सविमूर्तिमानिव मयौ मयौ हरिः



श-ले  
गी

क्रीडति १ अयोत्सङ्गवसद्भजेण कवलकेशादिवेशावले  
प्रालेये सवने च्छयान्न सरति । श्रीदेउ शैलानिलः । किं  
चस्त्रिगयरसालमौलि मुकुलान्यालोक्य हर्षोदया । उ  
न्मीलेति ऊहः ऊहूरिति कलो तालाः पिकातो गिरः २  
रासोत्प्लासभरेण विभ्रमभ्रता साभीरवामभ्रवा । मभ्य  
र्त्तो परिरभ्य निर्भरस्वरः प्रेमोऽथया राथया । साधुत्वहृद



ने सधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाउद्भटचरिव  
तः स्मितमनो हारी हरिः पात्रवः ३॥ विहरति वने यथा  
साधारण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीप्य विशेषत  
गतामृतः । कविदपि लताकंजे येन तन्मथ व्रतमेतलीसु  
खरशिखरे लीना दीनासु वाचरहः सखीम् ४॥ अष्टप  
दी ५॥ सेचर दयार सधामथर ध्वति सखरित मोहनवेशे



शांते  
गी

वलितटगोचलवेवलमौलिकपोलविलोलवतेसम। रा  
सेहरिमिह विहित विलासे सरति मनो ममकृतपरिहासे  
अव॥१॥ चंद्रकचारुमयूरशिखिउक मेडल वलयितके  
शाम्। प्रचुरप्रन्दरयनरनरेजितमेडरसदिरसवेशाम्  
यामेहरिमिह विहित विलासे सरति मनो ममकृतपरिहा  
सम्॥२॥ गोपकदम्ब तितम्बवती सखचुम्बनलम्बित



लोभम् । वेद्यजीवमश्रयथरपलवमलसितस्मितशोभे  
रासे हरिमिरविहितविलासे स्मरति मनोमम क्लृप्तपरि  
हासम् ३ ॥ विपुलपुलकभजपलववलयितवलवय  
वति सरसम् । करचरणोरसिमणिगणभूषणकिर  
णविभिन्नतमिस्रम् । रासे हरिमिरविहितविलासे  
स्मरति मनोमम क्लृप्तपरिहासम् ४ जलदपटलवल



श. स्त्रे  
गी

दिङ् विनिर्दक चेदन तिलक ललाटम् । पीत पयोधर परि  
सर मर्हव निर्दय हृदय कवाटम् । शशे हरिमिह विहित  
विलासे स्मरति मनोमम क्लृप्त परिहासम् ५ मणिमय  
मकर मनोहर केरुल मेदित गोड सुदारम् । पीत वसन म  
नुगात मतिमनुज सग सरवर परिवारम् । शशे हरिमिह  
विहित विलासे स्मरति मनोमम क्लृप्त परिहासम् ॥ ६ ॥



विशदकदम्बतले मिलिते कलिकलषभये शमयेतम्  
सामपि किमपि तरेय दनेग दृशा मनसारमयेतम् । रा  
से हरिमिर विहित विलासे सरति मनोमम कसपरि  
हसम् ७ श्रीजयदेवभाणित मतिसेदर मोहन मधुरिष  
हृषम् । हरितरणा सरणे प्रतिसे प्रतिपणवत्ता मनरूपे  
रासे हरिमिर विहित विलासे सरति मनोमम कसपरि



रावे  
मी

हासम् ८॥ श्लोक ॥ गायति गायामे भामे भ्रमादपि  
नेहने वहति च परीतोषे दोषे विमुच्यति दूरतः । प्रवतिष्ठ  
वत् तस्मै क्लेशे विहारिणि मोविता प्रनरपि मनो कामे  
कामे करोति करोमि किम् ॥ अष्टपदी ६॥ तिभ्रतति  
ऊँ जगद्दे गतया निशि रहसि निलीय वसेते । चकितवि  
लोकित सकल दिशारति रभ सरसे न हसेते । सखिहे के



शिमयनमदार । समयमया सहमदनमनोरथभावितया  
सविकारम् । अत्र-११ । प्रथमसमागमलजितया पटचाट  
शतैरनकले । सडमधुरस्मितभावितया शिथिलीकृत  
जवनडकलम् । सविहेकेशिमयनमदारे समयमया  
सहमदनमनोरथभावितया सविकारम् । १२ । किं  
लयशयननिवेशितया चिरस्रसि ममैवशयानम् ॥



शंख  
गी

कृतपरिरेभणुस्वनयापरिरभ्यकृताथरपानम् । सखि  
हे केशिमथन सदा रे रमय मया सह मदन मनोरथभा  
वितया सविकारम् । ३॥ अलसनिमीलित लोचनया प्र  
लका वलि ललित कपोलम् । प्रमजल सकल कलेव  
रया वरमदन मदादति लीले । सखि हे केशिमथन स  
दारे रमय मया सह मदन मनोरथभावितया सविकारे ४



कोकिल कलर वक्त्रजितया जितमनसि जनेत्रविचारे । स  
यजसमा कलकेतलया नावलिखितचनस्तनभारम्  
सखिहे केशि मयनसदारे मयमया सह मदनमनोरथ  
भावितया सविकारम् ५ चरणरणीतमणानूपरयाप  
दिष्टरितसुरतवितानम् । सखरविस्मेलमेखलया  
सकचग्रहबुम्बतदानम् । सखिहे केशि मयनसदारम्



राखे  
गी

रमय मया सह मदत मनोरथ भावितया सविकारम् ॥ ६  
रति सख समय रसाल सया दरम कलित नयन सरोजे ।  
निःसह निपतित नवलतया मथ सुदन मदित मनोजे  
सखि हे केशि मयन मदारम् रमय मया सह मदत मनो  
रथ भावितया सविकारम् ७ श्रीजयदेव भणित मिदम्  
निशय मथुरिषु निधुवन शीलम् । सख मत्के दित गोप



वधूकथिते वितनोत्तमलीलम् ॥ सखिरे केशिमयन  
मदारम् रमय मया सह सदन मनोरथ भावितया सविका  
रमाद ॥ श्लोक ॥ हस्तसस्त विलास वेशम नृज भूव  
लिमदलवी वेदोत्तारिदगन्तरी तित मति सेदार्द्रगोद  
स्थलम् । मामदीत्य विललितस्मितसुधा सुगानने  
कानने । गोविन्दव्रज सेदरी गणा वृते पश्यामि हृष्यामि



श. वि  
गी

च १ उगलोकस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिका विका  
शः कासाशे पवनपवनोऽपि व्यथयति । अपि भ्राम्यन्ते गी  
रगित रमणीयानमकुल । प्रसूतिस्तूतानो सविशिव  
दिणीये सखयति २ साकृतसितमा कुला कुलगलह  
मिल मलासित । भूवली कमलीक दर्शित भजा मला  
ईदृष्टस्तनम् । गोपीनां निभते निरीक्ष्य गमिता कोत्तश्चिरे



चिन्तयन्नन्तर्मग्यमनोहरे हरतवः क्लेशे नवः केशवः ३

केसारिरपि संसारवासनावंथं स्रज्वलाम् । राधासाथाय ह

दये तन्माज व्रजसंदरीः ४ इतस्ततस्ता मनुस्य राधिकाम

नेरावाणा वराणिविन्न मानसः । कृतानुतापः सकलिदने

दिनी तदा न्तकेजे निषसाद मायवः ५ ॥ अष्टपदी ॥ ७ ॥

मामियेचलिता विलोकावतेव धूनिचयेन । सापरायत



शंखे  
गी

या मयापिनवारितातिभयेन । हरिहरिता हरतयागता  
सा कृपितेव ॥ किंकरिष्यति किंवदिष्यति सा विरेविरे  
॥ किंथनेन जनेन किं ममजीवितेन गरेणा २ वितया  
मि तदानने कटिलकरोषभरेणा । शोण पत्र मिबोपरिध  
मता कले भ्रमरेणा । हरिहरिता हरतयागता सा कृपिते  
व ३ तामरे हरिसेगता मनिशे भ्रशे रमयामि । किंवनेन



सगमि किं वृथा विलयासि । हरिहरि हता हरतया गता  
सा ऊपितेव ४ तन्निविन्नमस्यया हृदये तवा कलया  
सि । तन्न वेमि ऊतो गतासि न तेन तेन नयासि" हरिहरि  
हता हरतया गता सा ऊपितेव ५ ॥ पश्य मे पुरतो गता ग  
तमेव मे विद्यासि । किंपरेव स संभ्रमे परिभ्रमो न ददा  
सि" हरिहरि हता हरतया गता सा ऊपितेव ६ तम्यताम



रा. खे.  
गी.

परे कदापि तवे दृशेन करोमि । देहि से दारि दर्शने मम मन्त्र  
येन उनोमि । हरि हरि हता हरतया गता सा कुपितेव ७  
वर्णिते जय देव केन हरेरि देशातेन । तिड विल्व समद्रसे  
भवरोहिणी रमणेन । हरि हरि हता हरतया गता सा कु  
पितेव ८ ॥ श्लोक ॥ भूपल बोधनुरपो गत रंगितानि-  
वाणा यणाः प्रवणा पालि रिति स्मरेण । तस्या मने गजय



जेगमदेवताया । मखाणि निर्जित जयेति किमर्पितानि  
१ हृदिविसलतासरो नाये भजेगमनायकः । ऊवल यद  
लश्रेणीकेदेन सागरलफतिः । मलयजरजोनेदेभस्म  
यारहिते मयि । प्रहरन हर भोत्पा नेगक्रथा किमथाव  
सि २ पाणौ माकरु हृत सायकममे माचापमारोपय  
क्रीडा निर्जित विषमूर्खित जना । चातेन किंपौरुषम्



शंखे  
गी

तस्याप्यस्यगीदृशो मनसिज प्रेतकटाक्षानिल । ज्वाला  
जर्जरिते मनागपि मनो नाशापि सेश्वरते ३ भ्रूवापे नि  
हितः कटाक्षविशालो निर्मातृमर्मवधे । यथासाक्षा  
ऊदितः करोत कवरी भागेपि नाशेयमे । मोहेता वदयेव  
तलितवतो विवाथशेरागवान् । सहतस्तनमेतलस्तव  
कथे प्राणेर्मम क्रीडति ४ तानिस्पर्शस्त्वानितेचतरल



स्त्रियादृशो विश्रमा । स्रद्धां वज्रसौरभे सचसुधास्येदी  
गिरिवक्रिमा । सावित्राय रमाधरीति विषया संगीपिमन्  
मानसे । तस्य लघु समाधि हेतुविरह व्याधिः कथं वर्तते  
५ तिर्यककंद विलोल मौलि तरलोत्तमस्य वेशोच्चर ॥  
ज्ञातस्यान कृता वधानललना लक्ष्मिर्नमेलदिताः । मे  
मुरये मधुसूदनस्य मधुरेणामुविदौ मृदः । स्यंदेपल



रा. वि.  
गी.

विताश्चिरेददत्तयः तेमेकदातोर्मयः ६ यमनातीरवा  
तीर निजेजे मेदमास्थितम् । शरप्रेमभरोत्ताने माथवेरा  
धिकासखी ७ ॥ शुष्टपरी ॥ ८ ॥ निदतिवेदन मिड किर  
ए। मन विदति खिद मयीरे ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल  
मिव कलयति मलय समीरे । साविरहे तवरीना माथव  
मनसिज विशिख भयादिव भावन या तयिलीना १॥ ३५



अविरल तिष्ठति मदन शय दिव भवदवनाय विशाले  
स्वहृदय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजाले  
साविरहे तवदीना मायव मनसि ज विशिखभया दिव  
भावनया त्वयि लीना २ ऊखम विशिख शरतल्प मन  
ल्प विलास कला कमनीयम् । अतस्मिन् तव परिरेभ  
सखाय करोति ऊखम शयनीयम् । साविरहे तवदीना



रा. वि.  
गी.

मायव मनसिज विषाख भयादिव भावनया त्रयिलीना ३  
वहति चलि त विलोचन जलधर मानन कमल मयरे । वि  
प्रमिव विकट विषे तददेत दलन गलिता मृत थारम् ॥  
साविरहे तव दीना मायव मनसिज विषाख भयादिव  
भावनया त्रयिलीना ४ ॥ विलिखति रहसि ऊरेण  
मदेन भवेत स सम शरभूतम् । प्रणामति मकर मथो वि



तिथायकरेवशरेनवचूतम् ॥ साविरहे तव दीनामाथ  
व मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयिलीना ।  
५ ॥ प्रतिपद मिदमपि निगदति माथव तव चरणे पति  
ताहम् । त्वयि विमले मयि सपदि स्याति धिरपि तत्र  
ते तव दाहम् ॥ साविरहे तव दीनामाथव मनसिज वि  
शिख भयादिव भावनया त्वयिलीना ६ ॥ ध्यातलये



सावि  
गी

नप्ररूपपरिकल्प्यभवेत्तमतीव उग्रपम् । विलपति हसति  
विषीदति रोदिति चंचति मेचति तापम् ॥ साविरहे तव  
दीनामाथव मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि  
लीना ॥ श्रीजयदेवभणित मिदमधिके यदि मनसा  
नटनीयम् । हरिविरहा कुलवल्लव भवति सखीवच  
ने पटनीयम् । साविरहे तव दीना माथव मनसिज वि



शिवभयादिवभावतयात्वयिलीना द॥ श्लोक॥ श्रवा  
सो विपिनार्यते प्रियसाखी साक्षापि जालायते । तापोपि  
असितेन दावदहन ज्वाला कलापायते । सापितद्विरहे  
एतदेतद्गिरिणी रूपायते हा कथं । केदोर्पोपियमायते विर  
चयन् शार्हल विक्रीडितम् ॥ अष्टपदी ॥ द॥ सनवि  
तिहितमपि हारमदारम् । सामन्ते कृशतनुरतिभारम् ।



श-खे  
गी

शयिका विरहे तव केशव । ५ । सरसमस्तमपि मल  
यजपेकम् । पश्यति विषमिव वपुषि स सेकम् । शयि  
का विरहे तव केशव । ६ । श्वसित पवन मन्त्रपत्र परिणारे  
मदन दहन मिव वहति सदाहम् । शयिका विरहे तव के  
शव ३ दिशि दिशि किरति सजल कणा जालम् । नय  
ननलित मिव विगलित नालम् । शयिका विरहे तव के



शब्द ४॥ नयनविषय मपि किमल्यतल्पम् । गणाय  
ति विहितं कृताश विदुषाम् । शयिका विरहे तव केश  
व ५ तज्जतिन पाणि तलेन कपोलम् । बालशशिन  
मिव सायमलोलम् । शयिका विरहे तव केशव ६ ह  
रिति हरिति जपति स कामम् । विरह विहित म  
रणो वनि कामम् । शयिका विरहे तव केशव ७ श्रीज



रा. वि.  
शी.

यदेव भागितमिति गीतम् । सखयत्त केशव पदमपनी  
तम् ॥ रायिका विरहेतव केशव द ॥ श्लोक ॥ सारोमो  
चति सीत्करोति विलपसत्केपतेताम्यति । ध्यायत्तुम  
ति प्रमीलति पतत्तयाति मूर्च्छत्यपि । एतावत्तत्तु ज्ञे  
वरत्तन जीवेन्न किं ते रसा । त्वर्वेद्य प्रतिम प्रसीदसि यदि  
त्यक्तो मया हस्तकः । स एतरो दैवत वैद्य ह्य त्वदेगसे



गामृतमात्रसाध्या । विमुक्तवायोऽकुरुषे नराधामर्षेद्र  
वज्रादपि दारुणोसि २ केदर्यं ज्वरमंजय ऊलतनोराश्च  
र्यमस्याश्चिरे । चेतश्चेदन चेदमः कमलिनी चित्तासना  
स्यत्यपि । किं त्वदोति वशेन शीतलतने त्वामेकमेव शि  
ये । आयेतीरहसि स्थिता कथमपि क्षीणाक्षणा प्राणि  
ति ३ क्षणमपि विरहः प्रणनसेहे । नयननिमीलन



राखे  
गी

विन्नयाययाने । स्वसितिकयमसौरसालशाखे । विर  
विरहेण विलोकाश्रयिताग्राम् ४ वृष्टिवाकलगोज  
लावनवशा उदृत्यगोवर्धने । विशुद्धलवसेदरीभिर  
थिकानेदाचिरेवेवितः । केदरेणतदर्पिताथरतदी सिंह  
रमुद्राकिनो । वाङ्मगीपतनोस्तनोत्तभवतोप्रेयोसि  
केसद्विषः ५ अहमिहनिवसामियाहिराधामननय ॥



महचनेन चानयेयाः । इति मथरिषणा सखीति युक्ता ख  
यमिदमेतत् पुनर्जगादश्याम् ६ अष्टपदी ॥ वहति मलय  
समीरे मदनमपतिथायस्तुदति कुसुमतिकरे विरहिह  
दय दलनाय । तव विरहे वनमाली सखि सीदति । अ-१२  
दहति शिशिरमष्टवे । मरणा मनकरोति । पतति मद  
न विशिखिविलपति विकलतरोति । तव विरहे वनमा



श. वि.  
गी

ली सखि सीदति २ धनतिमथप समूहेष्ववगमपि दया  
ति । मनसि च लित विरहे निशि निशि रुज मपयाति ॥  
तव विरहे वनमाली सखि सीदति ३ वसति विपिनविता  
तेत्यजति ललित मपि थाम । लुदति थराणि शयने वद्ध  
विलपति तव नाम । तव विरहे वनमाली सखि सीदति  
४ भणति कवि जयदेवे विरहि विलसितेन । मनसि



भसविभवे । हरिरुदयतसकृतेन । तवविरहे वनमा  
ली सावित्री दत्ति ५ श्लोक ॥ सर्वयत्रसमेतयारतिपते  
यसादिताः सिद्धयः । सास्त्रिनेव निजेज मन्मथमहाती  
र्थे पुनर्मायवः । ध्यायेत्तामनिशं जपन्नपितवैवालाप  
मेवावलिं । भूयस्तत्कृत्वकेभ निर्भयपरीरेभास्तैवो  
च्यति १ अष्टपदी १॥ रतिस्तु सारंगतमभिसारे । म



रा-ले  
गी-

दनमनोहरवेशाम् । नऊरुतिनेवितिगमनविलेवनम  
नुसरतेहृदयेशम् । थीरसमीरेयमनातीरेवसतिवनेवन  
मालीगोपीपीनपयोधरमर्दनचेवलकरयुगशाली ॥ भु-  
नामसमेतेकृतसेकेतेवाद्यतेमृदवेणो । वद्धमन्त्रेन  
नृतेतनुसंगतपवनचलितमपिरेणम् ॥ थीरसमीरेय  
मनातीरेवसतिवनमालीगोपीपीनपयोधरमर्दनचेव



लकरप्रगशाली २ पततिपतत्रे विवलयति पत्रे शक्ति  
भवउपयानम् । रचयति शयने सचक्ति नयने पश्यति  
तव पंथानम् । थीरसमीरे यमुना तीरे वसति वनमाली  
गोपी पीनपयोधरमर्दन चंचल करप्रगशाली ३ स्रव  
रमथीरे लज्जमेजीरे रिपुमिव केलि सलोत्तम । चलस  
विज्जेजे सति मिरजे शीलयनील निचोत्तम । थीरस



श. वि.  
गी.

मीरे यमनातीरे वसति वनमाली गोपीपीन पयोधर म  
र्दन चंचल करप्रगशाली ४ उरसि मयारे रूपरित हारे । च  
न श्वतरल वलाके तरिदिव पीतेरति विपरीते । राजसिख  
कृत विषाके । यीरसमीरे यमनातीरे वसति वनमाली  
गोपीपीन पयोधर मर्दन चंचल करप्रगशाली ५ विरा ।  
लित वसने परिहृत रशने चटय जचत मपिथाने । कि



सलयशयनेपेकजनयने विधिसिव हर्षनिधानम् ॥  
धीरसमीरे यमनातीरे वसति वनमाली गोपीपीत प  
योथरमर्दनचेचलप्रगशाली ६ हरिरभिमानो रजनि  
रिदानीमियमपि पाति विगमम् । कुरुममवचने सत्त  
रचने प्रयमप्रिप्रकामम् । धीरसमीरे यमनातीरे  
वसति वनमाली गोपीपीत पयोथरमर्दनचेचलप्रगशाली ७



रा. वि.  
गी.

श्रीजय देव कृत हरि सेवे भणति परम रमणीयम् ॥ प्रम  
दित हृदये हरि मति सदये नमत सकृत कमनीयम् ॥  
धीरसमीरे यमनातीरे वसतिवनमाली गोपीपीतपयोध  
रमर्दनचेचलकरप्रयाशाली । ५ । श्लोक ॥ विकिरति  
मुहुःश्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्षते । प्रविशति मुहुःके  
जेयेजन्ममुहुर्वदन्ताम्यति । रचयति मुहुःशयोपयीक



लेमजरीलो मदन कदन क्लानः कोने प्रियस्तववर्तते १  
त्वदाकेन समे समग्रमथना निगमोचरस्तगतो । गोवि  
दस्य मनोरथेन च समे प्रामेतमः सोदताम् । कोकानो  
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना । तन्मग्ये वि  
फले विलेवनमसौ रम्यो भिसारद्वाराः २ आश्लेषाद  
ननु म्वना दननलोलेखादनस्वातज । प्रोद्धायादन



रा. वि.  
गी

संभ्रमादन्तरा रेभादन्त प्रीतयोः । अत्यार्थगतयोर्धमा  
न्मिलितयोः संभाषणौ जीनतो । देपत्योर्निषिको न के  
न तमसि व्रीडा विमिश्रो रसः ३ सभयव किते वित्यस्य  
तो दृशेति मिरेपथि । प्रतिनरुमद्गः स्थित्वा मे देपदा  
नि वितन्वतीम् । कथमपि रद्गः प्राप्ता मे गौरने गत रेगि  
भिः । समन्ति सभगः पश्यन् सत्तामपैत कृतार्थतो ४



राधा मृग मखार विंड मधुप है लोक मौलि स्थली । ने  
पणो चितनी लरत मवनी भार वतारतमः । स्वच्छंदे  
व्रज सेदरी जन मन स्तोष प्रदो वञ्चिरे । केस धेसन धूम  
केतखत त्वो देव की नंदनः ५ आर्या अथ तो गत मश  
तो विरम नर को लता गदरे दृष्टा । तच्चरिते गोविंदे मन  
सिज मे दे सखी शह ६ ॥ अष्टपदी ॥ १॥ पश्यति दिशि



रात्रि  
गी

दिशि रहसि भवेत्तम् । तदथ रमथ रमथ तिपि वेत्तम् ॥ ना  
यहरे जय नायहरे सीदति राधावास गृहे ॥ अ-१॥ त्वदधि  
सखा रमसेन वलेती । पतति पदाति कियेति चलेती-  
नायहरे जय नायहरे सीदति राधावास गृहे २ विहित  
विशद विस कि सलय वलया । जीवति परमिह न वरति  
कलया । नायहरे जय नायहरे सीदति राधावास गृहे ३



सुन्दरवलोकितमेउनलीला । मधुरिषुरहमितिभाव  
नशीला । नाथहरेजयनाथहरेसीदतिराधावासगहरे  
५ स्निष्यतिचुवतिजलथरकल्पे । हरिरूपयतउति  
तिमिरमनल्पम् । नाथहरेजयनाथहरेसीदतिराधा  
वासगहरे ६ ॥ भवतिविलेविनिविगलितलजा । वि  
लपतिरोदितिवासकसजा । नाथहरेजयनाथहरेसी



श-ले  
गी

दतिशथावासगृहे ७ श्रीजयदेवकवेरिदसदितम् । र  
सिकजनेतनतामतिमदितम् । नाथहरेजयनाथहरे  
सीदतिशथावासगृहे ८ ॥ श्लोक ॥ विपुलपुलकपा  
लिःस्फीतसीत्कारमेतर्जनितजडिमकाज्जवाज्जलेव्या  
हरेती । तवकितवविथाया मेदकेदर्पचितो रसजल  
यितिमगनाथातलग्नामगाती । १॥ श्रेयसाभरणक



रोतिवद्भूशः पत्रेपिसेवारिणि । प्रामेत्तोपरिशेकतेवित  
नृतेषां विरेथ्यायती । श्याकल्पविकल्पतत्परच ।  
नासेकल्पलीलाशत । व्यासक्तापि विना त्वया वरत  
नर्नेषानिशोनेषति २ किंविश्राम्यसि हसभोगि  
भवने भोडीरभूमीरुहि । भातर्याहिनदृष्टिगोचर  
मितः सानेदनेदस्यदम् । राथाया वचनेतदधराशुवा



ग. वि  
गी

त्रेदोतिके गोपते । गोविंदस्य जयेति सायमतिथिप्राश  
स्वगर्भागिरः ३ अत्रोत्तरे च कुलदा कुलवर्त्मचातसेजात  
पातक ३ वस्करलोक्तनश्रीः । वेदावनोत्तरमदीपयदंश  
जालैर्दिकसंदरी वदनवेदन विंडरिंडः ४ आर्या प्रसर  
तिशशथरविंवे विहित विलेवेवमाथवे विश्रुति विरति  
त विविथ विलापे सापरितापे च कारोचैः । ५ ॥ अष्टम



दी। १२॥ कथित समयेपि हरिरहहन ययौवनम् । ममवि  
फलमेतदन रूपमपियौवनम् । यामिहेकमिह शरणे स  
खी जन वचन वेचिता । ३॥ यदनु रामनाय निशिग  
हनमपि शीलितम् । तेन मम हृदय मिदम सम शरकी  
लितम् । यामिहेकमिह शरणे सखी जन वचन वेचिता  
२ मम मरणमेव वरमति वित्तय केतना । किमिह विष



शखे-  
गी-

शमिविरहानलमचेतना । यामिहे कमिह शरणे सावीज  
नवचनवेचिता ३ मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी-  
कापि हरिमन भवति कृतसकृत कामिनी । यामिहे क  
मिह शरणे सावीजनवचनवेचिता ४ अहह कलयासि व  
लयादि मणि मूषणम् । हरिविरहदहन वहनेन वद्धहृष  
णे । यामिहे कमिह शरणे सावीजनवचनवेचिता ॥ ५ ॥



ऊसमसुऊमारतनमतवशरलीलया । सगपिहृदिदह  
तिमामतिविषमशीलया । यामिहेकमिहशरणोसखी  
जनवचनवेचिता ६ अहमिहतिवसामिनगणितवनवे  
तसा । स्मरतिमथसूदनोमामपिनचेतसा । यामिहेकमि  
हशरणोसखीजनवचनवेचिता ७ हरिचरणशरणज  
यदेवकविभारती । वसतहृदियुवतिरिवकोमलकला



श. ए.  
गी.

वती । यामिहे कमिह शरणे सखी जन वचन वेचिता द  
श्लोक ॥ तत्किं कामपि कामिनी मभिस्तः किं वा क  
लाकेलिभि र्वहे वेध भिर्य कारिणि वनो पोते किमुआ  
म्यति । कातः क्लान्त मना मना गपि पथि प्रस्थात मेवात्  
मः सेकेती कृत मेज वेज ललता केजे पियन्नागतः । अथा  
गता मायव मेतरेण सखी मिये वोत्प विषाद मूको । वि



शोकमानारमितेकयापि जनार्दने दृष्टवदेतदाह २ अष्ट  
पदी १३॥ स्मर समरोचित विरचित वेशा । गलित ऊस  
मरविल्व लित केशा । कापिचपला मधुरिषणा विलस  
ति श्रवति रथिकशणा । अ० १॥ हरिपरिरम्भावलित  
विकारा । ऊव कलशो परितरलित हारा ॥ कापिचप  
लामधुरिषणा विलसति श्रवति रथिकशणा । २॥ वि



रा. वि.  
गी.

चल दलक ललिता ननचेद्र। तदथर पानरभसकृततेद्र-  
कापिच पलामथरिषाणा विलसतिप्रवतिरथिकशणा ३  
चचल ऊंडल ललित कपोला। मखरित रशन जचनरा  
तिलीला। कापिच पलामथरिषाणा विलसतिप्रवतिर  
थिकशणा ४ दीयत विलोकित लज्जितरुसिता। वज्र  
विथरुजितरतिरसभरिता। कापिच पलामथरिषाणा



विलसति सुवति रथिकशणा ५ विप्रल पलक सृष्टेवप  
सुभेगा । असित निमीलित विकसदनेगा । कापिच प  
ला मधुरिषणा विलसति सुवति रथिकशणा ६ असजल  
कणा भरसभग शरीरा । पोरपति नोरसिरति रणथीरा ॥  
कापिच पला मधुरिषणा विलसति सुवति रथिकशणा ७  
श्रीजयदेव भणित सति ललिते । कलिकलषे शमयत



श. वि  
गी

हरिरमितम् । कापिचपला मधुरिषणा विलसति सु  
वतिरथिकशृणा ८ ~~दक्षिणविलोकिता लज्जि~~ ॥ श्लोक  
विरहपोडुमयारिमाखावुज अतिरयेतिरयन्नपि वेदनाम्  
विधुरतीवतनोति मनोभवः सहृदये हृदये मदतयथा  
॥ अष्टपदी ॥ १४ ॥ मधुरित मदनेरमणी वदनेवेवतव  
लिताथरे । मयामदतिलके लिखति सुपलके । मयामि



वरजनीकरे । रमते यमना पुलितवने विजयो मयारिधु  
ना । ५॥ १॥ वनचय रुचिरे चयति चिकरे । तरलितन  
रुणानने ऊरुवक ऊसमे चपला सुषमे रतिपति मयाका  
नने । रमते यमना पुलितवने विजयो मयारिधुना । २॥  
चटपति सचने ऊच पुगागगने मया मद रुचिरुषिते ।  
मणि सरममले तारक पटले तखपदशशिभूषितम् ॥



श-ले  
गी

रमते यमना पुलिनवने विजयो मयारिथना ३ जितवि  
मशकले म्दुभजप्रगले करतल नलिनीदले मरकत  
वलये मधुकरनिचये वितरति हिमशीतले ॥ रमते यम  
ना पुलिनवने विजयो मयारिथना । ४ । रतिरद्वजचने  
विपुलापचने मनसिजकनकासने । मणिमयरशाने  
नोरणारसने विकिरति कृतवासने । रमते यमना पुलिन



वने विजयो मगरि रथना । ५ चरण कि सलये कमला  
निलये नखमणि गणा एजिते । वरिष वरणो यावक  
भरणो जनयति हृदयो जिते । रमते यमना पुलित वने  
विजयो मगरि रथना । ६ रमयति सभृशे कामपि सट  
शे खिल हलथ रसोदरे । किमफल मवसे वदस विवि  
रसे चिरमिह विटपोदरे । रमते यमना पुलित वने वि



शान्ति  
गी

जयो मरारि रथना । १० । इह रसभगाने कृत हरि शान्ते  
मधुरिष पद सेवके । कलि प्रगार चिते नव सत्त उरिते  
कवि न्यप जय देवके । रमते यमना पुलिन वने विजयो  
मरारि रथना । ५॥ श्लोक ॥ नायातः सखि निर्दयो य  
दिश दहस्ते हनि किं ह्यसे । स्वच्छेदे वड वल्लभः सरसते  
किं तत्र ते ह्यणाम् । पश्य य प्रिय संगमा यद यित स्यात्



समाप्तं यौ । रुक्मं हतिभरादिव स्फुटदिदेचेतः स्वये  
यास्यति १ अष्टपदी ॥ १५ ॥ अनिलतरलकुवलयनयने  
न । पतति न सा किमलयाशयनेन । सविथारमिताव  
नमालिना ॥ अ- १ ॥ विकसितसरसिजललितमखेन-  
स्फुटति न सामनसिजविशिखेन । सविथारमिताव  
नमालिना ॥ २ ॥ अमृतमधुरमृदुतरवचनेन । ज्वलति



रा. वि.  
गी.

न सा मलयजपवनेन । सखिया रमिता वनमालिना ३  
स्थलजलरुह रुचिकरचरणेन । दहति न सा हिमकरकि  
रणेन सखिया रमिता वनमालिना ४ सजल जलदस  
सद्य रुचिरेण । दहति न सा हृदि विरहभरेण । सखिया  
रमिता वनमालिना ५ कनकनिकष रुचि शुचि वसनेन  
ससितिन सा परिजनहसनेन । सखिया रमिता वनमा



लिता । ६ । सकल भवनजन वरत रुणेन । वहति न सारु  
जमति करुणेन । सखिया रमिता वनमालिना । ७ ॥ श्री  
जयदेव भणित रमणेन । प्रविशत हरि रपि हृदय मनेन  
सखिया रमिता वनमालिना । ८ ॥ श्लोक ॥ मनो भवा  
नेदन चेदना निल । प्रसीद रे दक्षिण मेव वासनाम् ॥  
तणे जगत्प्राण विधाय मायवे । प्रयेमम प्राण हरे भवि



श-ले  
गी

स्यसि १ रिषस्त्रिमासी सेवासोये शिखीचहिमानिलो ।  
विषमिव सुधारिषमहरे उत्तोति मनोयाने । हृदयमदये  
तस्मिन्नेवेषतर्बलते बलात् । ऊवलयदृशो वामः कामो  
निकामतिरेकशः २ बाधोविधेहिमलयानिलपेववा  
एषाणा नरदृहाणा नरदृहेष नराप्रयिषे किंते कृतोतम  
यानि क्षमयानरं गैरेगाति सिंचममशाम्य तदेहदाहः ३



संज्ञानेदृशेदरादिदिविषहृदैरमेदादरादानेदैर्मज्जदेद  
नीलमणिभिःसंदर्शितेदीवरम् । स्वच्छंदेमकरंदसेद  
गल्लेदाकिनीमेडरे । श्रीगोविंदपदारविंदमशुभस्के  
थायवेदामहे ४ अथकथमपियासिनीविनीयस्वरश  
रजर्जरितापिस्त्राप्रभाते । अनुनयवचनेवदेतमयेप्र  
णतमपिप्रियमाहसाम्यसूयम् ५ । अष्टपदी ॥ १६ ॥



राखे  
गी

हजनिजतिशुक्रजागरागकषायितमलसतिमेषम्  
वहतिनयनमनरागमिवस्फुटमदितरसाभितिवेशे  
हरिहरियाहिमाथवयाहिकेशवमाथवकैतववाटम्  
तामनसरसरसीरुहलोचनयातवहरतिविषादे।ध्रु०१  
कजलमलिनविलोचनचेवनविरचितनीलिमरूपम्  
दशनवसनमरुणोत्तवक्रसतनोतितनोरनरूपम् ॥



हरिहरियाहि माथव याहि केशव माथव कैतव वादम्  
तामन् सरसरसीरुहलोचनयातव हरति विषादम् । २ ।  
वप्ररन् हरति तव सरसंगार खरन खरत्तरे खम् ॥ म  
रकतशकलकलितकलयौतलिपिरिवरति जयलेखे-  
हरिहरियाहि माथव याहि केशव माथव कैतव वादम्  
तामन् सरसरसीरुहलोचनयातव हरति विषादम् ३ ।



रा-वे-  
गी-

चरणकमलगलदलककसिक्तसिंदे तवहृदयसदारे।  
दर्शयतीववह्निर्मदनदुमनवकिसलयपरिवारम् ॥  
हरिहरियाह्निमाथवयाह्निकेशवमाथवकैतववादम्  
तामनसरसरसीरुहलोचनयातवहरति विषादम् ४  
दशानपदेभवदथरगतेममजनयतिचेतसिखेदम् ॥  
कथयतिकथमथनापिमयासहृतववपुतेतदभेदम्



हरिहरियाहिमाथवयाहिकेशवमाथवकैतववादम् । ता

मन्सरसरसीरुहलोचनयातवहरतिविषादम् ॥ ५ ॥

वहिरिवमलिनतरेतवकुसुमनोपिभविष्यतिनूतम् ।

कथमथवेवयसेजनमन्वगतमसमशरज्जरहनम् ॥

हरिहरियाहिमाथवयाहिकेशवमाथवकैतववादम् ।

तामन्सरसरसीरुहलोचनयातवहरतिविषादम् ६



रा.ले  
गी

भसति भवानवला कवलायवनेषु किमत्र विवित्रम् ।

प्रथयति पूतनि कैववधूवयतिर्दयवाल् चरित्रम् ॥

हरिहरि याहि मायवयाहि केशव मायव कैतव वादम् ।

तामवसरसरसीरुहलोचनयातवहरति विषादम् ७

श्रीजयदेव भणितरतिवेचिन्तितेति सुवति विलापम् ।

प्राप्तसुखमथरेविवथा विवथालयनोपि उग्रम् ॥



हरिहरियाहि माथव याहि केशव माथव कैतव वादम्  
तामन सरसर सीरुह लोचनया तव हरति विषादम् ८  
श्लोक ॥ तदेवेषपत्न्याः प्रसरदनरागेव हरिव । वि  
यापादालके कुरितमरुणयोतिहृदयम् । ममाद्यप्र ।  
त्यातप्रणयभरभेगेन कितव । तदालोकः शोकाद  
पि किमपि लज्जोन्नतयति १ प्रातर्नीलतिचोलमच्युत



रा. वि.  
गी.

उरः सेवीत पीतो अके । राधाया अकिंते विलोक्य हसति  
स्वैर सखी मे उले । व्रीडा चेत्तल मे वले नयनयो राधाय  
राधा नते । स्मेर स्मेर सखोय मस्तु जगदाने दाय नंद्य  
त्मजः २॥ आर्या । अथ तो मत्त य विन्नोरतिर सभिन्नो  
विषाद से पन्नाम् । अत चितित हरि चरितो कल हंत रि  
ता मुवाच सखी ३॥ अष्टपदी ॥ १७ ॥ हरिरभिसरति



वहतिमथपवने । किमपरमथिस्रत्वेसविभवने । मा  
थवेमाऊरुमानिनिमानमये । १॥ तालफलादपि  
गुरुमतिसरसम् । किंविफलीऊरुषेऊवकलशम् ।  
माथवेमाऊरुमानिनिमानमये । २॥ कतिनकथित  
मिदमनपदमचिरम् । मापरिहरहरिमतिशयरुचिरे-  
माथवेमाऊरुमानिनिमानमये । ३॥ किमितिविषीद



राखे  
गी

सिरोदिषि विकला । विहसतिश्रवतिसभातवसकला ।  
माथवेमाक्रुमानितिमानमये ४ सजलनलिनीदल  
शीलितशयने । हरिमवलोकयसफलनयने । माथ  
वेमाक्रुमानितिमानमये ५ जनयसिमनसिकिमिति  
गुरुवेदम् । शृणुममवचनमनीहितभेदम् । माथवे  
माक्रुमानितिमानमये ६ हरिरुपयातवदन्वदन्मथ



रम् । किमिति करोषि हृदयमतिविधुस्म । मायवेमा  
ऊरुमातिनिमानमये ७ श्रीजयदेवभाणतमतिल्लि  
तम् । सखयत्तरसिकजनं हरिचरितम् । मायवेमाऊ  
रुमातिनिमानमये ८ ॥ श्लोकः ॥ स्त्रियेयत्परुषासि  
यत्पणमतिस्तव्यासियद्गणिणि । द्वेषस्यासियउत्स  
वि विम्वत्तं यातासितस्मिन्त्रिये । तयुक्तेविपरीतका



रा. खे  
गी.

विणितव श्रीविड चर्कविषे । शीतो अस्तपनो हि मे डन  
वरः क्रीडा सद्यो यतनाः १ अंतर्मोहन मौलिहूर्णनवल  
नंदारविस्त्रसतः । स्रव्या कर्षणादृष्टिर्द्वर्षणमहामंत्रः  
ऊर्योदशाम् । दृण्दानव ह्यमान दिविषड्वीरुतः  
त्वापदो । भृशः कंसरिपो र्व्यपो ह्यतवः प्रयोसि वशी  
रवः २ अयोतरे मरुता रोष वशामसीमनिः आसतिः



सहस्रांतीसम्रावीमपेक्ष्य सत्रीडमीक्षितस्रावीवदानो  
दिनोते सानेदगाङ्गदपदे हरिरित्यवाच ३॥ अष्टपदी ॥ ए  
वदसि यदि किंचिदपि देतरुचिकौमदी हरति दयति मि  
रमति चौरम् । स्फुरदधरसीयवे तव वदनचन्द्रमाशेचय  
तिलोचनचकोरे । प्रिये चारुशीले मेवमयि मानमति  
दानम् सपदि मदना नलो दहति सममानसे देहि स्वाव



रा. वि.  
गी.

कमलमधुपानम् । अ. १॥ सत्यमेवासि यदि सदतिम  
यिकोपिनी देहि त्वर नयनशरचातम् । चटय भज वेध  
ने जनय हृदं त्वदने येन वा भवति सा त्वजातम् । प्रिये वा  
रुशीले २ त्वमसिममभूषणे त्वमसिममजीवने त्वम  
सिममभवजलधिरत्नम् । भवत भवतीह मयि सतत  
मन्त्रोपिनी तत्रमम हृदयमति यत्नम् । प्रिये वारुशी



ले ३ नीलनलिनाभमपितलितवलोचनेधारयतिको  
कनकरूपम् । असमशरवाणभावेनयदिरंजयसिद्ध  
समिदमेतदनरूपम् । प्रियेचारुशाले ४ स्फुरतकुव  
केभयोरुपरिमणिमेजरी रंजयततवहृदयदेशम् ॥  
रसतरशानापितवचनजचनमेउलेवोषयतमन्म  
यनिदेशम् । प्रियेचारुशाले ५ स्थलकमलगजने



श-ले  
गी

ममहृदये जने जतिरतिरेगपरभागम् । चनमस्या  
वाणिचरणद्वये सरसलसदलककरागम् । प्रियेचारु  
शीले ६ सरगरलवेदने ममशिरसि मे उने देहि पदप  
लवमदारम् । ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनानलो  
हरत्नतटपद्मविकारम् । प्रियेचारुशीले १० । इति च  
दलचाटपद्मवारुमरवैरिणो राधिकामपि वचनजातम्



जयति जयदेवक विभारती भूषिते मातिनी जन जति  
शातम् । प्रिये चारुशाले । ५ ॥ श्लोक ॥ परिहर कृतान्ते  
केशका तया सतते च न स्तन ज च न या क्रोते स्वाते । परा  
नवका शिति विशति वितनो रम्यो यमो न कोपि ममो  
तरे स्तन भरपरीरे भारे मे विथेहि विथेयताम् १ मुरथे  
विथेहि मयि निर्देय देत देशे दोर्वलिवेयति विडस्तनपी



रा. खे  
गी.

उनाति । चेदित्वमेव मदमेव न पेव वा ए चे सल को उद  
लनादसवः प्रयोत्त २ प्राशिश्रित्व तव भाति भेय रभृषेव  
जनमोहक गलकाल सर्पः । तउदित भय भेज नाय ए  
नोत्व दथ रसीधु सयैव सिद्धमेवः ३ व्यथयति वृथा मौ  
नेतत्विप्रपंचय पेव मे तरुणि मधुगाला पेस्ता पे विने  
दय दृष्टिभिः समति विमखी भावेताव हि मेव न वेव



य। स्वयमजि शयस्त्रिगोमग्येप्रियोहमपस्थितः ४  
वेधककतिवोथवोयमथरःस्त्रिगोमधकच्छविर्गोड  
अरिवकास्तिनीलनलिनश्रीमोचनलोचनम् । ना  
साभ्येतितिलप्रसूनपदवीकंदामदेतिप्रिये । प्रायस्त्व  
न्मखसेवयाविजयतेविशेषसपुष्पायुथः ५ दृशोतव  
मदालसेवदनमिंदुसेदीपनेगतिर्जनमनोरमा । विध



श-वि  
गी

तरेभमरुदयम् रतिस्तव कलावती रुचिरचित्रलेखेभुवा  
वहोविषययौवने वहसितन्विष्टयीगता ६ प्रीतिवस्त  
नतोहरिः ऊवलयामीरेनसार्धेवगो रायामीनपयोधरस  
राण कृत्कंभेन संभेदवान् यत्रस्त्रियति मीलतिक्षणम  
मूलिप्रेतदालोकनात्केसस्याथ जितेजितेजितमिति  
व्यामोहकोलाहलः ७ रुचिरमननयेन प्रीणयित्वा



सुगादी गतवति कृतवेषे केशवे केशयाम् । रचित  
रुचिरभूषोदृष्टिमोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादो कापि  
राथोजगाद ६॥ अष्टपदी ॥ १५॥ विरचित वाद्वचनरच  
ने चरणारचित प्रणिपातम् । संप्रति मेजल वेजल सीम  
तिकेलि शयन मनयातम् । मयि मधु मयन मनगा  
त मन सराधिके ॥ १६॥ चन जचन स्तन भार भरे दर



रा-ले  
गी

मेथरवरण विहारम् । सत्वरित मणि मेजीर सपेहि वि  
येहि मरालनिकारम् । मग्ये मथु मयन मन्वगत मन  
सरसाधिके २ मृण्मणी यतरेत रुणी जन मोहन मथु  
रिषरावम् । ऊसम शयसन शासन वेदिनिपिकतिकरेम  
जभावम् । मग्ये मथु मयन मन्वगत मन सरसाधिके ३  
अनिल तरल किसलयनिकरेण करेण लतानि करवम्



सुगुणमथ मयनमनगतमनसरसाधिके ४ स्फुरितम  
नेगतरेगवशादिव सूचित हरिपरिभम् । दृक्मनोह  
रहार विमलजलधारममंजुचक्रं भम् । सुगुणमथ मय  
नमनगतमनसरसाधिके ५ अथिगतमगविलसखी  
भिरिदेतववपुपरतिरणासजम् । चंडिरणितरसा  
नारवर्दिममभिसरसरसमलजम् । सुगुणमथ मय



रा'वे  
गी'

न मनगतमनसरगाधिके ६ सरशरसुभगतवितसखी  
मवलेद्यकरेणसलीलम् । चलवल्लयकणितैरवबोधय  
हरमपितिजगतिशीलम् । मग्धेमधु मयतमनगत  
मनसरगाधिके ७ श्रीजयदेवभाणितमधुरी कृतसारस  
दासितवामम् । हरिवितिहितमनसामयितिष्ठतकेट  
तटीमभिगमम् । मग्धेमधुमयतमनगतमनसरगधि



के ८॥ श्लोक॥ सामोदक्षति वक्षति प्रिय कथो प्रमेग  
मालिगनैः प्रीतियायति रेस्पते सखि समागम्येति चि  
ताजलः सतोपश्यति केपते पुलक यत्पानेदति स्विद्य  
ति प्रत्यङ्गच्छति मूर्च्छति स्थिरतमः प्रेजेति केजे प्रियः ।  
प्रत्योति तिप कजले प्रवणयो स्तापि च्छय च्छावति  
मूर्धिशाम सरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिका पत्रकम्



श'खे  
गी'

धूर्तानामभिसारसत्वरहदेविषड्भुतिर्जैसति । धोते  
नीलतिवोलवारुसदृशोप्रत्येगमालिंगति २ काश्मीर  
गौरवप्रथमभिसारिकाणाभावद्वेषमभिज्ञोमणिमे  
जरीभिः पतन्मालदलनीलतमेतमिसे तन्मेमहेमनि  
कषोपलतोतनोति ३ शरावलीतरलकाचनकाविदा  
मकेयूरकेकणमणिप्रतिदीपितस्य हारेतिर्जैजतिल



यस्य हरिं निरीक्ष्य व्रीडावती मयः सखी निजगाद्यायाम्

४॥ अष्टपदी ॥ २० ॥ मेज्जतदंज्जतलकेलिसदने प्रविश

राथे माथवसमीपसिंह विलसति रभसहसितवदने १

नवभवदशोकदलशायनसारे प्रविशराथे माथव स

मीपसिंह विलस ऊचकलशानरत्नसारे २ ऊसमचय

रचित अचिवासगारे प्रविशराथे माथवसमीपसिंह वि



रा. वि.  
गी

लसकसमसकमारदेहे ३ बलमलयपवनसरमिशी  
ते प्रविशराथे माथव समीपमिह विलसरसवलितल  
लितगीते ४ विततवद्धवलिनवपलवचने प्रविशरा  
थे माथव समीपमिह विलसविरमिलितपीनजचने ५  
मथसुदितमथपकलिकलितरावे प्रविशराथे माथव  
समीपमिह विलसमदनरमसरसभावे ६ मथतरल



पिकनिकरतिनदमाखरे अविशगयेमाथवसमीपमि  
ह विलसदशानरुचिरुचिरशिखरे ७ विहितपद्मावती  
स्वातिसमाजे ऊरुमयारे मंगलशतानीहभणतिजयदे  
वकविशजराजे ८ ॥ श्लोक ॥ त्वावितेनविरेवहन्नयम  
ति श्रोतोभ्रशेतापितः केदर्पेणावपातमिच्छतिस्थथा  
सेवाथविवाथरम् अण्योकेतदले ऊरुत्तणमिहभूते



रा. वि.  
गी.

पलत्सीलव । क्रीतेदासश्चोपसेवितपदो भोजेकृतः सभ  
मः १ साससाधससानेदागोविंदे लोललोचना । सिंजान  
मेजमेजीरं प्रविवेशानिवेशनम् २॥ अष्टपदी ॥ २॥ रा  
थावदन विलोकन विकसित विविध विकार विभगम् ।  
जलनिधिमिव विभ्रमेडल दर्शित तरलित तरेगा तरेगम् ।  
हरिमेकरसे विरमभिलषित विलासम् साददर्श शुरुहर्ष



वशेवदवदननेगनिवासम् । ३॥ शरममलतरतार  
मरसि दयतेपरिरभविहरम् । स्फुटतरफेनकदंब  
करेवितमिवयमनाजलगतहरम् । शरमेकरसेविर  
मभिलषितविलासम् साददर्शयकरुष वशेवदवदन  
नेगनिवासम् । २॥ श्यामलमडलकलेवरमेडलमधि  
गतगौरडकलम् । नीलनलिनमिवपीतपरागपटल



रा. वि.  
गी.

भरवलपितमूलम्। करिमेकरसे विरमभिलषितवि  
लासम्। साददर्शगुरुहर्षवशे वदवदनमनेगतिवासम्  
३॥ तरलदृगंचलवलनमनोहरवदनजनितरतिरामो-  
ष्कटकमलोदरविलितविजतश्यामिवशरदितशयो॥  
हरिमेकरसे विरमभिलषितविलासम्। साददर्शगुरुह-  
र्षवशे वदवदनमनेगतिवासम्। ४॥ वदनकमलपरि



शीलित मिलित मिहिरसम केडल शोभम् । स्मितरुचि  
रुचिरसमलसिताथरपलवकतरति लोभम् । हरिमे  
करसे चिरममिलवित विलासम् । साददर्शयकरुषेव  
शेवदवदनमनेय निवासम् ५ शशि किरण क्षुरितो  
दरजलथरसेदसकसमकेशम् । निमिरोदितविध  
मेडल निर्मल मलयज तिलक निवेशम् । हरिमेकरसे



श. वि.  
गी.

विरमभिलषित विलासम् । साददर्शय कर्षवशे वद  
वदन् मनेगतिवासम् ६ विप्रलुपलकभरदेत्तरिते  
तिकेलिकलाभिरथीरम् । मणिगण किरणसमूह  
समञ्जलभूषणसुभगशरीरम् । हरिमेकरसे विरम  
भिलषित विलासम् । साददर्शय कर्षवशे वद वदन्  
मनेगतिवासम् ७ श्रीजयदेवभाषात विभवदिशणी



कृतभूषणभारम् । प्रणमनहृदिविनिधाय हरिं भव  
जलपि स्रक्तोदयसारम् । हरिमेकरसेचिरमभिलषि  
तविलासम् । साददर्शयुरुर्ध्ववशे वदवदनमने गति  
वासम् ॥ ६ ॥ श्लोकः ॥ अतिक्रम्यापंगे अवगापयपर्यंत  
गमन प्रयासेनैवाक्षोत्तरलतरतारेपतितयोः ॥  
इदानीं गथायाः प्रियतमसमालोकममये । पणतस्वे



ग.ले.  
गी.

दोव प्रसरश्चरुषीश्रुतिकरः । भजेत्याल्ललोते कृतक  
षट्कंदूतिपिहित स्मितेयातेवोहादहिरवहितालीप  
रिजने । प्रियास्पेपशेप्याः स्मरशरवशाकृतसभगे  
सलजालजापिव्यगमदिवहरेरुगादृशः २ जयश्री  
वित्तसैर्महितश्चमेदारजसमैः स्वयंसिंदरेणादिप  
रणासदासदितश्च भजापीडकीडाहतकवलयापी



उकारिणः प्रकीर्णास्त्रिवेर्जयति भुजदेयोः सरजितः  
३ गतवति सावीर्दे मेदत्राभरनिर्भर सरशरवशाह  
तस्फोतस्मितस्त्रपितायाम् सरसमन सेट्टाशयोमद  
नेवपल्लव प्रसरशयने विदित्ताह्नी मवाचहरिः प्रियाम्  
४ अष्टपदी ॥<sup>५</sup> किसलयशयननले करुका मिति चर  
णानलित विनिवेशम् । तवपदपल्लव वैरिण्यभवमिद



रा.ले  
मी

मन्त्रभवत्सर्वेशम् । त्वाणमथना नारायणमन्त्रगतम्  
नसरभोराधिके । ३१ । ॥ करकमलेन करोमि चरणाम्  
हमागमितासि विद्वन्म । त्वाणमप ऊरुशयनो परिमा  
सिवन्परमन्त्रगतिशूरम् । त्वाणमथना नारायणमन्त्र  
गतमन्त्रसरभोराधिके । ३२ । वदन्सुधातिथिगलितम्  
मृतमिवरचयवचनमन्त्रकले । विरहमिवापनयामि



पयोधररोयक मरसिउकलम् । तणामथना नाय  
ण मनगत मनसरभोरधिके ३ प्रियपरिरेभणारभस  
वलितमिव पुलकित मत्पुङ्गवम् । मथरसिउचकल  
शेविति वेशय शोषय मनसिजतापम् । तणामथना  
नायण मनगत मनसरभोरधिके ४ अथरस्यार  
सम्पत्तय भासिति जीवय मृत मिवदासम् । त्वयिवि



ए.वे.  
गी.

निहित मनसे विरह नल दग्ध वषम विलासम् ॥ क्षण  
मधुना नारायण मनगत मनसरभोगधिके ५ शशिसु  
विमलवयसिगिरशनायण मनयण कंदतिनादम् ॥  
समप्रतिपुगलेपिकरव विकलेशमय विरादवसादम् ।  
क्षणमधुना नारायण मनगत मनसरभोगधिके ॥ ६ ॥  
सामति विफलरुषा विकलीकृतमवलोकितमधुनेदे



मीलति लज्जितमिव नयने तव विरस विस्मयति विदे  
क्षणा मधुना नारायणा मन्त्रगत मन्त्रसरभोगाधिके ॥ ७  
श्रीजयदेव भणितमिदमन्त्रपदनिगदितमधुरिषुमो  
दम् । जनयतु रसिकजनेषु मनोरसरतिरसभावविनो  
दम् । क्षणा मधुना नारायणा मन्त्रगत मन्त्रसरभोगाधि  
के । ८ ॥ श्लोकः ॥ प्रहृष्टः पुलको जरेणातिविश्रमे



श. वि.  
गी.

निमेषेणैव । श्रीशक्तविलोकिनेऽथरसथापानेक  
थाकेलिभिः । आनेदाधिगमेनमन्त्रयकलाप्रदेपि  
यस्मिन्नभू । उद्भूतः सतयोर्वभूवसरतारैः प्रियेभाव  
कः । दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीदितः पाणीजै  
राविहोदशतैः क्षताथरपुटः शोणीतटेनाहतः । हस्ते  
नावभृतः कचेऽथरमथस्येदेनसमोहितः । कोतः काय



पितृमिमापतदहो कामस्य वा मागतिः २ मारो के रतिके  
लिसे जल राणा रे भेतया साहस । प्राये को तज या य किं वि  
उपरि प्रा रे भि यत्ने भु मात । निष्पदा ज च न स्य ली शि थि  
लिता दो र्व लि रु त्के पिते । वदो मी लित म दि पौ रु ष र सः  
स्वा णो ज तः सि द्धा ति ३ तस्याः पा द ल पा णि जो कि त म  
रो ति श क षा ये द शौ । नि र्थो तोः थ र शो णि मा वि त्व लि त



राखे  
गी

सस्तसजोमूर्धजाः कोचीदामदरस्थोचलमिति शान्त  
निस्वानैर्दृशो । रेभिः कामशरैस्तदद्भुतमहोपसर्गमनःकी  
लितम् ४ त्वामप्यस्यिस्वयेवरपरोक्षीरोदनीरोदरे ॥  
शेकेसेदरिकालकूटमपिवत्सूक्ष्मोमशानीपतिः । श्ये  
पूर्वकथाभिरन्यमतसो विलिप्यवामोचले । राधायाःस्त  
नकोरकोपरिवलनेत्रोहरिः पातवः ५ व्यालोलः केश



पाशस्तरलतमलकैः सदलोलौकपोलौ । स्पष्टदृष्टय  
श्रीः कचकलशरुचा स्मरिताहारयष्टिः कोचीकोविद्र  
ताशोस्तनजचनपदे । पाणिनाच्छाद्यसयः पश्येतीसत्र  
पेसो । तदपि विललितसग्यरेयेधनोति ६ ईषन्तीति  
तदहिमग्यरसिते । सीत्कारथागवशा दव्यताकल  
केलिकाकविकसदंतोप्रथोताथरम । सासोन्नदपयो



रा. वि.  
गी.

थरोपरिपरिषगी करेगी दशो । हर्षोक्तर्वविमक्तनिः  
सहजतोर्यनोययत्पाननम् ॥ आर्या ॥ अथ सहसा  
शीते सरतस्योते तितोत विन्नो गी । राथा जगादसादर  
मिदमानेदेन गोविंदम् । द ॥ अष्टपदी ॥ २४ ॥ कुरुयु  
नेदन चेदन शिशिरतरेण करेण पयोथरे । मृगमदप  
त्रकमत्रमनो भवमेगल कलश सहोदरे । निजगादसाय



उनेदनेक्रीडतिहृदयानेदने । ॐ । ॥ अलिङ्गलगेज  
नसेजनकेरतिनायकसायकमावने । त्वदथखेव  
नलेवितकजलमञ्जलयप्रियलोचने । निजगादसाय  
उनेदनेक्रीडतिहृदयानेदने २ नयनकरेगातरेगा वि  
लास निरोधकरेकृतिमंडले । मनसिजपाशविलास  
पाशविलासथरेशुभवेशनिवेशयकेडले । निजगाद



शांति  
गी

सायउतेदनेकीइतिहृदयानेदने । ३ अमरचयेरुचिरेर  
चयेतमपरिसुचिरेममसन्नावे । जितकमलेविमले  
परिकर्मयनर्मजनकमलकेसवे । निजगादसायउते  
दनेकीइतिहृदयानेदने ४ मृगामदरसवलितेलालिते  
ऊरुतिलकमलिकरजनिकरे । विहितकलेककले  
कमलाननविप्रमितप्रमसीकरे । निजगादसायउते



दने क्रीडति हृदयानेदने ५ ममरुचिरेचिकरेकुरुमानदसा  
नसजधजवामरे । रतिगलिते ललिते कसमानिशिविदि  
शिखिउकडामरे । निजगादसायउनेदने क्रीडति हृदयाने  
दने ६ सरसचने जचने ममशेवरदरण वारण केद  
रे । मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशयवासय  
सेदरे । निजगादसायउनेदने क्रीडति हृदयानेदने १० ॥



राखे  
गी

श्रीजयदेववचसि शुभदेहदये सदये करुमेउने । हरिच  
रणान्नसरणामृतकृतकलिकलषज्वरखेउने । निज  
गादसायउनेदने क्रीउति हृदयानेदने । ५॥ श्लोक ॥  
रत्नयज्वयोः पत्रं वित्रं करुष कपोलयोर्ध्वद्वयज्वने  
कोचीमेव सजाकवरीभरम् । कलयवल्लयश्रेणीपाणी  
पदे करु नृपराविति निगदितः प्रीतः पीतो वरोपितया



करोत् १ पर्यंकी कृत नागनायकफणा श्रेणी मणीनो  
गणो । संक्रांत प्रति विंव सेवलनया विभुद्वप्रविक्रियो ।  
पादोभोरुहधारिवारिधि सतामत्तोदिदृत्तः शनैः । का  
यवृह मिवाचरन्त्वपविता कृतोहरिः पातवः २ य  
ज्ञोयर्वकलासकौशलमनथानेचयहेसवे । यच्छु  
गारविवेकतत्परचनाकायेषलीलायितम् । तन्सर्वज



रा-ले  
गी

यदेवपेडितकवेः कसैकतातात्तनः सानेदाःपरिशोध  
येनसुथियः श्रीगीतगोविंदतः ३ साधी साधीकविता  
नभवतिभवतः शर्करेकर्करासि द्वादेदद्वेतिकेत्वास  
स्तस्तमसिदीरनीरसस्ते मार्कट केदकाताथरथ  
राणातलेगच्छयच्छन्ति यावद्भावेष्टेगारसारस्वतमिह  
जयदेवस्यविश्ववचोसि ४ श्रीभोजदेवप्रभवस्य। वा।



भ्रमं परिरेभणेन ददासि । तस्य ता मपरे कदापि  
न वे दृशे न कयोमि । देहि सेद रि दर्शने मम मन्त्र  
थेन उन्नोमि । वार्त्ताते जय देव केन हरे रि दे प्रव  
णोत किं उ विल्ल मम द संभव रे हिणी रमणेन  
६ पाणो मा ऊरु हत सायक ममे मा वाप माये प  
य क्रीश तिर्जित विश्व मूर्त्ति जना चातेन किं पौ



रादे-  
गी

रुषे । तस्या एव स्यादृषो मनसि जपैव त्वत्कदा  
सुग । ऐलो जर्जरिते मना यपि मनो नायापि से  
धत्ते १३ हृदि विलाशता हारे नाये भजे यमना  
यकः कुवलय दल श्रीणी केदेव सागरल अतिः  
सलयज रजो नेदे भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन  
हर आत्माने ग कुथा किमथावसि १४ अष्टपदी



दहति मलय समीरे मदन मपतिथाय सुदति ऊस  
मनिकरे विरहि हृदय दलनाय । सखि सीदति नव  
विरहे वन माली । दहति शिशिर मण्डले रमण मनु  
करोति । पतति मदन विशाखे विलपति विकतरो  
ति २ धनति मथप समूहे प्रवण मपि दधाति । म  
नसि वलित विरहे निशि निशि रुज मय याति ३



रादे-  
गी

वसति विपिन विज्ञानेयजति ललित याम । लढ  
ति थराणि शयते वड विपलति तवनाम ४ भणा  
ति कविजयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिरभस  
विभवे हरि रुदयत सकृतेन ५ श्लोक पूर्वयचस ।  
मेनयारति पते रासा दिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेवति  
केज मन्मथ मरातीर्थे प्रतर्माथवः । थायेरुत्ताम



निशे जपन्नपि न वै बालाप मंत्रावली भूयस्तन्कचके  
म तिर्भरपरी रेभा मते वोक्तति १० विकिरति मङ्गः  
यासा न्यशाः प्रये मङ्गरी दत्ते प्रविशति मङ्गः ऊजे ये  
जे ये जन्म ऊर्वद इतामति । रचयति मङ्गः शयाप  
यी ऊले इरी दत्ते मदन कदन क्लान्तः काले प्रिय  
स्तव वर्तते ११ तानिष्परी सखा निजे च तस्मा स्त्रि



शब्दे  
गी

ग्याहणो विभ्रमास्तदक्रोवज मोरभे सव सयथालेई  
गिरो वक्रिमा । साविवाथरमाथरीति विषया सेरो  
पिचेत्मानमेतस्यालय समाधिहेत विरहव्याधि कथे  
वर्तते । साकृतस्मितमा कला कलगलहमिल म  
दासिते । भ्रूवली कमलीक दर्शित भजा मूलार्ह  
दृष्टतने । गोपीनान्निभ्यन्निरीक्ष्य गमिता कोत्त



श्रिरे चित्तयन्त्रे तर्मग्य मनो हरो हरतवः क्लेशत्रवः  
केशवः २ यमना नीरवानोर निकेजे मेदमास्थिते  
ग्राह प्रेमभरोद्धाने मायवे रायिका सावी । वसेते  
वासेती कसम स्वकमारे रवयैवे । भुमेती कोलावे  
वज्र विहित क्लृप्तान शरणे । प्रमेदे केदये ज्वरजनि  
तचित्ता कलतया । वलदाथो राथो सरस मिह मने



श-दे-  
गी-

सहचरी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परि जीत  
न कोमल मलय समीरे । मथुकर निकर करे वित  
को किल कृजित केज ऊदीरे । विहरति हरि विहस  
रस वसेते नृत्यति प्रवति जनेन समे सखि विरहि  
जनम उयेते । उत्सद मदन मनोरथ पथिक बधुज  
न जतित विलापे । अलि कुल सेकुल कसम समू



इतिराजलवजलकलापे ३ मृगमदसौरभरभस  
वशेवद नवदल माल नमाले। पुवजव हृदयवि  
दाशा मनसिज नावरुवि किंशक जाले। मदन  
महीपति कनक देउरुचि केसर ऊससु विकामि  
लित शिली मख पाटल पटल कतसर नरावि  
लासे ४ विगलितलेजित जगदवलोकनरु



यदे-  
गी

एककणकृतसंज्ञे । विरहितिकेतनकेतमात्रा  
कृतिकेतकिदेवप्रतिज्ञे ५ मायविधापरिमल  
ललितेनवमालतियातसंगेयौ । सति मनसा  
मपि मोहनकारणात्तकणकारणावेध ६ स्वर  
दतिमक्तलतापरिरेभगासुकलितफलकि  
तचूते । हेदावनविधिनेपरिस्रपरिगत



यस्य ना जल एते । श्रीजयदेवभाषिते मिदमदस्य  
ति हरि वरणा स्तुति सारे । सरस वसेत समय व  
न वर्णान मनगत मदत विकारे द अष्टपदी ॥  
द्व विदलित मली वलि चंचल गग प्रकटित  
पट वासैर्वीसयत्काननानि । इह हि दहति चेतः  
केतकी गेय वेधः प्रसरद समवाण प्राण वहेथ



रादे  
गी

वारः २१ उन्मीलनमधुगंधलवमधुवाह्यत च  
नोकरक्रीडकोकिलकाकलीकलकलैरुन्मीणी  
काणोज्जराः नीयेते पथिकैः कथं कथमपि ध्याना  
वधानतत्ताण प्राप्ता प्राणा समा समगमरसोलासैरमी  
वासराः २२ उद्यलोकलोकस्तनकनवकाशोक  
लनिका विकाशः कासारो पवनपवनेये व्यथ



यति अपि आम्हेंगी रणीत रमणीयानमकुलप्र  
सूति सुतानो सति शिवविणीये सत्वयति। अष्ट  
पदी॥ निदति चेदन मिड करण मन विदति विद  
मयीरे व्याल निलय मिलनेन गरल मित कलय।  
नि मलय समीरे॥१॥ मायव सा विरहे तवदीनाम  
नसिज विशिवभया दिव भादनया नयिलीना



रादे  
गी

प्रविरत निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि  
शाले । सहृदय मर्म करोति सजल नलिनी दल  
जाले २ कसम विशिख शरत्तल्प मतल्प विला  
स कला कमनीये । व्रत विव नव परिरेभ स्वावा  
य करोति कसम शयनीये ॥३॥ वहति च वा  
लित विलोचन जलधर मानन कमल मदरे । विध



मिव विकट विधेत्तद दन्त दलन गतिना मृत्युधारे  
४ विलिखति रसि करेण मदेन भवेत्तम समशरम्  
ते । प्रणमति मकर मथो विनिधाय करेण शरे न  
वहते ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति मायवतव  
चरणे पतिताहे । त्वयि विमले मयि सपदि स्वधा  
निधिरपि कुरुते तनदाहे ६ ध्यान लयेन प्रः प



श-दे-  
गी-

रि कल्प भवेत्तमनीव उद्योगे । विलपति हसति वि  
षीदति रोदति चंचति संचति तापे ॥ श्रीजयदेव भ  
णित मिद मयिके यदि मनसा नटनीये । हरि विर  
हा कुलवल्लव प्रवति सखी वचने पटनीये द प्रष्ट  
पदी ॥ श्लोक ॥ आवासे विपिना यते प्रिय सखी  
मालापि जालायते ॥ तापोपि असितेन दा



वरह न ज्वाला कलापायते । सापि त्वदिरहेणा ह  
न हरिणी घृणायते साकये । केदोर्पेपियमायते  
विरचयन् शार्दूल विक्रीडिते शुष्पदी ॥ स्तनवि  
ति हितमपि शरमदादेसा मनते कशतव रिवभा  
देशाधिका विरहे तव केशव । शरमम स्यामपिम  
लयजपेके यशानि विषमिव वप्रमि सशेके २ असि



रा-दे-  
गी-

त एव न मनः पम परिणामे । मद न दह न मिव दहति  
सदाहे ३ दिशि दिशि किरति सजल कणा जाल ॥  
नयन नलिन मिव विगलित नाले ४ नयन विष  
य मिव किशलय नल्पे । कलयति विहित झुनाश  
न कल्पे ५ तपजति न पाणि नलेन कपोले । बाल  
शशिन मिव सायमलोले ६ हरिरिति हरि रिति



जपति सकामे । विरह विहित मरणो वतिकामे  
७ श्रीजयदेव भणित मिति गीते । सखयन के  
शव पद मय नीते द अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ सरत्त  
रे देवत वैयस्य सदेग सेगा स्तमात्र साधो । वि  
मक्त वाथो ऊरुषेन राथा मर्षेद वज्रा दपि दारु  
णो सि २५ सागे मोचति सीत्करोति विलपसत्क



रादे-  
गी

स्येतेनाम्यतिथ्यायसद्भुमतिप्रसीलतिपतस्यया  
तिमूर्ध्वेनपिपलावस्यतनज्वरेवरतनर्जीदेक्षकिं  
नेरसात्स्वर्वेयप्रतिमप्रसीदसितनस्यकोमयाह  
स्तकः २६ केदपिज्वरसेज्वरातरतनोराश्रयमस्या  
श्रिदे। चेनश्रेदनवेद्रमन्कमालिनीचिन्ताससेताम्य  
ति। किंतुलोतिरसेनशीतलतरेत्वामेकमेवप्रिये



आयेनी ररुसिस्थिता कयमपि सीणातणो प्राणि  
ति २० नृणा मपि विररुः पुण्णा मेहे नयन निमी  
लितविन्नया नयाते । यसिति कयममौ ररुल  
शाखा विर विरहेणा विलोक्य पुष्पितामो २६ रा  
यामय्य मत्वा यविदमथपरे लोक मीलन्यली-  
नेपत्थो चित्तनीलरत्नमवती भागवतरोतकः ॥



रादे  
गी

सखेद्वजसेदरीजनमनसलोकप्रदोषश्चिरे। केस  
धेसतनधूमकेतरवतनोदेवकीनेदतः२५ अष्टमो  
योजनमशक्तो विरमनरक्तो लतागर्हदृष्टा। तच्चिरि  
नेगोविंदेमनसिजमेदेसखीग्राह३- अंगोवाभरणो  
करोतिचंद्रशःपत्रेपिसेवारिणि। प्राप्तेनाम्यरिशे  
कतेचित्तननेशय्योचिरेथ्यायति। इत्याकल्पवि



कल्प नल्प रचना सेकल्प लीलाशत । व्याशक्तापि  
विनाश्या वरतननेषा निशानेषति ३१ विप्रलप  
लकपालिः स्फोट सीत्कारमंतर्जितत जडिमका  
ऊर्ध्वजले व्याहरेती । सवकि तव विथाया मंदके  
दर्पविता रसजल निथिमग्रा ध्यातलगा मृगादी  
३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यति दिशि दिशि रत्नसि भवेत्ते



शुद्धे  
गी

नदयः मधुरमधूनिपिवन्ते १ नाथ हरिसीदतिशः।  
थावासगच्छे। त्वदभि शरणाग्रभसेन वलेती पतति  
पदाति कियेति चलेती २ विहित विशद विष कि  
शलय बलया। जीवति परमिह नवरति कलया  
३ मङ्गल वलोकित मंडन लीला। मधुरिष रह  
मिति भावनशीला ४ तरित मयैति न कथ



मभिसारे। हरिविति वदति सखी मनवारे ५ स्थि  
ष्यति चंवति जलथर कल्पे। हरि रूपयत्त इति ति  
मिर मनल्य ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा।  
विलपति रोदति वासक सजा ७ श्रीजय देव वकवे  
दिदुमदिने। रसिक जननन वत्ता मपि मदिने द श्रो  
क ॥ किं विष्णुसिद्धस भोगि भवने भो श्रीरभू



रादे-  
गी-

मीरुहे । आतर्यासितदृष्टिगोचरमितः सानेदनेदा  
स्यदम् । राथाया वचने तदधगमावान्नेदनेतिकेगो  
पतो । गोविदस्य जयेति सायमतिथिः प्राशस्त्य वा  
भीमिदः ३३ अत्रानरेव ऊटला ऊलवर्त्मपातासे  
जातपातकश्च ऊटलोक्तनश्रीः । वेशवनातरम  
दीपय देशजाले दिक्सेदरी वदनचेदनविड विं



३४ प्रसरति शशय रविरे विरित विलेवेवमा  
यवे । विभ्रय विरचित विविध विलापेसा परिता  
पंचकाशेचैः ३५ विरह पाण्डु मयारि मावोवजय  
तिरयेनपि वेदनो विभ्रतीवतनोति मनोभवः  
सहृदये हृदये मदन व्यथो ३६ मनो भवानेदनवे  
दनातिल प्रसीदरे दतिणा मेव वामनो ॥ क्षणो



रादे  
गी

जगत् प्राण विधाय मायवे प्रयोमम प्राण ह्यो भवि  
ष्यति ३२ वाथो विधेहि मलयानिलपेचवाण प्राणा  
न गह्वाणान गहस्पनरा प्रयिषे । किंते कृतोत  
भविषि क्षमया तरेयौ । रेगाति सिच मम शाम्यत  
देह दारुः ३५ । अष्टादी । कथित समयेपि हरि  
रह हनययौवने । मम विफल मिद ममल



रूपमपि यौवने १ यामिहैकमिहशरणे सखीज  
नववनवेचिता । यदन्तगमनाय निशिगमनम  
पिशीलिते । तेनममहृदयमिदमसमशरकी ।  
लिते २ मममरणमेववरमतिवितथकेतना ॥  
किमिहविसहामिविरहानलमचेतना ३ मामह  
हविश्रयतिमथमथयामिनी । कापिहरिमनु



श-दे-  
गी-

भवति कृतसकृतकामिनी ४ अरु कलयासिव  
लयादिमणिभूषणे। हरिविरहदहनवहनेनवद  
हूषणे ५ ऊखमसुकमारतनमतनशरलीलया-  
स्यपि हृदिहेतिमामतिविषमशीलया ६ अरु  
मिहनिवसामिनगणितवनवेतसा। स्मरति म  
धुसूदनोमामपिनचेतसा ७ हरिचरणशरण



जयदेव कवि भारती । वसन्त हृदि शुवति रिव कोम  
ल कलावती द । अष्टपदी । श्लोक । ताम प्राप म  
यि स्वये वर परो लीरो दती रोदरे । शंके सेदी काल  
हृद मपि वन्मूढो मृशनी पतिः । उभे पूर्व कथा  
भित्त मनसो वित्ति यव हो चले । राधा यास्तन  
कोर को परि मिलने शो हरिः पातवः । तत्किं काम



रादे  
गी

पिकासिनी मभिस्तः किंवा कलाकेलिभिर्वहोवंध  
भिरन्य कारिणि वनाभ्यर्णी किञ्चुद्राम्यति कोतः ह्ला  
तः मना मना गपि पथि प्रस्थातमे वातमः सेके  
नी कृत मेज वेज ललता ऊंजे पियन्नागतः ४-प्रया  
गतो मायवमेतरेण सखी मिये वीत्य विषादमूको  
विशेक माना रमिते कयापि जनार्दने दृष्टव देतदा



३४१ अष्टपदी । सार समरोचत विरचितवेषा गालि  
न क्रसमदर विललितकेशा । कापि मधुरिषणा  
विल सति श्रवति शयिकशणा । हरिपरिरेभणा व  
लित विकाश । कुचकलशो परि तरलितझरा २  
विचल दलकललिता ननचेद्रा । नदथर पानरभ  
सकततेद्रा ३ चेचल केडल ललितकपोला । सख



श-दे-  
गी-

रित रशत जचन गति लोला ४ दायित विलोकितल  
जित हसिता । वद्ध विथ कजित रनिरस रसिता ५  
विषल पुलक एषुवे पषुभंगा । असित निमीलि  
न विक सदनेगा ६ अमजल कणाभर सभगाशरी  
र । परिपति तोरसि रतिराग थीग ७ श्रीजयदेव  
भणित हरिरसितम् । कलिकलवे जनयत परिश



मिने द अष्टपदी । सोरदा ॥ सखदित मदने रमणी  
वदने छेवन चलितार्थरे । मगमद तिलके लिख  
नि सफलके मगमिव रजनीकरे १ रमने यमनाप  
लिन वने विजय मगारि स्थना । चवचय रुचिरे र  
चयति चिकरे तरलित तरुणानने ऊरुवक ऊस  
मेवला सावमेरति पति मगकानने २ चटयति स



रादे-  
गी

चने ऊच शय गगने रग मरुचि रषिते । मणिम  
रममले नारक पटले नावपद शशि भूषिते ३ जित  
विम शाकले भुड भज शगले करतल नलिनीदले-  
मर्कत वलय मधुकर निचये वितरति हिम शीत  
ले धरति गृह जचने विषल पचने मनसिज कनका  
सने । मणिमय दशने नोरगा हसने विकरति



कृतवासने ५ चरण किमलये कमला निलयेन ।  
खमणि गण पूजिते । वहिरप वरणे यावक भरणे  
जनयति हृदयो जिते ६ रमयति स्वरशेका मणि  
स्वरशे खल हल थर सोदरे । किमफल मवसे चि  
रमिह विरस म्वद सखि विट पोदरे ७ इह सभगा  
ने मथरिष पदसेवके । कलि प्रविहिते नवसत



रादे-  
गी-

इरिते कवित्वपजयदेवके द। अष्टपदी॥ अतिल  
तइल ऊदलय लयनेन। तपतिनसा किसलय  
शयनेन १ सखिया रमिता वनमालिनी। विक  
सित सरसिज ललित सखिन। स्फटतिन सामन  
सिज विशिखिन २ अमृत मधुरतर मृदु वचनेन।  
ज्वलतिन सामलयज पवनेन ३ स्थलजल रुह



रुचिकर चरणेन । ललति नसाहिसकर किरणेन ४  
सजल जलद समदय रुचिरेण । दहति नसाहदि  
विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वचनेन ।  
श्रुसितिनसा परिजन हसितेन ६ सकलभवन ।  
जनवर तरुणेन । वहति न साकज मतिकरुणेन ७  
श्रीजय देव भणित वचनेन । प्रविशत हरि रयि



रा. दो. हृदय मनेन ५ अष्टपदी । श्लोक ॥ नायातः सखि  
गी- निर्दयो यदि शठस्त्वेहति किं ह्यसे ॥ स्वच्छंदं व  
द् वल्लभः सरमते कितवते हर्षणं ॥ यशपाद्य  
प्रिय संगमाय दयितस्याकष्यमाणोगुणे । रुत्कं  
हार्ति भरादिव स्फुट दिदं वेतः स्वयंयास्यति ४२  
निभृत तिर्कुंज गदहं गतया विशिरह सितिलीय



वसन्तं । चकित विलोकित सकल दिशावति रभस वशे  
न हसन्तं । सविहरे केशि मदत सुदारं । रमय मया स  
ह मदत मनोरथ भावितया सविकारं । प्रथम समाग  
म लजितया पट चाट शर्ते रत्नकलं । मृदु मधु रसि  
त भाषितया शिथिली कृत जघन उहलं २ किसल  
य शयन निवे शितया चिर मुरसिममै वशयानं ।



रा हो-  
गी-

कृतपरि रंभण चंवनया परिरभ्य कृताधरपानं ३ अ  
लस निमीलित लोचनया पुलकावले ललितकपोलं  
। प्रम जल शकल कलेवर यावर मदन मदादितिलो  
ले । कोकिल कलरव कजितया जित मन मित्र तंत्र  
विचारं । अथ ऊरुमा ऊल ऊतलया नखलिरिवत ।  
चनस्तनभारम् ५ ॥ चरण रणित मणि ६



नूपुरया परिष्कृतं सूरत वित्ताने । सखरविश्वं खल  
मेखलया सकवग्रहं चैव न दानम् ६ रति सख सम  
यवसाल सया दर मङ्कलित वदन मरोजं । निस्सहनि  
पतित तन लतया मधुसूदन मदित मनोजं ७ श्री  
जयदेव भणित सिद्ध मति शय मधु दिपु निधुवनशी  
ले । सख मत्कंहित राधिकया कथितं वितनोत्तम ।



रा. दो. लीले १८ ॥ अष्टपदी । श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल गोकुला  
गी. वनवशा उद्धृत्य गोवर्द्धने । विभ्रदहलव सुंदरीभि रा  
यिका नंदराचिरे चंचितः । दर्पेणैव तदर्पिताथरतदी  
सिंहर सुद्रोकिता । वाङ्मर्गीयतनो स्तनोत्तमभवतः श्रे  
यांसिकंसद्विषः ४३ अथ कथमपि यामिनी विनीयस्म  
र शरजर्जरितापि सा प्रभाते । अननयवच १



नं वदेते मये प्रणत मपि प्रिय माह साभ्यसूयं ४४  
अष्टपदी ॥ रजनि जनित गुरु जागर राग कषायित  
मलसनिमेषं । वरति नयन मनु राग मिव स्फुटम् ।  
दित रसाभिनिवेशं । याहि माथव याहि केशव माथ  
व केतव वादे । तामनुसर सर सीरुह लोचन यातव  
हरति विषादे । कजल मलिन विलोचन चंचन ।



शब्दो- विरचित नीलमयं दशन वसन मरुणं तव कल  
गी- तनीति तनुरनु रूपं २ वपु रनु हरति तव स्मरमे  
गशव रनु खरत्तनरेवं । मरकत शकल कलित क  
लथोतलियेविव रति जय लेखे ३ वरणा कमल गल  
दलक कसिक सिद्धेनव हृदय मदारं । दर्शयतीवव  
हि मर्दन दुम तव किसलय परिवारं । ४ । दशनपदं



भव दधरगतस्मस जनयति चेतसि विदं । कथयति  
कथ मधुनापि मया सह तव वसुदे तद मेदं ५ वहि  
रिव मलिन तरंतरंतव क्लम मनोपि भविष्यति नूनं ।  
कथ मथ मंचयसे जन मनु गतम स्म शर ज्वरहनं  
६ भ्रमति भवान वला कवलाय वनेषु किमत्र वि ।  
चित्रं प्रथयति पूतनि कैववधू वथ निर्दयबालचरि



रा. दो. श्रीजयदेव भणितरति वंचित त्वंति युवति  
गी. विलापं । शृणुत सदा मधुरं विवृथा विवृथालयतो ।  
पि । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ तवेदं पश्यन्त्याः प्रस  
र दन्तगगनवहिरिव । प्रिया पादालक कुरितमरु  
ण चोति हृदयं । ममाद्य प्रख्यात प्राणय भर  
भंगेण कितवत्वदालोक = श्लोका दपि किम



पि लज्जो जनयति ४५ यस्यापयो धरतटी परिरम्भल  
प्रकाशमीर मुद्रित मरी मधुसूदनस्य । व्यक्तानुराग  
मिव विलसद नंगविद स्वदीवधर मन प्रयत्न प्रिय  
म्बः ४६ अत्रान्तरे मर्यादा शेष वशा मसीमनिः  
प्यामनिस्रर सावी समुखी सुपेत्य सब्रीडमीक्षि  
त सावी वदनं दिनांते सानंद गङ्गदण्डं हरिदि ।



श.दी.  
गी-

सुवाच। परि हरकृता त्वेक शंको त्वया सततं च न  
सर्व जवनया क्रान्ते परानव काशानि विशाति  
विततो दन्त्याथत्यो नकोपि समानतरे प्राणयिनि प  
री रंभारंभे विधेहि विधेयताम् ८ सृग्ये विधेहि म  
यि निर्देय दंत देश दोर्वलि वंथनि विदस्सन पीडना  
नि चंद्रित्वमेव मद संवय पंचवाण चोशल को।



उ दलना दसवः प्रयोत्त ॥ प्राशि सखि तव भाति भंग  
र भयं व जन मोह कराल कोल सर्पी तड दिति भय  
भजनाय मनोत्वद थरसीधु सथैव सिद्धिमंत्रः व्यय  
यति वृथामौने तत्विप्रपंचय पंच मंत्ररुणि मधुरा  
लापे स्तापे विनोदय दृष्टिभिः समुखि विमलवी  
भावतान्ता वदि मंचन मंचमा स्वय मतिशय ।



रा. दो. गी. स्निग्ध सुगन्धे प्रयोगे सुपरिस्थितः । अष्टपदी । वद ।  
सि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हरति दर  
ति मिरमति चोरम् स्फुर दथर सीथवेतव वदन च ।  
दमा रोचयति लोचन चकोरं । प्रियेचारु शीले मं  
चयति मानमतिदानं । सपदि मदनातलो दहति  
मम मानसं देहि सुखकमलमधुपानं । सत्यमेवा



सि यदि सदति मयि कोपिनी देहि त्वर नत्वर शरचा ।  
ते । हृदय भुज बंधनं जनयद विहने येनवा भवति  
सखजाते २ त्वमसि मम भूषणे त्वमसि मम जीवने  
त्वमसि मम जलधि रत्ने । भवतु भवतीह मयि स  
तत मन रोधिने तत्र मम हृदयमति यत्ने ३ नील  
तलि नाभमयि तन्वितवलोचने धारयति कोकन



श.दो. दत्तये । कलस शरवाण भावेन यदि रंजयसि कृ।  
गी. ल मिदमेत दत्तये ४ स्फुरत ऊच ऊंभयोरुपरि  
मणि मंजरी रंजयत तव हृदय देशे । रसत रस  
नापि तवचन जचन मंडले घोषयत मत्तयनिदे  
शे ५ स्थलकमल गंजमे मम हृदय रंजने जजि  
तवित रंग परभागे । भण मस्तु वाणि करवा



रिण चरण द्वयं सरस लसद ललककरागं ६ लसग  
रत्न बिडने मम शिरसि मंडने देहि पदपल्लव मदा  
रं । ज्वलति मयि दारुणो मदन कदना नलो हरत  
तडपाहित विकारं ७ इति चटल चाट पट चारुम  
र वैरणो राधिका मयि बचन जातं । जयति पद्मा  
वती रमणा जयदेव कवि भारती भणित मति शो



श. दो  
गी.

तं । श्लोक ॥ वंधूक कृतिबंधवोय मधुराः स्त्रिय  
मधूक छविः गंडे चंद्रिकासिनीलनलिन श्रीमो  
चने लोचने । नासात्वेति तिल प्रसून पदवी कुं ।  
दाभदंति प्रिये प्रायस्त्वत्सखसेवया विजयते विश्वं  
सप्रप्याययः ५१ दृशीतवमदालसेवदनमिंदुसं ।  
दीपने गतिर्जन मनोदमा विजित रंभ मूरुद्वयं ।



रतिस्तव कलावती रुचिर चित्र लेखे अवा बहोविबु  
थ यौवनं वहसि तन्वि पृथ्वी गता ५२ अथलवं थ  
नर पोगतरंगितानि वाणागणः श्रवण पालि रिति  
स्मरेण । तस्या मनेग जय जंगम देवताया मस्वा  
णि निर्जित जगति किमर्थितानि । ५३ । अवाये ।  
निहता कदात्त विशिखो निर्मातु मर्म व्यथाश्या ।



श. दो. गी. मात्मा ऊटिलः करोतकवरी भारोपि भारोद्यमं । मो  
हंता वदयेच तत्त्वितनते विंवाथुरोगगवान् सहितः  
स्तन मंडल स्तवकथं प्राणैर्मम क्रीडति ५४ मा  
निनी मान विधेसदक्षो जयति सोप्रतं । नृद्वेण  
समृद्धतः श्रीमङ्गोपालकथनिः ५५ तामयमन्ता  
य विन्ता रतिरति रस भिन्ता विषाद सम्य ।



नो । अतर्वितित इरि चरितं कलहात्तरिता मवाच  
रुद्रः सार्वी ५६ स्त्रिग्ये यत्परुषा सियत्त्राणमतिस्त ।  
धासि यद्वागिणि द्वेषस्यासि यदुत्तरे विमवत्तं  
यातासि तस्मिन्प्रिये । तच्युक्तं विपरीतकारिणान्  
व श्रीविर चर्चाविषं शांतं मुक्तपनोहिमे इत वरः  
क्रीडा मुदोयातनाः ५७ ॥ अष्टपदी ॥ इरिरभि ।



ग. दो.  
गी-

सरति वहति मृड पवने किम परमधिक सखिसखि  
भवने १ मायवे माऊरु मानिति मान मये । ताल फ  
ला दपि गुरुमति सरसं । किम विफली कुरुषेऊ  
चकलशं २ कतिन कथित मिद मनु पद सचिरं ।  
मापरि हरि हर मति शय रुचिरं । किमिति विषीद  
सिरो दिशि विकला । वहसति पुवति सभातव वि ।



कला ४ जनयसि मतसि किमिति गुरु विदं । शृणु  
मम वचन मनीहित भेदं ५ हरिरुपयात वदमथ  
रे किमिति करोषि हृदय मति विधुरं ६ मज्जल नलि  
न दल शीतल शयने । हरिमवलोकय सफल  
य नयने ७ श्रीजयदेव भणित मति ललितं । सख्य  
तरसिक जनं हरि चरितं ८ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥



रा. हो. श्रीगणिकाजीके वचन रिपु रिब सावी संवा सोयंस  
गी. ली वहिमानिलों विषमिव सथावशिमर्यस्मिन् नो  
ति मनोगते । हृदय मदये तस्मिन्नेव पुनर्वलते व  
लात् ऊवलय दृशाम्वासः कामो निकाम निरंकुशः  
५८ ॥ गणपति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमा दपिनेहते व  
हतिवपरि तोषं दोषं विमंचति हस्तः । युवति



शु वलन्त्या कसो विहारिणि मोविता वनरपि  
 मतोवासं कामं करोति करोमि किं ५६ प्रीति स्वस्तन  
 तोहरिः कुवल्या पीडेन सार्द्धं राया पीत पयोय  
 रस्मरण कृत्कंभेन संभेदवान् । यत्र स्थिति मील  
 ति क्षणमथ तिप्ते द्विपे तत्क्षणात् कंसस्यात्मभू  
 जितमिति व्यामोह कोला हलः ६- सुरुविमल ।



श-हो  
गी-

नयेन श्रीण यित्वा मृगाक्षी गतवति कृतवेधेकश  
वे ऊँजशाय्या रवित रुचिरभूषां हृष्टिमोषे प्रदोषेस्त  
रति निरवसादां कापि शयोजगाद ६१ सामो द्रव्य  
ति दक्षति प्रियकथां प्रत्यग मालिङ्गते । प्रीतिं यास्य  
तिरस्यते सखि समागत्येति चिन्ताकुलः । सत्त्वापश्य  
ति वेपते पुलकय त्यानंदति स्विद्यति । प्रसन्नं च



ति मूर्च्छति स्थिरतमः पुंजे निजं जेषियः ६२ त्वद्वाम्ये  
तसमं समग्र मधुना तिग्मांश्चरसंगतो । गोविंदस्य  
मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सोदृतं । कोकानां करुण  
स्वनेन सहशी दीर्घा मदभ्यर्त्यता । तत्सग्ये विफलं  
विलंबेन समी रम्याभि सारदाणः ६३ आश्लेषादन  
चंबना दननखो ह्नेवा दन स्वात्तज । प्रोद्धायादन



सू. टी.  
गी.

संभ्रमा दन्तरतावेभादन प्रीतयोः । अन्यार्थं गतयोर्ध  
मान्निलितयोः संभाषणौजीततो । दंपत्योरिह को ।  
न कोन तमसि वीराविमिश्रोतसः ६४ अक्षरानि  
सिपदेजनं प्रवणयो स्तापिह गच्छाली । मूर्द्धि ।  
श्याम सरोज दास कुचयोः कस्तूरि कापत्रक ।  
म ॥ धूर्ता नामभि सार सत्वर हृदो विषड्.नि ।



कंजसखि । धातनील निचील चारु सहस्रं प्रत्यंग ।  
मालिगते ६५ काश्मीर गौर वपुषा मभिसारिकाणा  
मावद्धरेव मभितो रुचिमंजरीभिः । एतन्नमाल द  
ल नील तमंत मिश्रे तत्प्रेमहेम निकषो पलतांत ।  
नोति ६६ अष्टपदी ॥ विरचित चाटु वचन रचनेचर ।  
गौरवित प्रणिपात । संप्रति मंजल वंजलसीमनि ।



रा.टी. केलिशयन मनयातं । मग्ये मधुमयन मनगतम ।  
गी. नसरराधिके । वन जचन स्तनभारभरे दर मत्यरव  
राणाविहारं । सखरितमणि मंजरी मयैहि वियेहिम  
राल विकारं २ शृणु रमणीय तरं तरुणी जन मोह  
न मधुरिपुरावे । कुसुम शरासन शासन वेदितिपि  
क निकरेभजभावं ३ अनिल तरल किसलय निक



रेण करेण लता निऊरेवं । प्रेरण मिव कर भोरुकरे  
ति गति प्रति मंच विलेवं ४ स्फुरित मनेगतरेण व  
शादिव सूचित हुरि परिरंभं । छम्भमनोहरहार वि  
मल जलधार ममंजुच ऊंभं ५ अथिगत माविल  
सावी भिरि दंतव वपुरपि रति राण सज्जं । चंडि रणि  
त रशाना रव हिंरिम मभि सरसमलजं ६ स्मर श



श.टो.  
गी.

व सभग सखिन सखी मवलंखकरेण सलीलं च ।  
ल वलय करिणै रववीथय हरिमपि निजगति  
शीलं ७ श्रीजयदेवभणित मधुरी कृत हार मदा  
सित वामे । हरिविनिहित मतसा मयि तिष्ठत कंठ  
तटी मविरामे ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ सामान् द  
क्षति वक्षति प्रियकथा प्रत्यंग मालिगनै ॥ श्री



तिं यास्यति वंस्यति सारि समा गत्येति चिंता कुलः सत्वा  
म्यप्रयति वेपते पुलकय त्यानंदति स्थिति । प्रत्यङ्ग  
ति मूर्च्छति स्थिरतमः पुंजेति कुंजे प्रियः ६६ अष्टय  
दी ॥ रतिस्त्राव सारे गत मभिस्तारे मदन मनोहरवे  
षे । निजुरु नितं विति गमन विलंबन मन्त्रसरतं हृद  
येष १ थीर समीरे यमनातीरे वसति वनेवनमा ।



रा. हो  
गी.

ली । गोपी पीत पयोधर मर्दन वंचल करसुगशा  
ली । नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुव  
द्म मन्त्रते तन्त्रते तन्त्रसंगतपवन चलित मणिरां २  
पतति पतत्रे विवलित पत्रे शंकित भवदुपयानम्  
रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तवपंथानं ३  
सखरमयीं त्यजमेजीवं रिपुमिव कलिसुलोत्तं ।



वत्स सखि कुजे सति मिर पुंजं शील्य नील निचोले  
४ उरसि मुरारे रुपहित हारे वनश्रव तरल वलाके।  
तरिदिव पीतेरति विपरीते राजसि सुकृतविपाके  
विगलित वसनं परिहृत रशानं च दयज चनं मपिथा  
ने किसलय शयने पंकज नयने निधिमिव हर्षनिथा  
ने ६ हरिरभिमाना वजनिदिधानी मिय मपियाति



रा. हो. विरामं । ऊरु समवचनं सत्वर रचनं पूरयमधुरिषु  
गी. कामं ७ श्रीजयदेव कृत हरिसेवे भणति परमरम  
णीये । प्रसदित हृदयं हरिमपि सदयं नमत सह  
त कमनीयं ८ । अष्टपदी । श्लोक । सभयचकितं वि  
त्यस्येती दृशो निमिर पथि प्रति कृतसद्गः स्थित्वा म  
न्दपदानि वितन्वती कथ मयिरहः प्राप्ता मे गै रने गै त



रंगिभिःसमृद्धिःसुभगःसत्त्वाम्पश्यन्नुपैतकत्वार्य  
तां ७ हाशवली तरल कांचन कांचिदाम मंजीरकं  
कण मणि द्युति दीपितस्य द्वारे निकुंज निलयस्य  
हरिं निरीक्ष्य व्रीशवती मयसांवी निजगादराथां  
दद ॥ अष्टपदी ॥ मंजुतर कुंजतल केलिसदने  
विलस रति रम सहसित वदने १ प्रविश राथे



रा.टो.  
गी.

साथव समीप मिह नव भवद शोकदल शयनसारे  
विलस कच कलश तरलहारे २ कुसुम चयरवि  
न सुविवासगोहे । विलस कुसुम रुजुमारदेहे ३  
चल मलय वन एवन सरभिशीते । विलसरतिव ।  
लित ललित गीते ४ वितत वद्ध बलि नव पलव व  
ने । विलस चिर मलस पीन जघने ५ मधु मृदित



मधुप कुल कलित शर्वे विलस मदन रस सरस भावे  
ई मधुर तर पिक निकरति नद सार्वरे । विलस दश  
न रुचि रुचिर शिखरे ७ विहित पञ्चावती सख  
समाजे । भणति जयदेव कविराजराजे ६ अष्टप ।  
दी ॥ श्लोक ॥ साक्षा नंद पुरंदरा दिदि विषहंदैर  
सदादरा दानधै मुकुटेंदनील मणिभिः संदर्शिते



रा. हो. दीवरं । स्वच्छंदं मकरंदं सुंदरं गल्लक्ष्मंदाकिनीमेडुरं  
गी. श्रीगोविंदं पदारविंदं सुभस्मंकाय वंदामहे ॥  
अहमिह निवसा मियारि राधा मननय महचनेवा  
नयेथाः । इति मथुरिपुण साखीनिपुत्रा स्वयमिद  
मेत्युत्तर्जगादराथां ७- त्वाचितेन चिरं बहं नय  
मति श्रुतोभृशंतायितः । कंदर्पेणच पात ।



सिद्धति स्रथा संवाथ विंवाथरं । अस्यांके तदलंऊ  
रुण मिह भूक्षेय लक्ष्मीलव । कीते दास उवाय से  
वित पदा भोजे कृतः संभ्रमः ७१ सास साध ससा ने  
द गोविंदे लोल लोचना सिंजान मेज मेजीरे प्रवि  
वेश निवेशनं ७२ अति क्रम्या यागं अवण पथ पर्यं  
त गमन प्रवासे नैवात्तणे स्तरल तरतारम्यतिनयोः



रा.दी.  
गी.

। तदानीं राधायाः प्रियतम समा लोक समये । पणः  
त खेदोवु प्रसरयिव हर्षा प्रतिकरः ७३ भर्तृन्यास्त  
ल्यान्तं कृत कपट करादृति विहितः ॥ मित्रेया ।  
ते गेहादहिरवहिताली परिजने । प्रियास्यं पश्यं  
त्याः स्मरशरसमाकृत सभगं । सलजाया लजा  
व्यगमदिवहरे मृगादृशः ७४ ॥ अष्टपदी ॥



गथावदन विलोकन विकसित विविध विकार विभं  
गो । जलनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित तं  
ग तरंगं । हरि मेकर संचिर मभि ललित विलासं  
। सादर्शगुरु हर्ष वशं वद वदन मनंग विकारं ।  
हारममल तरतारमुरसि दधतं परिलंब्यविहरं ।  
स्फुटतर फेन कंदव करंवित मिव यमना जल



रा. टी.  
गी.

शूरं १ श्यामलमृदुल कलेवर मंडल मथिगत गौर  
उक्कलं नीलनलिन मिव पीत पद्म पटल भव व  
ल यित मूलं ३ तरल दृगंवल चलन मनोहर वदन  
जनित रतिरागं । स्फुटकमलोदर विलित खिन्नतपु  
गमिवशरदितरागं ४ वदन कमलपरिशीलनमिलि  
तमिहिरसमकुंडलशोभं । स्मितरुचि कुसुम समु ।



लसिता थर पल्लव कृत रति लोभे ५ प्राशि किरण  
स्वरितो दरजलथर सुंदर सकुसुम केश तिमिरो  
दित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेशे ६  
विपुल पुलक भरदंतरित रति केलि कला भिरथी  
रे । मणि गणकिरण समूह समज्वल भूषण सुभग  
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित विभव दिगणी कृत भू



रा. टी.  
गी.

षण्मासं । प्रणमत्तु इदिविनिधाय हरिं सचिदस कृ  
तो दय सारं । ५ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स  
खीहंते मंदत्रयाभर निर्भर सार पर वशाकृतस्फीत  
स्मितस्त्रापिता यशसः । सरस मलसं दृष्ट्वा हृष्ट्वा मुक्त  
त्वं व पलव प्रसर शयने नितिप्राप्ती मुखाव हरिः प्रि  
याम् । किशलय शयने तले ऊरुकामिनि वरणा ।



कमल विनिवेशः । तवपद पल्लव वैर परा भव मिद  
मन्त्रभवत्त स्रवेशः । क्षण मधुना नारायण मन्त्रगत  
मन्त्रसर राधिके । ॐ- । कर कमलेन करोति चरण  
सद्भा मागमितासि विहर । क्षण मय ऊरु शयनो  
परमासिव त्रपुर मन्त्रगति मूर्ध २ वदन स्रथानिधि  
गलित मन्दत मिव रचय वचन मन्त्रकले । विरह ।



रा. दो. गी. मिवापन यामि पयोधररोयक मरसिडकल ३ प्रिय  
परि रंभणा रभस वलित मिव पुलकित मतिडरवा ।  
पं । मधुरसि ऊच कलशं विनिवेशय शोषय मनसि  
जन्तापे ४ अथर सुथारस सुपनय भामिनि जीवय  
मृत मिवदासं । त्वयिविनिहित मनसं विरहानल  
दग्ध वपुष मवित्तासं ५ शशिसुखि मखरय ।



मणि रशना गुणमन्त्रगुण कंदनिनादम् श्रुति यु।  
गुले पिकरुत ममशमय चिरादव सादं ६ मामति  
विफल रुषा विफली कृत मवलो कितमथनेदं ।  
मीलति लज्जित मिवनयनं तव विरमवि स्तजरति  
विदम् ७ श्रीजयदेव कवेरिद मन्त्र पदनि गदि  
त मथुरिष मोदम् । जनयत रसिक जनेषुमनी



रा. दो  
गी-

रम रति रस भाव विनोदं च अष्टयदी ॥ श्लोक ॥

प्रत्नरू= पुलका करेण निविदा श्लेषैर्निमेषेण च  
क्रीडाकृत विलोकिते यरसथा पाने कथानर्मभिः  
आनंदाभिगमने मत्तम कला युडेपि यस्मिन्नभू  
उद्भूत= सतयोर्वभूव सरता रंभ= प्रियं भावुक=  
७६ मीलहृष्टि मिलत्कपोल पुलकंसीत्कार धाराव



शादव्यक्रा कुलकेलि काकुविक सहता क्रथो ताथरं  
ससोत्काम्य पयोथरं भृशपरिषंगान् कुर्वन्ती दृशोद्  
घोत्कर्षं विमुक्त निः सहतनोर्यन्योथयत्यानने ७७  
दोभ्यां संयमितः पयोथरभरेणापीदितः पारिजैरा  
विहीदशानैः तताथरपुदः श्रेणी तदे नाहतः हस्ते  
तानमितः कवेथर मधुस्यंदेन संमोहितः कान्तः का



श.टो.  
गी-

मपि तस्मिन् मायत दहो कामस्य वामागतिः ७८ वा  
मोके रतिकेलि संकुसराणा रंभातया साहस प्राये  
कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभियत्संभ्रमांतिस्यंदा  
जघनस्थली शिथिलितां दीर्घलि रुत्कंपितं वक्षो ।  
त्मीलितं मत्तियोरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ७९  
तस्याः पादलपाणिज्जांकितसरो निद्राकषाये हृषी



मनिर्दुते थरशोणिमा विललिता स्वस्तस्वजोमूर्धजाः  
कोचीदामदरमथावलमिति प्रातर्निवातेहृशौरेभिः  
कामशरैस्तदद्भुतमभूत्यसर्जनः कीलितं ६- अथ  
कांतंरति प्रातमपि मंडनंवात्तयानिजगादनिगवा  
थाराथास्वाथीन भर्तृका ६। इतिमनसा निगदंतंस्तु  
रतांते सानितंताविवन्नीगीगथा जगाद सादर सिदमा



रा.हो. नंदेन गोविंदं परं अष्टपदी । ऊरु यउनेदन चंदन  
गी. शिशिर तरेण करेण पयोधरे । मृग मद पत्र कमत्र  
सनो भव मंगल कलश सहोदरे । निजगाद सायउ  
नेदने क्रीडति हृदयानंदने । दधर चुंबन लेखितक  
जल मुज्वलय शिखलोचने अति कुल गंजत मंजनकं  
रतिनायक मोचने । नयन ऊरंग तरंग विका मिति



यसकरे प्रतिमंडले । मनसिज पाश विलासकरे  
भवेष्ट निवेशय ऊंडले ३ भ्रमर चयंरचयंतमपरिक  
चिरं सचिरं ममसन्मुखे । जितकमले विमले परि  
कल्पय नर्म जनकमल कंसखे ४ मृगामद रसललि  
ते ललिते कुरुतिलकमलिकरजनीकरे । विहितक  
लंक कले कमलानन विप्रमित प्रमशीकरे ५



रा. दो.  
गी.

सम रुचिरे विकारे कुरु मानद मानस जयज चामरे  
रति गलिते ललिते कसुमा निशि विदि शिविन्दक  
हामरे ६ सर सचने जचने समशोवर दारण कुंदरे ।  
मणिरशना वसना भरणानि शुभाशय वासय से  
दरे ७ श्रीजयदेव वचसि जयदे सदयं हृदयं कुरु मंद  
ने हरिचरणस्मरण मृतकृत कलिकलषज्वरविन्दने ८



श्रीक । रचय ऊचयोः पत्रं वित्रं ऊरुष्यकपीलयोर्वट  
य जचने कांची मंच सजा कवरीभरं । कलयवल्लय  
श्रेणी पाणी पदे ऊरु नूपुरा विति निगदितः प्रीतः  
पीतांबरपितयाकरोत् पथ प्रातनीलनिचोलमच्यु  
तमुरः संवीत पीतांबरकं राधायाश्चकितं विलोक्य  
हसिति स्वेवं साखी मंडले । व्रीडाचंचलमंचलं नयत्



श.टो.  
गी.

योराथाय राथानने स्वेरं स्मेरं सखां वुजोस्त नगदा नं  
दाय नंदात्मजः ८५ पर्येकी कृतनाग नायकफ  
णा श्रेणी मणीनांगणे संक्रांत प्रति विंव संवलन  
या विश्रदिभ प्रक्रिया । पादांभोरुह थारि वारिथि  
सुता मन्त्रादिदत्तः शतैः । कायव्यह मिवाचरं न  
पविती भूतोद्गरिः पातवः ८६ तिर्यक्कंद विलो



लमीलितरलोतं सस्यवशोद्धर । जीतिस्थानकृताव  
थान ललना ललेणा संललिताः प्रेमाकंदलिताः  
समग्य मधुरेशया मविंदोस्तथा । सारेवोमधुसूदन  
स्य ददत लेमं कटाक्षोर्मयः ६७ ॥ अष्टपदी ॥  
संचर दयर सथा मधुरधनि मखरित मीहनवशे -  
वलित दगंचल वंचल मीलिकपोल विलोत्तवसते - १



रा.टो.  
गी-

रासे झरि मिह विहित विलासं । स्मरति मनो मम कृत  
परिहासं चंद्रकचाक मयूर शिखंडक मंडल वलयि  
तकेशं । प्रचर सुरंदर यनुरनुरंजित मेडर मुदित सु  
वेषं २ गोप कंदव नितेव वती मख चंवत लेवित  
लोभं । वंधुजीव मधुराथर पलव मल सितस्मित  
शोभं ३ विपुल पुलक भुजपलव वलयि ।



न बलव युवति सहस्रं । करचरणोरसि मणि गण भूष  
ण किरण विभिन्नत मिस्रं ४ जलट पटल चलदिंडु  
विनिंदक चंदन विंडललाटं । पीन पयो थरपरि सर  
मर्दन निर्दय हृदय कषाटं ५ मणि मय मकर  
मनोहर कुंड मंडित गंड मुदारं । पीत वसन मनरा  
त मनि मनुज सुरा सर वर परिवारम् ६ विशद



रा.टी.  
गी.

कंदेव तले मिलिते कलि कलष भयं शमयंतं । माम  
पि किमपि तरेग दनेग दशा मनसा रमयंतं ७ श्री  
जयदेव भणित मति सुंदर मोहन मधुरिपुं हृये ।  
हरि चरण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवता मन रु  
पम् ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ हस्त सस्त विलास वंशम ।  
तज्ज भूवल्लि मदलवी हंदोत्ता ॥ ॥



रि दृगंत वीक्षितं मति स्वेदार्द्रा गंडस्थले । मामुद्गीत्य  
विलज्जितस्मित स्या मग्याननं कानने । गोविंद  
व्रज संदरी गण हनंयश्या हृष्यामिच दद श्रंतमोह  
न मौलि चूर्णन चलत्संदार विसंसनः स्रव्याक ।  
षण हृष्टि हर्षणामहा मंत्रे ऊरंगीहशां । हृष्यदा  
नव हयमान दिविष उर्वीरुः त्रिपदास ॥



रा. टी.  
गी.

धंसः कंसरिपो व्यपो हय तवो श्रेयांसि वंशीरवः ८५  
यज्ञायर्व कलासु कौशल मन ध्यानं च यदेतत् यत्  
शृंगार विवेक तत् सपियत्कावेषु लीलायितं तत्  
व जयदेव पंडित कवेः कल्लोकतानात्मनः । साने  
दाः परिशोथयंत मयि यः श्रीगीत गोविंदतः ४-  
साधी साधीक चिन्ता भवति भवतः शर्करैक ।



कंरा सिद्धास्ते द्रव्यंतिकेत्वा समस्तं स्तुत मसि क्षीर नी  
रं रसस्ते । माकंदं हृद कोता थर परिणितलं गच्छ  
यच्छंति यावद्भावं मंगार सारस्वत मय जय देवस्य  
विष्णुवचासि ॥ श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी  
स्तुत श्रीजय देवस्य । परा शरादि प्रिय वर्ग कंदे  
श्रीगीत गोविंद कवि त्वमस्तु । जय श्रीवित्त्यसेमहि



रा.टो.  
गी.

त उव मंदार ऊसमैः स्वयं सिंहदेवा दिपिरा मदा  
सदित उव । भुजापीड क्रीडाहत ऊवलया पीडक  
रिणाः । प्रकीर्ण स्तुतिं नृजयति भुजदंशे मरुजि  
तः १३ ॥ इति राग देव शास्त्रस्य गीत गोविंद प  
रिच्छेदः समाप्तम् ॥



कारण वेधौ । १५ । स्फुरदति मुक्तलता परिरे  
भण मुकलित पुलकित हृते । हृदावन  
विपिने परिसर परिगत यमुना जल हृते ।  
श्री जय देव भणित मिद मुदयति हरि चर  
ण स्फुरति सारे । सरस वसेत समय वर्णन  
मनुगत मदन विकारे । १६ । दर विदलित



गी मली वहि वेचनराग प्रकटित पटवारै ची  
गो सयन्काननानि । इहहि दहति चेतः केतकी  
गंधवेधुः । प्रसर दसम वाण प्राण वज्रथवा  
हः । १॥ उन्मीलनमथ गंधलव्य मथय व्याध  
तच्छतोऊर । कीउन्कोकिल काकली कलक  
लै रुझीण कर्ण जराः । नीयेते पथिकैः क



शेकश मपि ध्याना वधान क्षण । प्राप्ता प्रा  
ण समा समा गम रसो ह्यसौ रमी वासराः ।  
२२ । उरा लोक स्तोत्र स्तव कन वकाशोक  
लतिका । विकाशः का सारो पवन पवने  
नोये व्यथयति । अपि आम्बुदेगी रणित रम  
णीयान मकुल । प्रसूति श्रुतानो सखि



मी शिवविणीये सखयति । ३३ । राग ललित ।  
गो ताल । निंदति चंदन मिड करण मनुविद  
ति विद मयीरे । बाल निलय मिलनेन ग  
रल मिव कलयति मलय समीरे । ॥ माथ  
व सा विरहे तव दीना मनसिज विशिखम  
या दिव भावनया लयिलीना । ५० । अवि



रत्ननि पतित मदन शरादिव भवदव नाय  
विशाले । स्वरुदय मर्मणि वर्म करोति स  
जल नलिनी दलजाले । १ । ऊसम विशि  
ख शरतल्य मनल्य विलास कलाकमनी  
ये । व्रत मिव तव परि रेभ स्वावाय करोति  
ऊसम शमनीये । ३ । वहतिव गलित विलो



गी० चन जलथर मानन कमल सुदारं । विधु मिव  
गो० विकट विधुत्तद दंत दलन गालिमा मृतधारं ।  
५। विलिखित रदसि करंगम देन भवेतम  
सम शरभूतं । प्रणमति मकर मद्यो विनि  
थाय करेच शारे नव हूतं । ५ । प्रति पद  
मिद मयि निग दति माथव तव चरणे

20 20



यतिताहे । त्वयि विमुक्ते मयि स यदि सथा  
निधि रयि ऊरुते तनुदाहम् । ६ । ध्यान लये  
नश्वरः परिकल्प्य भवेत मतीव उद्योगे वि  
लयति हसति विषीदति चेचति मुचति  
ताये । ७ । श्री जयदेव भणित मिद मयि  
के यदि मनसा नदनीये । हवि विरहा ऊ



गी ल वल्लव युवति सखीवचने पटनीये । ८ ।  
गो आवासो विपिनायते प्रिय सखी मालापि  
जालायते । नापोपि ससितेन दावदहन  
ज्वाला कलापायते । सापित्तद्विरहे  
ए हंत हरिणी रूपायते हाकथे ।  
कंदर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूल



विक्रीडितो । १४ । रागललित । ताल ।  
स्तन विनि हित मयि हार मदारं सा मनुते  
कृश तनु रिव भारं राधिका विरहे तव के  
शवः ५ । शर सम हृण मयि मल यज ये  
के पश्यन्ति विष मिव वपुषि मशंकम । २ ।  
ससित पवन मनुयम परिणहं । मदन दह



गी न मिव दहति सदाहम् । ३ । दिशि दिशि कि  
गो रति सजल काण जालम् । नयन नलिन  
मिव विगलितनाले । ४ नयन विषय  
मपि किशलयतल्यम् । कलयति वि  
हित इताशान कल्ये । ५ । त्यजति  
न पाणि तलेन कपोले । बाल



शिशन मिव साय मलोले।६। हरि रिति ह  
रिरिति जयति सकामम्। विरह विहित म  
रणे वनिकामम्।७। श्री जय देव भणित  
मिति गीतम्। सख यत्त केशव यद मुप  
नीतम्।८। सखा त्वा देवत वैद्य ह्य त्वदे  
ग सेगा मृत मात्र साध्याम् विमुक्त वा



गी योऊरुषेन राधा सुपेन्द्रवज्रा दपि दारु  
गो णोसि । २५ । सादोमो चति सीत्करो  
विलय सत्कम्यते ताम्यति । ध्यायत्यद्  
भ्रमति प्रसीलति पत स्याति मूढत  
पि । पतावन्य तनुज्वरे वरतनु जीवेन  
किन्नेवसान । स्वैय प्रतिम प्रसीदसि



ततस्तप्तो मया हस्तकः । १६ । कंदर्प ज  
र संजरा तरतनो राक्षर्य मयाश्चिरम् । चेत  
श्चंदन वेदमः कमलिनी चिन्तास सेनाम्प  
ति । किन्तु क्षोति रसेन शीतलतरं तामेक  
मेव प्रियम् । ध्यायेत्ती रहसिस्थिता कथं म  
पि क्षीणा क्षणं प्राणिति । १७ । क्षणम्



मी पि विरहः पुमानसेहे नयन निर्मीलित एव  
गो नया नयाते । अस्मिन् कथमसौ रसाल शा  
लो विरविहरेण विलोक्य पुष्पितामो ॥२८॥  
रथा सुगम सुखार विद मथय सैलोक्य मौल  
स्थली । नेपथ्यो चित नीर रत्न मवनी  
भारा वनारोत्तकः । स्वच्छंद व्रजसे



दरी जन मन स्लोक प्रदोषस्त्रिरम् । कंस  
धंसन धूमकेतु खत त्वां देवकी नंदनः  
॥ २५ ॥ अथ तो गंत मशक्तो चिर मनु रक्तो  
लता गृहे दृष्टा तच्चरिते गोविंदे मनसिज  
मंदे सखीशाह । ३० । अंगोष्ठा भरणे करोति  
वञ्छाः यत्रेपि संचारिणि । आसंताम्यविशे



गी कते वितनुते शय्यो विरं ध्यायति । इत्या क  
गो ह्य विकल्प तल्प रचना संकल्प लीलाशत ।  
व्याशक्तापि विना तया वर तनु नैषा निशा  
ने ष्यति । ३॥ विपुल पुल कपालिः स्फीत  
सीत कार मेतर्जनि तज्जिडिमका कर्वाक  
ले व्याहरंती । तवकि तव विथायामंद कंद



पंचिन्ता । रस जल निधि मया ध्यान लया  
मगाक्षी । ३३ । रागा ललित । ताल । पश्य  
नि दिशि दिशि रहसि भवेत्तम त्वदथर म  
थरमधुनि पिवेत्तम । ॥ नाथ हरे स्तीदति  
राया वासगृहे । क्र० । त्वदभि शरण रभसे  
न वलेत्ती । पतति पदानि कियेति चलेत्ती



गी २। विद्वित्त विशाद विष किश लय वलया ।  
गो जीवति पर मिह नव रति कलया । १। मुञ्ज  
रव लोकित मेरुन लीला । मथुरिष रहमि  
ति भन्वन शीला । ४। न्वरित मुपैति न कथ  
मभि सारे । हरि रिति वदति सखी मनुवारं ।  
५। स्निष्यति चेवति जलथर कल्पे । हरि रूप



गत इति तिसिर मनस्ये । ६ । भवति विलेवि  
नि विगलित लज्जा । विलपति रोदति वास  
क सज्जा । ७ । श्री जयदेव कवेरिद मुदिने ।  
रसिक जननेतृ तामपि मुदितम् । ८ । किं  
विश्राम्यसि क्लृप्तभोगि भवने भोरीर भूमी  
रुद्रे । आनर्यासिन दृष्टि गोचरमितः सानन्द



गी नंदस्यदम् । राधाया वचनस्तदयग मुखा मे  
गो द्योति के गोपतो । गोविंदस्य जयंति सायम  
तिथिः प्राशस्त्य गर्भा गिरः । ३ । अत्रोतरे च  
कलदा कुल वर्त्म पात संजात पातक श्व स्र  
दलो वन श्रीः । हृदयवनो तर मदीपय दे  
सुजाते दिक् सुंदरी वदन चंदन विंड



रिङः । ३५ । प्रसरति शशथर विवे विदित  
विलेवेच माथवे विथरा विरचित विविथ  
विलापेसा परितापम् चकारोच्चैः । ३५ ।  
विरह षोड मुखावि मुखां वृज युति रयेति  
रये नपि वेदनाम् । विथरतीव तनोति म  
नोः भवः सहृदये हृदये मदन व्यथाम् । ३६



गी मनो भवा नंदन चंदनानि प्रसीदते दक्षिण  
गी मुच वाताम। क्षणे जगत् प्राण विधाय मा  
यवे सुरो मम प्राण हरो भविष्यसि। ३०। वा  
यो वियेहि मलया निल पेच वाण प्राणान्  
गृह्णाणन गृह्ण सुनवाश्रयिष्ये। किंते कृतो  
त भगिनि क्षमया तरेगै रंगानि सिंच मम



शाम्पत्त देह दाहः । १८ । राग ललित । ताल  
। कथित समयेपि हरि रहन ययौ व  
ने । मम विफल मिद ममल रूप मयि यौ  
वने ॥ यामि देह मिह शरणं मावी जन  
वचन वंचिता । ५० । यदनु गमनाय नि  
शि गमन मपि शीलिते । तेन मम हृदय



गी मिद मसम शर कीलिते । २ । मस मरण  
गो मेव वरमति वितथ केतना । कि मिह विस  
हामि विरहानल मचेतना । ३ । मा मरुह  
विथ रयति मथुर मथ यामिनी । कापि हरि  
मनु भवति कृत सुकृत कामिनी । ४ । अह  
ह कलयामि बलयादि मणि भूषणे । हरि



विरह दहन वहनेन बद्धवर्णो । ५ । कसम  
सकमार तनु मत्तनु शर लीलया । स्वग  
पि हृदि हेतिमा मति विषम शीलया । ६ ।  
अह मिह निवसामि न गणित वनवेतसा ।  
स्मरति मथसूदनोमा मपिन चेतसा । ७ ।  
हरि चरण शरण जय देव कवि भारती ।



गी वसन्त हृदि युवति रिव कोमल कलावती ।  
गो ८। त्वाम प्राप्य मयि स्वयंवर परे ह्रीरो दती  
रोदरे । शोके सन्दरि काल कूट मणिवन् मूढो  
मशानी पतिः । शय्ये पृथ्वे कथाभि रन्य मन  
सो विद्विष्य वल्गो चले । राधाया स्तन को  
रको परि मिल त्रेत्रो हरि पात्रवः । ३५ ।



तत्र किं कामपि कामिनी मभिसूतः किं  
वाकला केलिभिः। बन्धो बन्धुभिरेव का रि  
णिवना भर्णे किमुद् आयति । कोतः क्को  
त मना मना गपि पशि प्रस्थानमे वाक्षमः ।  
सेकेती कृत मेज्ज वेज्जललता ऊजेपि य  
त्रागतः । ४० । अथा गतास्माथव मेतरेण



मी सखी मिये वीह्य विषाद मूको । विशंक मा  
गो ना रमिते कयापि जनार्दन दृष्ट वदे तदाह  
। ४ ।। राग ललित । ताल । स्वर सम रोचि  
त विरचित वेशा गलित कसम दर विल  
लित केशा ।। कापि मथरिषुणा विलसति  
सुवति रथिक गुणा । ५ ।। हरि परि रंभणा



वलित विकारा ऊच कलशो परि तरलि  
त हारा । २ । विचल दलक ललिता ननचे  
द्र । तदथर पान रभस कृत तेद्र । ३ । चे  
चल केडल ललित कपोला । मुखरित  
रशान जचन गति लोला । ४ दयति विलो  
कित लज्जित हसिता । बद्धविथ कूजित



गी रति रस रसिता । ५ । विपुल पुलक पृथुवे  
गो पञ्चभेगा । सस्मित निमीलित विकसदने  
गो । ६ । समजल कण भर सभग शरीरा ।  
परि पति तोरसि रति राग थीरा । ७ । श्री  
जय देव भणित हवि रसितम् । कलिक  
लषे जनयन् परिशमितम् । ८ । राग ।



ललित । ताल । समुदित मदने रमणी  
वदने चेंवन चलित्ता थरे । मृग मद तिलकें  
ल्लिखति सप्रलकें मृग मिवरजनी करे ॥  
रमते यमुना गुलिनवने विजय मुरारि  
रथना । ५० । चनचय रुचिरे रचयति चिक्क  
रे तरलित तरुणानने । कुरुवक कुरुमे



गी चापला सखमे रति यतिमृग कानने । १ । च  
गो टयति सखने कुच युग गगने मृगमद रुचि  
रूषिते । मणिमर ममलम तारक पटलम  
नाखपद शिशभूषिते । ३ । जित विस शाकले  
मृदुभुज युगले करतल नलिनी दले । मर  
कत बलये मथुक र निचये वितरति हिम



शीतले । ४ । रति गृह जचने विपुला पचने  
मनसिज कनकासने । मणिमय रशने तोर  
ए हसने विकरति कृतवासने । ५ । चरण  
विसलये कमला निलये नावमणि गाण  
मजिते । वहिरप वरणे यावक भरणे जन  
यति हृदियोजिते । ६ । रमयति सभशे का



गी मयि सहशे खल हलथर सोदरे । किमफल  
गे वमसेचिर मिह विरसे वद सखि विटपो दरे  
। १० । इहरस भणाने कृतहरि गुणाने मधुरिष  
पदसेवके । कलिषुग चरिते नव सत उरि  
तम् कविन्य जय देवके । १८ । राग ललित ।  
ताल । अनिल तरल कुवलय



नयनेन । तपतिनसा किसलय शयनेन ।  
॥ सखिया रमिता वनमालिना । ५० । वि  
कसित सरसि जल लित सुखेन । स्फटति  
न सा मनसिज विशिखेन । ५१ । अमृत मथुर  
तरमु वचनेन ज्वलित नसा मलयज पव  
नेन । ५२ । स्थल जल रुद्र रुचिकर चरणेन ।



मी लहति नसा हिमकर किरणोन । ४ । सजल  
गो जलद समुदय रुचिरेण । दहतिनसा ह  
दि विरह भरेण । ५ । कनक निकष रुचि  
शुचि वसनेन । ससितिन सा परिजन ह  
सितेन । ६ । सकल भुवन जनवर तरुणो  
न । वहतिन सारुजमतिकरुणोन ॥ श्रीजयदेव



भणित वचनेन । प्रविशत हवि रपि हृदय  
मनेन । ८ । १२ । नायातः सखि निर्दयो यदि  
शट स्तनूति किं हयसे । स्वच्छेद स्वद्वल  
भः सरमने किं तत्रते हषणो । पश्याय पि  
य संगमाय दयित स्या कृष्ण माने गुणौ रु  
क्तेदार्ति भय दिव स्फुट दिदे चेत्तः स्वये या



गो  
गो  
स्यति । ४१ । राग ललित । ताल । निभृत  
निकुंज गृहे गतया निशि रहसि निलीय व  
सेते । चकित विलोकित सकल दिशारति  
रभसवशेन हसेते । ॥ सखि हे केशि मदन मु  
दारे । रमय मया सह मदन मनोरथ भावितया  
सविकारे । ५० । प्रथम समागम लज्जितया



पटु चाटु शनै रनु कृत्ते । मृदु मधुरस्मित  
भाषितया शिथिली कृत जवन उकृत्ते । १  
किसलय शयन निवेशितया चिरमुरसि  
ममै वशयाने । कृतपरिरेभणा चैवनया  
परिरभ्य कृताथरपाने । ३ । अलस निमीलि  
त लोचनया पुलकावलि ललित कपोले ।



गी  
गो  
अमजल शकल कलेवर यावर मदन मदा  
दिति लोलें। कोकिल कलरव कूजितया  
जित मनसिज तेव विचारें। स्रष्टा कसमा  
कल केतलया नरव लिखित चनस्तन  
भारे। ५। चरत रणित मणिनू पुरया परि  
हरित हरत वित्ताने। सुखर विश्वेवल मे



मेखलया सकच ग्रह चेंवन दाने । ९ । रति  
सख समय रसाल सया दर मुकलित वद  
न सरोजे । निस्तह निपतित तनुलतया  
मथसूदन मुदित मनोजे । १० । श्री जय दे  
व भणित मिदमति शय मथ विप्र निधुव  
न शीलें । सख मुत्कंदित राधिकया कथि



मी न वित्तनोत्त सलीले । ८ । दृष्टि व्याकुल गोक  
गो ला वनवशा उद्धृत्य गोवर्द्धने । विश्वदलव से  
दरीभि रथिका नेदाचिरं च वित्तः । द्यौर्गोव  
नदर्पिता यरतटी सिंहर मुद्रांकिनो । बाह्वर्गो  
पतनो स्तनोत्त भवतः श्रेयोसिकं सहि  
षः ॥ ५३ ॥ अथ कथमपि यामिनी



विनीयस्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते ।  
अननय वचनम् देत मये प्रणत मपि वि  
य माह साभ्यसूये । ५५ । राग ललित ।  
ताल । रजनि जनित गुरु जागर राग  
कषायित मल सनिमेषे । वहति नयन  
मनु राग मिवस्फट मुदित रसाभि निवे



गी शो ॥१॥ याहि माथव याहि केशव मावदकै  
गी तव वादेता मनु सर सरसीरुह लोचन या  
तवहरति विषादम ॥ अ० ॥ कज्जल मलिन  
विलोचन चुंबन विरचित नीलिम  
रूपे ॥ दशन वसन मरुणें तव ह  
स तनोति तनो रतु रूपे ॥ २ ॥



वसु रत्न हरति तव स्मर संगार त्वरन त्वरत्  
तरेवे । मरकत शकल कलितलि पेरिव  
रतिजय लेखे । ३ । चरण कमल गलदल  
क्त क सिक्त मिदेतव हृदय मुदारे । दर्शय  
तीव वहि मेदन डुम नव किसलय परि  
वारे । ४ । दशान पदेभ दथर गत स्मम



गी जनयति चेत्तस्मिन्निदं । कथयति कथ म  
गे यु नापि मया सह तव वपुरेत दमेदे । ५ व  
हिरिवमालिन तरेतव ह्यस मनोपि भवि  
ष्यति नूनम् । कथ मथ वेचयसे जनु मनु  
गतम समशरज चर हनम् । ६ । अमति  
भवानवला कवलाय वनेषु किमत्र



विविधे । प्रणयति शून्यनिर्के ववधवथ निर्द  
य बाल चरित्रे । १० । श्री नय देव भणितरति  
वेचित खेडित युवति विलापे । शृणु सदा  
मथरे विबुधा विबुधालय तोषि डरापे । ११ ।  
१५ । तवेदे पश्येत्याः प्रसर दनुवागम्बहि रि  
व प्रियापादालक चुरित मरुण योति हृद



गी यं ममाद्य प्रख्यात प्राणय भर भंगेन कित  
गी व त्वदा लोकः शोका दपि किमपि लज्जो  
जनयति । ४५ । पश्चापयो यर तटी परिवेभ  
लय काश्मीर मुद्रित सुरोमथ हृदनस्य ।  
व्यक्तावराग मिव विलद नेग विद स्वेदोव  
पूर मन्वपूर यत्त प्रियेवः । ४६ । अत्रोत्तरे मरु



एष शेषवशा ममी मनिः श्याम निस्सह अंती  
मुपेत्य सञ्जीउ मीक्षित सखी वदनं दिनोते सा  
नेद गङ्गद पदे हरि विस्रवाच ५० परि हरकृता  
तेके शोका न्वया सततेचन । स्तनजवनया का  
ने स्वान्ते परा नवका शिनि । विशति वितने  
रन्यो यन्यो नकोपि ममोत्तरं । प्राणयिनि परीरे



गी भारंभे विधेहि विधेयताम् । ४८ । सुग्ये विधेहिम  
गो यि निर्दय दन्त देश दोर्वलि बंध निविउस्तन पीउ  
नानि । चेडित्त मेव मुदमेचय पंचवाण चेडलको  
उदलनादसवः प्रयोत्त । ४९ । व्यथयति वृथा  
मोनेतलि प्रचेचय पंचमे । तरुणिमथरा लापैस्ता  
पे विनोदय दृष्टिभिः । सुसुवि विमुक्ती भावताव



दिमुंचन मुंचमां । सय मतिशाय स्त्रिय मुग्गे  
प्रियोय मुपस्थितः । ५० । राग ललित । नाल  
। वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी  
हरति दहति मिर मति चोरे । स्फुर दधर सीधवे  
तव वदन चेदमा रोचयति लोचन वकोरे । प्रि  
येचारुशीले मुंचमपि मानमनिदाने । मयदि



गी मदनानलोदहति मम मानसेदेहि सुखकमलमधु  
गी णाने श्री सत्यमेवासि यदिसुदति मयि कोपिनीदेहि  
त्वरनयनशरचाते । चटयभुज बंधने जनयद्विभवे  
येनवा भवति सुखजाते २ तमसि मम भूषणे तम  
सिममजीवने तमसि ममभव जलयिरतने भ  
वतभवतीह मयि सतत मनुरोपिनी तत्र



मम हृदय मति यत्ने । १ । नीलनलि नाथ मपि त  
नितव लोचने धारयति कोक नद रूपे । ऊसम  
शरवाण भावेन यदि रेजयसि क्लृप्त मिदमेत  
दनु रूपे । ४ । स्फुरत् ऊच ऊंभयो रूपि मणि मेज  
री रेजयत् तव हृदय देशे । रसत् रसनापि तव  
चनजचन मेउले घोषयत् मन्मथ निदेशे ५ सल



गी  
गो

कमल रंजन मम हृदय रंजनं जनित रतिरंग प  
रभागे । भाग मरणा वाणि कर वाणि चरण द्वये  
सरसलदस ललक करोगे । ५ । सरगवल विरनेम  
मशिरसि मंरने देहि पद पल्लव सुदार । जलिति  
मयि दारुणे मदन कदना नलोहरत तउपाहि  
तविकार । ७ । इति चटुल चाटु चारु सुरवेरिणे



रायिका मयि वचन जाने । जयति पद्मावती र  
मणा जय देव कवि भारती भणित मति शाने ।  
८ १९ । बंधक युति बांधवोय मधुरः स्निग्धा मधु  
कच्छविः । गोरे चेरिच कास्ति नील नलिन श्री  
मोचने लोचने । नासान्वेति तिल प्रसून पदवी  
ऊदाभ देति प्रिये । शायस्तनु ख सेवया विजय



गी ते विसेसपुष्पा युयः ५। दृष्टौ तव मदात्ममेव दन  
गो मिन्दसेदीयने। गतिर्जन मनोरमा विजित रंभमूरु  
दये। रतिस्तव कलावती रुचिर चित्रलेखि क्रवा।  
वहो विवथयो वने वहसि तन्नि पृथ्वीगता ५। युय  
ह्वं यत्र रपो गतं गितानि वाणागुणाः श्रवणाया  
लिरिति स्मरेण तस्यामने गजयज्ञे गमदेवताया म  
हार्ण निजित



जगति किमपि नानि । ५३ । भूवाये निहतः कदा  
न विशितो निर्मात मर्म वयो । श्यामात्मा ऊ  
दितः करोत कवरी भारोपि भारोद्यमे । मोहेता  
वदयेच तन्नि तनुता त्रिवाथरो रागवान् । सह  
तः स्तनमेउलस्तव कथे प्राणै मर्म क्रीडति ५४  
मानिनी मानविधेस दत्तो जयति सोयने मउ



गी वेणु समुद्रतः श्रीमद्भोपालकधनिः ५५ ता  
गी मथमन्मथ विन्नो रतिरसभिन्नो विषादसम्पन्नो ।  
अनुचिन्तित हरिचरितो कलहान्नरिता सुवाच  
रहःसांती ५६ स्निग्धे यत्पुरुषासि यत्पणामति स्त  
थासियद्वा गिरिणि । द्वेषस्यासि यदुन्मुवि विमुक्त  
तोयानासि तस्मिन्प्रिये । तद्युक्तं विपरीतकारिणि



तव श्री त्रिउ चर्चा विषे शीतोश्च स्तनयो हिमे  
द्रुतवहः क्रीडा मुदो यातनः ५० राग ललित  
ताल । हरि रभि सरति वहति मृड पवने  
किमपर मयिक सखे सखि भवने ।। माथ  
वी माऊरु मानिति मानमये । अ० । ताल  
फला दपि गुरुमति हरसे । किमु विफली



गी ऊरुषे ऊच कलशे । २ । कनिन कथित मिद  
गो मनु षद मचिरं । मायारि हर हरि मति शय रु  
चिरं किमिति विषोदसि दो दिषि विकला । वि  
हसति युवति सभा तव विकला ४ जनयसि म  
नसि किमिति गुरुवेदम । शृणु मम वचनम  
नी हित मेदम । ५ । हरि रूपयात्र वद



गी ऊरुषे ऊच कलशे । २ । कनिन कथित मिद  
गो मनु पद मचिरं । मापरि हर हरि मति शाय रु  
चिरं किमिति विषोदसि दो दिषि विकला । वि  
हसति युवति सभा तव विकला ५ जनयसि म  
नसि किमिति गुरु विदम । शृणु मम वचनम  
नी हित मेदम । ५ । हरि रूपयान्न वद



नवद्वय मथुरे । किमिति करोषि हृदय मति वि  
थुरे । १५ । सजल नलिन दल शीतल शयने ह  
रि मवलोकय सफल्य नयने । १६ । श्री जय  
देव भणित मति सलिते । सख्यत रसिक  
जन हरी चिरिते । १७ । १८ । श्री राधिकाजीके  
वचन रिषु रिव सखी सम्बा सोये सखी वदि



गी मानिलो विष मिव स्रधारश्मि यस्मिन् उनोति स  
गो नोगते । हृदय मदये तस्मिन् नेव पुनर्वलते वलान् ।  
ऊवलय दशास्वावः कामो निकामनिरेकशः ।  
५८ । मणायति गुणग्रामे ग्रामे अमादपिनेहते ।  
वहति च परि तोषे दोषे विमुंचति हरतः । य  
वतिषु बलरसो कृशो विहारिणि मो



विना पुनरपि मनो वासं कामं करोति करोमि  
किं ५५ प्रीतिवस्तु तोहरिः ऊवल्या पीरेन  
साहे रणे । राधा पीन पयोधर स्मरण कृत  
कंभेण संभेदवान् । यत्र स्थिति मीलति त  
णमथ तिमि दिपे तन्त्राणत् । के सस्यासम  
भूजित मिनि व्या मोह कोलाहलः । ६० । स



गी रुचि मन नयेन श्रीणायिन्ना मयाह्नी गतवन्ति  
गी कृतवेधे केशवे ऊजशायो। रचित रुचिरभूषणं  
हिमोषे प्रदोषे। स्फुरति निरवसादो कापि रायोज  
गाद। ५॥ सामो दृश्यति वक्ष्यति प्रिय कथो य  
तेग मालिगनैः। श्रीति यास्यति रस्यते सखि स  
मा गत्येति चिन्ता कुलाः। सत्तो पश्यति वेपत्ते



पुलकयन्ता नन्दति स्थितिः। प्रसन्नवृत्ति मूर्ध  
नि स्थिरतमः पुंजे निजंजे प्रियः। ६१। नन्दामे  
न समे समग्र मधुना निगमोश्च रस्ते गतो।  
गोविन्दस्य मनो रणे नच समे प्राप्ते तमः सो  
इतो। कोकानो करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा  
मदभ्यर्चना। तन्मये विकले विलेबन मसौ



गी रम्पोमि सारत्तणः। ५३। आश्लेषा दनु चंवना दनु  
गो नावोलेवादनु सान्तज शोदोथा दनुसंभ्रमा दनु  
ता रेभा दनु प्रीतयोः। अन्यार्त्य गतयो भ्रमान्मि  
लितयोः संभाषणौर्जीनतो। देयन्यो रिह कोन  
कोन तमसि व्रीश विमिश्रो रसः। ५४। अक्षोर्निदि  
पदेजनं अवगायो स्नापिच्छ गुह्यावली मूर्ध्निश्या



ममरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिका पत्रके ।  
धूर्ताना मभिसार सत्वरहृदो विषड् निकुंजे  
सखि । धोतनील निबोल चारु सदृशो प्रसंग  
मालिंगते । ६५ । काश्मीर गौर वप्रसा मभि  
सारिकाणो मावड् रेख मभितो रुचि मेज  
रीति । पततमाल दल नील तमे तमिश्रे त



गी  
गो

त्येमहेमनिकषो पलतां तनोति । ६६ । राग ल  
लित । ताल । विरचित वादु वचन रचने चर  
णो रचित प्रणिपाते । संप्रति मेजलसी मनि  
केलिशायन मनुयाते । सुग्ये मधु मथन मनुयात  
मनुसरराधिके फ्र० चन जवन स्तन भार भरे दरमस्य  
रचरण विहारे । सुखरित मणि मेजीर सुपेहि विथेहि



मराल विकारे । १ । शृणु २ मणीय तरेतरुणी  
जनमोहन मधुरिषु गवे । ऊसम शगसन शा  
सन वेदिनि पिकनिकरे भजभावे । ३ । अनिल  
तरल किसलय निकरेण करेण लतानि ऊ  
रेवे । प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति शक्ति  
मेव विलेवे । ४ । स्फुरित मनंग तरेग वशादि



गौ वसुवित हवि परिवेभे । एक मनोहर द्वार विम  
गौ लज्जलथार ममुंऊच ऊंभे ५ अथिगत मखिल स  
खीभिरि देतव वपुरपि रति रण सजे । चेदि रणि  
त रशना रव डिंदिम मभिसर सरस मलजे ६ स  
रशर सभ सुखेन सखी ममलेख्य करेण सलीले ।  
चल वलय कणितै रव बोधय हरि मपि निज गति श्री



ले। ५। श्री जय देव भणित मथुरी कृत हारु  
दा सित वामे। हरि विनि हित मनसा मधि  
निष्ठ कंद नटी मविशामे। ८। ९। सामोदत्त  
ति वक्षति प्रियकथो प्रत्येगमालिगनैः। श्रीति  
यास्यतिरेष्यते सखिसमा गत्येति चित्तकलः।  
सत्ताम्य श्यतिवेपते पुलकय नानेदति सिद्यति



नी ॥ प्रसन्नमूर्ति स्मितस्थिरतमः पुंजे निजं जे प्रियः  
गो ॥ ६६ गगनललित । नाल ॥ रत्नस्रवसार गतम  
भिसारे मदन मनो हरवेषे । नऊर निते विनि  
गमन विलेवन मनु सरते हृदये शो । धीरसमी  
रे यमुना तीरे वसति वने वन माली गोपी पी  
न पयोधर मदन चंचल कर युग शीली ।



ॐ। नाम समेतं कृतसंकेतं वादयते मूडवेणु  
बद्ध मज्जते तज्जते तज्ज संगत पवन चलित मपि  
वेणु ॥२॥ पतति पतये विचलेत पत्रे शंकित  
भवदुपयाने । रचयति शयने सचकित नय  
ने पश्यति तव पस्याने । ३ । सखर मधीरे  
पजमेजरी विषुमिव केलि खलोले चलसखि



गी कुंजे सति मिर पुंजे शील्य नील निचोले । ५ । ३२  
गो सि अगरे रुपदित्त हारे चन स्व तरल वला के तरि  
दिवपीते रति विपरीते राजसि सकत विपाके ५  
विगलित वसनं परिहृत रशने चटय जचन  
मपिधाने । किसलय शयने पेकचनयने निधिमि  
वर्ष निधाने । ६ । हरिभिमानि रजनि रिदानी



मिय मयियाति विगामे । ऊरु मम वचने सत्तर  
रचने शूरय मधु रिषुकामे । १० । श्री जय देव क  
त हरि सेवे भणति परम रमणीये । प्रसुदिन  
हृदये हरिमपि सदये नमत सकल कमनी  
ये । १८ । १९ । समय चकिते विन्यसेन्ती ह्येति  
मिर पयिप्रतिरुत मुद्रः स्थिता मेद पदानि



गी वितन्वती । कथमपि रहः प्राप्ता मेगै नरेगतरं  
गी गिभिः सुसुखि सभगः सत्ताम्यश्वयैत कता  
त्यन्ताम् ६० हरावली तरल कोचन कोचिदममे  
जीरकेकण मणि युति दीपि तस्य द्वारे निकृज  
निलयस्य हरिं निरीक्ष्य व्रीडावतीम् मथ सखी  
निजगाद यथाम् । ६६ । राग ।



ललित । ताल । मेजतर केजतल कलि  
सदने विलस रति रम सह सित वदने ॥ प्रवि  
शराथे माथव समीप मिद । फ । नव भवद  
शोकदल शयन सारे । विलस कुच कलश  
नरल हारे । २ । कुसम चय रचित सुविवासगेहे  
विलस कुसम कुसमार देहे । ३ । चल मलयव



गी न पवन सरभि शीते । विलस रति वलित ललि  
गी तगीते । ४ । वितन बद्ध वलिनव पल्लवचने ।  
विलस चिर मलस पीन जवने । ५ । मथमुदि  
त मथप ऊल कलित रावे विलस मदन रसस  
भावे । ६ । मथर तरपिकनिकरनि नद सुखरे । विल  
स दशन रुचि रुचिर शिखरे । ७ । विहित पद्मा



वती सख समाजे । भणिति जयदेव कवि  
राजराजे । ८ । साक्षा नन्द पुरन्दरादिदिविष हृदै  
रमेदा दया । दानस्य मुकुटेन्द्र नील मणिभिः  
संदर्शितेदीवरम् । स्वच्छन्दमकरन्द संदरग  
लनमन्दाकिनी मेडरे । श्री गोविन्द पदारवि  
दमसुभ संदाय वन्दामहे । ९ । अह मिव नि



गी व सामि यादियाथा मञ्जुनय मदचने चा नयेथाः  
गो । इति मथ रिपुणा साखी निशुक्ता स्वय मिद मे  
त पुन जगाद राथो । ५० । त्रोचितेन विरेवदत्र  
यमति श्रान्तो भूषो तापितः कंदर्येणाच पा  
त मिच्छति सथा सेवाय विवाथरे । अस्मोक  
नदले ऊरु द्वाण मिह भूक्षेप लक्ष्मी लवक्रीते



दास इवोप सेवित पदोभोजे कृतः संश्रमः ५  
साससाधस सानेद गोविंदे लोल लोचना । सि  
ज्ञान मेज मेजीरे प्रविवेश निवेशनम् ॥ ५१ ॥ अ  
तिक्कम्पा योगे अवण पथ पर्यन्त गमन । प्रवा  
सेनैवाद्गो स्तरल तर तारम्यति तयोः । तदानी  
गथायाः प्रिय तम समालोक समये । पपातसे



गी दोव प्रसर यिव हर्षा शुनिकरः । ५३ । भजन न्या  
गी स्तल्लान्ते कृत कपट कंडू निविहित स्मिते या  
ने गेहा हहिरव दिताली परिजने । प्रिया संप  
शेषाः स्मर शर समा कृत सभगे । सलजाया  
लजा व्यगम दिव हरे मृगा दृशाः । ५४ ।  
राग ललित । नाल । राधा वदन वि



लोकन विकसित विविध विकार विभंगे । ज  
लनिधि मिव विधु मेउल दर्शन तरलित जेग  
नरेगो ॥ हरि मे कर सेचि मभिलखित विला  
से । साद दर्श गुरु हर्ष शशस्वद वदन मनेग वि  
कासे । अ० । हार ममल तरतार सुवसि दधने प  
रिलेव्य विहरम् । स्फुट तर फेन कदम्ब करे



मी वित्त मिव यमुना जल श्रे।१। श्यामल मउल  
मे कलेवर मउल मथि गत गौर उहूले नील न  
लिन मिव पीत पराग पटल भर बलयित मू  
ले।३। तरल दगोचल चलन मनोहर वदन ज  
नित रति रोगे। स्फुट कमलोदर विलित खेज  
न युग मिव शरदित आगम।४। वदन क



मल परि शीलन मिलित मिहिर सम ऊँउल  
शोभे । स्मित रुचि ऊसम ससुल सिता थरप  
लव कृत रति लोभम् । ५ । शशि किरण सु  
वित्तो दरजलथर सेदरस ऊसम केशे । निमि  
रोदित विथ मँउल निर्मल मलयज निलक  
निवेशे । ६ । विप्रल पुलक भर देन रितेरति



गी  
गो

केलि कला भिरधीरे। मणि गण किरण समूह  
समजल श्रुषण सभग शरीरे। १॥ श्री जय देव भ  
णित विभव दिगुणी कृत श्रुषण भारे। प्रणमन  
हृदि विनिधाय हरे सचिरे सकृत्तोदय सारे। ८॥ १॥  
गतिवन्ति साखी हृदे मेद त्रया भर निर्भर स  
र परवशा कृतस्फी तस्मिन् तस्मात्



नाथगाम् । सरसमलसे दृष्टादृष्टा मुद्गर्नवपल  
व । प्रसर शयने निद्रिप्राप्ती सुवाच हरिः प्रि  
यो । ५५ । रागा ललित । ताल । किशलय  
शयन तले ऊरु कामिनि चरण कमल वि  
निवेशे । तव पद पल्लव वैरि पराभव मिद  
मनु भवत स्वेवेशे ॥ द्वाण मथना नाराय



मी एण मनुगत मनुसर राधिके । ५० । कर कम  
गो लेन करोमि चरण महमा गमिता मि विहरेत  
एण सुपऊरु शयनो परिमा मि व नृपुर मनुग  
ति शूरे । १ । वदन सथानिधि गलित ममत्त मि  
व रचय वचन मनु कले । विरह मिवापन या  
मि पयोधर रोयक सुरसि उकले । ३ ।



प्रिय परिवरेभण रमसवलित मिव पुलकित  
मतिउरवापम् । मथुरसि ऊच कलशे विनिवे  
शय शोषय मनसिज तापम् ॥ अथर सधारसमु  
पनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् । त्रयि  
विनि हितमनसे विरहा नल दग्ध वपुष म  
विलासम् ॥ ५ ॥ शशि मुवि सुखरय मणि र



श्री शाना गुण मनु गुण कंट विनादम् । सुति युग  
श्री लेपिकरुत मम शमय विरादव सादम् । ६ । मा  
मति विफल रुषा विफली कृत मव लोकिन  
मथनेदम् । मीलति लज्जित मिव नयने तव  
विरमविस्मज रतिवेदम् । ७ । श्री जय देव क  
वेदिद मनुपद निरादिन मथविषु मोदम् । जय



नत रसिक जनेष मनोरम रति रसभाव वि  
नोदरम् । ८ । २१ । प्रह्लादः पुलका ऊरेण निवि  
डाश्लेषैर्निमेषेण चकीडा कृत विलोकिते धर  
सुधा पानेकशानर्मभिः । आनन्दमि गमेन म  
न्मथकला युद्धेपि यस्मिन्नशु । उद्भूतः सतयो  
र्वशुव सवतः रेभाः प्रिये भावुकः । १० । मीलह



गी शिलिना दोर्वलिरुत्कृष्टं वदो मीलित मदिपै  
गो रुष रसः स्त्रीणो कृतः सिध्यति । ७५ । तस्याः पादल  
पाणिजो कित्तुरो निश कषाये दृशौ । निर्दितो यर  
शोणिमा विललिता सस्तसजो मृदेनाः । कोची  
दामदरस्यो चलमिति शान्तिखानै ईशो रेभिः  
कामशौरे सद्भुतमश्रुतमनः कीलिते । ७६ । व्या  
लोलाः केश



पाश स्तरलित मलकैः सेदलोत्तौ कपोलौ । दृष्ट  
विवाथरश्रीः ऊच कलश रुचा हारिता हारयष्टिः  
कोची कोचिद्गताशा स्तन जवन पटे पाणिना  
व्यास सयः । पश्येती सत्रपेमा न्नदपि विल्वलित  
सगधरे यन्मुनोति । ८ । अथ कोते रतिश्रोत म  
पि मेउन बोद्धया । निजगाद निरावाथा राथा



गी साधीनभार्तका । ८२ । शति मनसा निगदंते सरनां  
गो ते सानितोते विमोगी राधा जगाद सादर सिद्ध  
मानन्देन गोविदम् । ८३ । गग ललित । ताल ।  
ऊरु यडनेदन चेदन शिशिर तरेण करेण प  
यो यरे । मग मद पत्र कमत्र मनो भव मंगल क  
लश सहोदरे । निज गाद सायड नन्दने की



इति हृदया नंदने । अ० । दथर चेंवन लोचन क  
जल मुज्वलय प्रियलोचने । अलि कुल गोजन  
मेजन के रति नायक मोचने । १ । नयन ऊरेग  
विकासिनि वासकरे अति मेउले । मनसिज  
पाश विलासकरे शुभवेश निवेशय मेउले । ३ ।  
अमर चये रचयेत सुपरि रुचिरे सचिरे समसे



गी सुखे। जित कमले विमले परिकल्पय नर्मजन  
गो कमलकेसुखे। ४। मग मद रस ललिते ललिते क  
रु निलक मलिक रजनीकरे। विहित कलेक क  
लेक मलानन विश्रमिज प्रमशीकरे। ५। ममरुचि  
रेचिऊरे ऊरुमानद मानसजयज वामरे। रतिगालि  
ते ललिते ऊसमानि शिवेदि शिवेउ कश मरे



६। सरस चने मम शंदर दारण वारण कंदरे  
मणि रशना वसना भरणाति शुभाशय वा  
सय सेंदरे । ५। श्री जयदेव वचसि जयदे सद  
ये हृदये ऊरु सेउने । हरि चरण स्मरण मृत  
कृत कलि कलष ज्वर विउने । ६। वचय ऊच  
योः पत्रे चित्रे ऊरुष कपोलयो । र्वदय जचने



गी कांची मेव राजा कवरी भरे । कलय बलय ऐणी  
मो पाणी पदे करु नृपरा । विनिनि गदितः प्रीतः पी  
तो वरोपि तथा करोत् । ८५ । शान नील निचोल  
मद्युत मुग सेवीत पीतो शुके । राधाया अकिन्ते वि  
लोक्य हसिति स्वेरे सखी मंडले । वीश चेचल मेचले  
नयनयो राधाय राधानने । स्वेरे स्वेर अखो बजोस्त



जगदा नंदाय नंदात्मजः । ८५ पर्येकी कृत  
ना गनाय कफणा श्रेणी मणीनो गणे । से  
गोत प्रति विंव सेवलनया विशद्विशु प्रक्रियाम् ।  
पादोभोरुह थारि वारिधि सता मक्षणे दिहत्तः  
शतैः । कायव्यूह मिवाचर सुपचिती भूतोदविः  
पात्रवः । ८६ । तिर्यक् कंद विलोल मौलि तरलो



गी तेसस्य वंशोदर कीर्तिस्थान कृता वयान लल  
गो नालदेण कंदलिताः सुसुगम मथुरे राधा सुवि  
दौ सथासारेवो मथुसूदनस्य ददततेमे कदाचो  
मयः । ८५ । ८६ । राग ललित । ताल १ संचर द  
थर सथा मथुरथनि सुखरित मोहन वंश चलित  
दुगंचल मौलि कपोल विलोल वसंते



रासे हरि मिह विदित विलासे । स्मरति मनो  
मम कृत परिहासे । ५० । चेदक चारु मयूरशि  
खेदक मेउल वलयित केशो । प्रचर सुरंदर यनु  
रनु रेजित मेउर मुदित सवेषो । ५१ । गोप कदेव  
नितेववती सखिबेवन लेखित लोभे । बंधजी  
व मथरा यर पल्लव मुल सित स्मित शोभम । ५२ ।



गी विपुल पुलक भुजपल्लव बलपित्त बलव युवति सह  
गो स्त्रे। करचरणो रसि मणिगण भूषण किरण वि  
भिन्नत मिस्त्रे। ४। जलद पटल चलदिंडु विनिन्दक  
चंदन विडललाटे। पीन पयोधर परिसर मर्दन  
निर्हय रुदय कणाटे। ५। मणिमय मकर मनो  
हर ऊँडल मेरित गंड सुदारं। पीत वसन



मनु मुनि मनुज सदा सखवर परिवारे । विशद  
कदेव तले मिलिते कलि कलष भये शम ये  
ते मामपि किमपि नरेण दनेन दृशा मनसा  
रमयेते । ७ । श्री जय देव भणित मनि सेदर मो  
हन मथरिष रूपे हरि चरण स्मरणे प्रतिसे प्र  
ति प्राणवता रूपम् । ८ । १५ । हस्त सस्त



गो  
गो

विलास वेशमन्त्र भूवलिमदलवी वंदोत्सा  
रिदुगंतवीक्षित मति स्वेदादगंडस्थले । मासु  
हीरा विलज्जितस्मितस्रया मुग्धानने कानने ।  
गोविंदे व्रत सेंदरी गाणहते पश्यामि हृष्या  
मित्र । ८८ । श्रेतमौदन मौलि चूर्ण ननलन  
मेदार विस्रंसनः स्तब्धा कर्षण दृष्टि दर्षणमसंसे

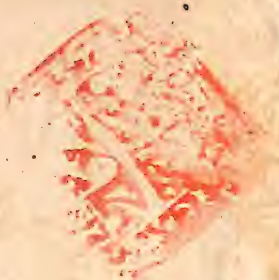


त्रे ऊरंगी दृशो । दृष्यमानव दृयमान दिविष उर्वी  
र उः खापद्मो । धंसः केस विषो व्यपोद यतवो श्रे  
योसि वेशीरवः । ८५ । यद्गोथर्व कलास कौश  
ल मनु ध्यानेच यदैसवे । यत्स्त्रेगार विवेक त  
त्त्व मपियत्त कावेषु लीला यिते । तत्सर्व जय  
देव पंडित कवेः क्लृप्तकता नात्मनः । साने



गी दाः परि शोध येन सधियः श्रीगीत गोविन्दतः  
गो ५०। साधी माधीक चिन्ता नभवति भवतः शक्रे  
शर्करासि। दाने इत्येति केत्वा ममत्त मत्तमसि  
क्षीरनीरं रसस्ते। माकंदे कंद काता थरणि त  
ले गच्छयच्छेति यावद्भावम् शृणार सार स्वत  
मय जय देवस्य विषयवचोसि ॥ ५१ ॥





श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सन्त श्री न  
य देवकस्य । पाया शयादि प्रियवर्ग केहे श्री  
गीत गोविंद कवित्व मस्त । ५१ । जय श्री वि  
नयैते मद्दिन इव मेदार ऊसमैः । स्वये सिंह  
रेण दिपिराण मुदा मुदित इव । भुजा पीड  
क्रीडा हस्त ऊव लया पीडक विणः । प्रकीर्ण



गी सर्गिवेत् ज्ञयति भुजदंशे सुरजितः । १३ । इति रा  
गो गललित गीतगोविंद समाप्तः ॥ शुभमस्तु ।



राशिनी बंगाली नाल ४ अक्षरपद ॥ जागोहो मेरे ज  
गरे उजारे ॥ इत्यस्याई ॥ कोटिक मन्मथ वारों मस  
कति पर कमल नयन श्रीवियनके नारे ॥ इत्येतदा ॥  
संग खाल बख्ख सब लेके जमनाके नोर बन जाउ सवारे  
परमानेद करति नेदशानी हर जिन जाइ मेरे बजरख  
वारे ॥ राशिनी बंगाली नाल ४ अक्षरपद ॥





बे-शा

23

23

उहो नैद कुमार भयो भिन्न सारज गावन नैदानी ॥ ३२ ॥  
स्थायी ॥ जारी के जल वदन पखारत खन कहि सारेगा  
पानी ॥ ३३ ॥ मोखन रोटी अरु मधु मेवा भावे  
सो लीजे ही आनी ॥ सूर श्याम सख निराखि जसोदा  
मन ही मनज सिहानी ॥ रागिनी बेगाली ताल ४  
अवपद ॥ तेलिये अंगन मै चरान मगान कोनिये



कलेवा ॥ इत्यर्था ॥ स्त्रीकेतै सारी दधि ऊपरतै का  
छिथरी पहिर लेउ जगली फेदा बाधिलेइ मेवा ॥ इत्येत  
रा ॥ ग्वालनके संग विलन जाइ विलन केमिस भूषन  
ल्याउ कौन परी परे ललन निस दिना की देवा ॥ सूरदा  
स मदन मोहन चरहो विलो परे ललन भंवरा चकरी  
रदेहो हेस चकोर परेवा ॥ रागिनी बंगाली ताल <sup>चंचल</sup> ॥



बे-शा-

२४

२५

मदन मोहन पीयकी जे कलेऊ <sup>इति स्यायी</sup> ॥ हथमें रोटी सानी मो  
खन मिसरी आनी जोई जोई भावे सोई सोई लेऊ ॥ इत्ये  
नरा ॥ खोड खीर और हत मिटाई मेवा आय खाऊ  
और ग्वालन कौ देऊ ॥ ब्रज पति पीय फेर खिलन को  
जाउ वन सबल श्री दामा कौ संग करि लेऊ ॥ ॥  
रागिनी बेंगाली ताल <sup>एक</sup> ॥ नागरी नव लाल से



ग रेग भरी राजे ॥ इत्यस्याडे ॥ श्याम श्रेय वाङ्मदिये  
ऊँवरि पुलकि पुलकि हिये मेद मेद हसति पिया को  
दि मदन लाजे ॥ इत्येतदा ॥ तरुनमाल श्याम लाल ल  
पटी श्रेय श्रेय वेलि निरखि साखी कवि सौ केलि नूपुर  
कल वाजे ॥ दामोदर हित सबेस सोभित सखि सब  
सुडेस नवनि ऊँज भवर गुँज को किल कल गाजे ॥=



वे.रा. गगिनी बेगाली ताल <sup>केप</sup> ॥ अश्विदिता ॥ नव के  
२५  
२५ ज नैन रति रेग रेगो ॥ इत्यस्याई ॥ प्रिया प्रेम बली  
रस रास रस मसे आलस वस माधुरी अंग अंगो ॥ इत्येत  
राः ॥ रूप जोवन चपलता गुणान आगरे मधुप बिज  
न मीन मान भंगो ॥ कहै कलदास कामिनि उरसिम  
थ गति गिरधरन सखद प्रति विवे संगो ॥ १५ ॥



रागिनी बेगाली नाल <sup>एक</sup> अक्षरपद ॥ शान्त काल पा  
दे लाल आवनी वनी ॥ इत्यस्याई ॥ उरसि मरगजी स  
माल उगमगी सदेस चाल चरण छिदि मदन जीति क  
रत होमनी ॥ इत्येतया ॥ प्रिया प्रेम प्रेय राग सगावगी  
सुरंग पाग गलित वरुह वृद्ध प्रमज वारि कणासनी ॥  
कसदास प्रभु गिरथर केह सरत पत्र लिख्यो करज



वे.रा

३६

लेखनी सति पुनरायिका गनी ॥ रागिनी वेगाली

ताल एक भ्रवणद ॥ आजनीके वने नेद नेदा ॥

इत्यस्याई ॥ वदन रेड कोज्यति निराखितभ चेद्रमा ह्रा

र प्रेवुधि परत सचन चेदा ॥ इत्येतया ॥ अम स्वेदकण

गात लाल गिरवर थरन सखदेत मलयजस एवन

मेदा ॥ कसदास नाथ दुग मगत पग चलन मानों के



वर मेरुयो प्रेम फेदा ॥ रागिनी बंगाली ताल ४ अक्षर  
द ॥ ललित वदन गलित कसम बलित केश प्रति सदेस  
नयन नलित रग मगो शशि सरद सर्वरी ॥ श्याम्याई ॥  
मरगाजी उरमाल सिथिल कड़े कड़े चेदन कीरेख रस  
भरे लपटात गात मधुप सर्वरी ॥ श्योनरा ॥ सोभित  
उर उर जलवि मनो परसतहि परत पस्त्रिम नख क्ववि



वे-रा

२७

27

परवारि शो चेद खर्वरी ॥ वासुदेव लाल कल्यान गि  
रिथरको सजस गावत श्रीविहल पद कमल रज प्रता  
प गवरी ॥ रागिनी बंगाली ताल <sup>वेचल</sup> ॥ सोभित  
सुभगा लटपटी पाग भीने रसिक प्रिया अनुराग ॥ शय  
स्थार्थ ॥ ऊँऊम तिलक अलक सैहर क्षति प्ररुन चूम  
त निसिजाग ॥ श्येतरा ॥ ककु जेभात उरमात मर



गजी पीक कपील अथरससिदाग ॥ चतुर्भुज प्रभु गि

रथर नीके लागत आलस वस सब अंग विभाग ॥

गगिनी बंगाली ताल <sup>कप</sup> ॥ भोर तमचुर बोले दी

नोजर दरसना ॥ इत्यस्याई ॥ आनर है उदियाए उगत

चरण आप आलस मैनेन वैन अटपटी रसना ॥ इत्ये

नरा ॥ संध्या जू कहि सिधारे वचन जीय मै संधारे सक



बै. रा. चि के मेद मेद प्रकटित दसना ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरधर  
३८  
७४ न सिंथाये तहो जहो रति रेखा रस लपटाए वसना ॥  
रागिनी बेगाली ताल चंचल ॥ दूमत मत गजज्यो व  
लत डगमरो ॥ इत्यस्याई ॥ वनियो कहत सैन सख  
न आवत बैन आलस उनीदे नैन सोभित रंग मरो ॥  
इत्येतया ॥ नागर नेद कि सोर नीकी छवि आए भोर



श्रेय श्रेय रति रेय चिन्ह जगमगे ॥ चतुर्भुज प्रभ गिरि  
धर नही लागे पलक चारि जाम जीति काम रहे जूढ  
उगमगे ॥ शशिनी बेगाली ताल <sup>कंप</sup> ॥ आज  
कवि देन नयना आलस भरे रगमगे ॥ इत्यस्याई ॥  
बैन पलकन परी सर तरन जैकरी भोर आप लाल धर  
न परा उगमगे ॥ इत्येतदा ॥ तन और गति भोति कह



वे.रा.

२५

न करीन जाति कोति अद्भुत सकल श्रेय श्रेय जग मगो.

चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन भली करी पलटि आए वसत

सौंथे मिले सग मगो ॥ ॥ रागिनी वंगाली ताल <sup>कैप</sup>

भोर दुग मगान पग जीति मन्मथ चले ॥ ३२५ ॥

सकल रजनी जगे नयन नहिं पल लगे अरुणा आलस

चलत नयन लागत भले ॥ ३२६ ॥ करिव नगर



नटन चिन्ह प्रकटित करत वसन आभूषन सरतरन  
दल मले ॥ वतर्भज दास प्रभगिरिधर क्ववि वण्डी अ  
थर काजर जेजम प्रेग प्रेग रले ॥ ॥ रागिनी देगा  
ली ताल <sup>तीन</sup> ॥ उग मगात आयनट नागर ॥ इत्य  
स्थाई ॥ ककु जेभात अलसात मोर भय प्ररुण नयन  
चूमत निसिजागर ॥ इत्येतया ॥ रसिक गोपाल सर



वे.श. तरनको जस सकल चिन्ह लाये उर कागर ॥ चतुर्भुज  
३० प्रभु गिरिधरन जंजगाढ रति पति जीने रस सख  
सागर ॥ रागिनी बेगाली ताल <sup>एक</sup> ॥ ओरभ  
ए आये हो ललन नीकी बतियो ॥ इत्यस्याई ॥ जा  
वक के उर चिन्ह नील पट प्यारी दीने नयन आलस भी  
ने जागे सब रतियो ॥ इत्येतदा ॥ कुटी श्रीवा वनदा



मन खचित अभिराम कैसै केहरा मणाम डरा मगी रा  
नियों ॥ केशव दास प्रभुनेद सबन काहे लजान भले  
जु सावरे गान जानी सब चतियों ॥ रागिनी बंगाली  
ताल <sup>एक</sup> ॥ आउये जू भले आप कत सकुचत हो ॥  
इत्यस्थाई ॥ सरत मेशाम कीनै मोतिन को सखदी  
नै याही रस भीने होयै मो को नो रुचत हो ॥ इत्येतरा ॥



वे. रा. तमदेखे रिसगई उपजी है प्रीति नई सोनो भई प्रवकारे  
३१  
३१  
थें सोचतहो ॥ नारायण मोहि जानों वहे बेरी करि मा  
नो कहु जीयपनो अभिलाष जु सोचतहो ॥ ॥  
रागिनी बंगाली ताल ५५ ॥ अथ सप्तमयपद ॥  
भोर भावतो श्रीगिरिधर देखो ॥ इत्यस्याई ॥ स्वभ  
ग कपोल लोल लोचन चावि निरखिके नयन सफल



करि लेखों ॥ श्येतया ॥ नख सिख रूप अनूप विराज  
न श्रेय श्रेय मन्मथकोटि विमोखों ॥ वन भोज प्रभु रस  
रास रसिक को बड़े भाग बल इकटक पेलों ॥ रागिनी  
बंगाली ॥ प्रणम सुंदर भोर भवन आगे होय  
आवे ॥ इत्यस्याई ॥ कवहे खल मेद हास मेरे सावि  
माख की रास कवहे नैन कवहे नैन सैन ही जनावे ॥



वे.श. ३२  
इत्येतदा ॥ मेरी दयिमयत बार उनकी उदति स  
बार रई नेन माट समेत सकलहो विसरावे ॥ चतुर्थ  
ज प्रभु गिरियर प्रेरा प्रेरा कोटि मदन मूरति चलत  
वनको तनरु मनको विनेही भरावे ॥ रागिनी  
वेगाली ताल २ ॥ भोर भयेनी को माव हे स  
न दिवाये ॥ इत्यस्याई ॥ रातिके दरसके विबुधे



देऊ पलक मेरे वारि फेरि शरी नेऊ नयननि सिरार  
ये ॥ इत्येतरा ॥ कोमल उन्नत वाङ्मय अमिन  
भाव मेरी तेरी छाती छवि अधिक बढाये । की  
नखासी गिरिधर सकल गुण निधान कहो कहो  
भाव करि प्राणहीने पाये ॥ शशिनी वेगाली  
नाल ३ ॥ तोहि ध्यान लागो सजनी देवा



बे-शा-

३३

३३

रक दृष्टि परे मोहन ॥ इत्यस्याई ॥ देखियत चित्रलि  
खीसी टाढी सदन सिंधु जल हृद सनी ॥ इत्येतया ॥  
रूप निधान कमल लोचन तोहि मिले आज की रज  
नी ॥ कस दास प्रभु गोवर्द्धन यर बसिक जवनि डाल  
हरनी ॥ रागिनी बेगाली ताल ९ ॥ ओखिन  
मैं डरा यण्या रोका हू देखन न दीजिये ॥ इत्यस्याई ॥



हिये लगाइ खाव पाइ सब गुण निधि धरन जोई जोई  
मन इच्छा होइ सोई सोई कौन कीजिये ॥ मधुर मध  
र वचन कहन अवगति खाद दीजिये ॥ निरमल प्र  
भ नंद नंदन निराखि निराखि जीजिये ॥ ॥ रागि  
नी वेगाली ताल ॥ ॥ पललता जागो भयो भो  
र ॥ इत्यस्याई ॥ हथ दही पकवान मिटाई लीजिये



वे-रा

३४

३५

माखन चोर ॥ श्येतरा ॥ विकसे कमल विमल वा  
नी सी बोलन लगे पंखी चढ़्यो ॥ रसिक प्रीतम सो  
कहत नंदरानी सति आवो वैद्यो गोद हाहा नंद किशोर  
रागिनी बंगाली ताल ॥ ५ ॥ हंदावन नवनि जंज  
हाछे उरि भोर ॥ श्येस्थाई ॥ बोर जोरि बदन मोरि  
हेसत सरनरतिको करि चितवन पुनि कछु लजाइने



नतिकी केर ॥ श्येतरा ॥ करत कवजे वेणनाद प्रथ  
रतिपाई ॥ सथा खाद पेखीगण प्रभदित मन बोलत  
चडु प्रौर ॥ रसिक प्रीतम कवि निहारि प्रकट्यो चन  
जिय विचारि बारबार उमगि नहो नाचत है मोर ॥  
रागिनी बंगाली ताल ॥ श्री विटलेश विटले  
श रसना जपमेरी ॥ श्येतरा ॥ प्रेयनि कोपही सार



बे-शा. याही में होत पारवार वारवार कहत तोसों तव हित मेरी  
३५  
३ ५ अंततया ॥ अतत इन भलो तोर वेग कस्यो करहि मोर भ  
जिले सिर मोर नाथहि सकल सावद केरी ॥ जगत ज  
नक सहाय प्रेम प्रेज सजस गाय हर करो असद बात  
विषया अरु ऊँरी ॥ रागिनी बंगाली ताल ५ ॥  
श्री विदल नाथ जूके चरण शरण ॥ अयस्थाई ॥ श्रीव



लभनेदने कलिकलष विडने परम प्ररुषे चैतापहरने ॥  
इत्येतया ॥ सकल दावदारणे भवसिंधु तारणे जनहित  
लीला देहधरणे ॥ कान्हरदास प्रभु सब सख सागरेभू  
तले दृढ भक्ति भाव करणे ॥ रागिनी बेगाली ताल ॥  
नैन भर देखो गिरधर को कमला सख ॥ इत्यस्याई  
मंगल आरती करो प्रातही वारत निराखत होत परम सु



वे.श.

३६

36

ख ॥ उत्पत्तया ॥ लोचन विमाल स्त्रवि सेचि हृदे मैथ  
रो कृपा प्रव लोकन चार भुजदिन रुख ॥ चतुर्भुज  
दास प्रभु आनंद निधिरूप निराख करो दूरि सब वै  
निको विरह डख ॥ रागिनी वेगाली ताल ३  
मंगल आरती गोपाल की ॥ उत्पत्तया ॥ नित उदि  
मंगल होत निराखि सब चित बन नैन विमाल की.



इत्येतदा ॥ मंगल रूप श्याम स्नेहको मंगल कवि  
भक्त भालकी ॥ चतुर्भुज रास सदा मंगल निधि  
वानिक गिरधर लालकी ॥ रागिनी बंगाली ताल ३  
प्यारी श्रीवा भुज मेलि नृत्यत पीय सजान ॥ इत्यस्याई  
मदित परस्पर लेत गति में गति गुण रासि राधे गिरि  
धर न गुण निधान ॥ इत्येतदा ॥ सरस सरली धनि सो



वे.रा.

३७

37

मिले सप्त सर गावन भैरव राग अख चर नोन वेधान-  
चतुर्भुज प्रभु श्याम श्यामा की नदन देखि रोके ख  
ग स्यावन यकित व्योम विमान ॥ रागिनी वे  
गाली ताल २॥ निरत श्याम संग राधिका  
वनी ॥ इति अष्टाई ॥ बाहु देड भजन मेलि मेड  
ल मयि करन केलि सरस गान श्याम करे संग भा



मिनी ॥ इत्येतया ॥ मोर मुकुट के डल छवि काछ  
नी बनी विवित्र ऊलकत उर हार विमल शक्ति  
चोदनी ॥ परम सुदित सुनत सुनि वरषत सब ऊ  
सम निवारति तन मन प्राण कस दास स्वामिनी  
रागिनी बेगाली नाल ॥ २ ॥ अथ पद ॥ ॥  
मोरनके मुंडल में नाचत पिय प्यारी ॥ इति अस्याई



वे.रा.

३८

३८

सिखवत सब जान मान सोखति लखि उरति मरति

हो हो हो होके आप देन है करनारी ॥ इत्येतया ॥

मथुरे सर राग लेत रागिनी सो मिले तान रीजत

लपटात दोऊ भरि भरि अंकवारी ॥ श्रीविहल

संग विलति बोलति नना येई येई विहरत गिरि

थारी लाल सुंदरि नवनारी ॥ इति आभोगः ॥



गागिनी वेगाली ताल ३ अवपद कसजीका ॥  
मेगाल साथे नाम उचार ॥ मेगाल वदन कमल कर मेग  
लमेगाल जनहि सदा सभार ॥ इति प्रस्थाई ॥ देवत मे  
गल हजत मेगाल गावन मेगाल चारित उदार ॥ इत्येतदा  
मेगाल अवण कथारस मेगाल मेगाल तन वसदेव कुमार  
गोकुल मेगाल मधुवन मेगाल मेगाल रुवि हेरावन वेद ॥



वे.ग. मेगल करन गोवर्द्धन थारी मेगल भेष यशोदानेद ॥

३५

३९

मेगल येन रेन भव मेगल मेगल मधुर वजावत वेन-

मेगल गोप वधू परि रेभन मेगल कालिंदी पय फेन-

मेगल वरणा कमल मणि मेगल मेगल कीरति ज

गत निवास ॥ अत दिन मेगल ध्यान थरत सति

मेगल सति परमानेद दास ॥ इतिश्राभोगः ॥



गविनी बेगाली नाल ॥ उहो हो गोपाल काल  
हो थोरी गैया ॥ इति अस्याई ॥ सद्य ह्य मयि पीत  
अभेदा ॥ भोर भयो वनतमचर बोले ॥ चरचर थोव  
हार सब बोले ॥ तमारे साखा बुलावन आय ॥ क  
स कस कहि मंगल गाए ॥ गोपी गई मय निरा थो  
वै ॥ अपनै अपनो दसो विलोवे ॥ भ्रमन वसन प



वे-श- ४- ५० लदि परि राऊ । वेदन तिलक ललाट वनाऊ ॥ चार  
भजा गोवर्द्धन थारी ॥ सात कवि पर बलि राउ महता  
री ॥ रागिनी वेगाली नाह २ ॥ उहे नैद लाल  
सनत जननी साव वाली ॥ श्याम्याई ॥ शालस भरे  
नैन उहे सोभा की खानी ॥ श्येत रा ॥ गोपी जनय  
कित रिये चित बति सब दाही ॥ नैन कवि चकोर



चेदन वदन प्रीति बाढी ॥ माता जल जारी जियै कम  
ल मुख पावोरव ॥ नीरही की परस करत आलस विसा  
रेव ॥ साखा हार बाढि सब देखत है तमहूँ ॥ यमना  
नट चलो श्याम चारन गोधनहूँ ॥ साखा सहित जै  
वडवलि भोजन कछु कीनों ॥ सूर श्याम हलथर  
संग साखा बाल लीनों ॥ रागिनी बेगाली ताल १



वे. रा.

४१

जैये वरु देस जहो नेद नेदन भेटिये ॥ श्याखाई ॥ निर  
खिये माव कमल कोति विरह नाय भेटिये ॥ श्येतया  
संदर माव रूप सथा लोचन घट पीजिये ॥ लेपट ल  
व निमिष रहित प्रेचय प्रेचय जीजिये ॥ नाब सिख  
मरु प्रेग प्रेग कोमल कर परसिये ॥ अरु अनय भाव  
सो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥ रास हास सब विलास



लीला सख पाइये ॥ भक्तनके जूय सहित रस निधि  
अवगाहिये ॥ इह अभिलाष अंतरगत प्राननाय हरिये.  
सागर करुणा उदार चिबिय नाप चूरिये ॥ छिन छिन  
पल कोटि कलप बीतत अति भारी ॥ परमानंद कल्पत  
रुदीनन उख हारी ॥ रागिनी वेगाली ताल ३ ॥  
विललित करपलव मडवैन ॥ श्यामाई ॥ इरषित



वे-रा-

४२

कैरुत आवतयेन ॥ इत्येतया ॥ कोटि मदन युति श्याम  
शरीर ॥ विपति कलय तरु यमना तीर ॥ दक्षिणा चर  
ण चरण परधरे ॥ वाम श्रेषाभू ऊँडल चले ॥ वरुह वे  
द वनथात प्रवाले ॥ मणि मुक्ता येजा फलमाल ॥ देव  
न चलऊ विमनेदलाल ॥ ललित त्रिभेगी मदन गोपाल  
राशिनी वेगाली ताल ॥ श्रीकृष्ण जीको ध्यान



मेरे निशा दिनारी साई ॥ इत्याख्याई ॥ मनके मरुल  
प्रीति जेजतासै यड्याई ॥ इत्येतया ॥ सोवरे वरन  
कोमल चरण नाव देखे चकचोथी होत पायनेपुर पै  
जनी सो विधिने वनाई ॥ दाहिने पद पञ्चतानै देखे थ  
रत आलीरी ऐसे चरण डावके हरनहे सदा सखदाई ॥  
लाल उजार ताके बीच कचनकेतार लगे काखनी पचरे